अथसम्यकृत्तानदीपकाप्रारंभः

दृष्टांत जैसै दीपक ज्योतीके प्रकासमें कोई इच्छा प्रमाण पाप अपरा
ध काम कुशील वा दान पूजा व्रत शीलादिक करो अर्थात् जेता संसार
और संसारहीसैं तन्मयि येह संसारका शुभाशुभ काम क्रिया कर्म और
इनसर्वका फल हैसो दीपकज्योतिकूं बी लागते नाही अर दीपक ज्यो
तिसैं दीपज्योतीका प्रकास तन्मयिहै ताकूंबी जन्म मरणादिक पा
प पुन्य संसार लागते नाही· तैसैहीं स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम
ब्रह्म परमातमा सदाकाल जागती ज्योतिहै सो न मरती नजनमती न छोटी न मोटी·
ननास्ति न अस्ति नइहां नउहां न उसकूं पापलागे नउसकूं पुन्यलागे· न वाज्योती बोल
ती न चलती न हलती संसार उसज्योतिके भीतर बाहिर अरु मध्य नही· बहुरि तैसेही
सोज्योति है· सोबी संसारके भीतर बाहिर मध्य नाही· जेसैं लवण खंड जलनीरमें मि
ल जातेहै तैसैं किसीकूं जन्म मरणादिक संसारसैं दुःखसैं अलग होणेकी इच्छाहो
य वा सदाकाल जागती जोति सैं मिलणेकी इच्छा होय सो प्रथम सतगुरु आज्ञाप्र
माण इस सम्यक्ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तगहै ताकूं आदिसैं अंतपर्यंत पढो मन
न करो·

प्रस्तावना

इस पुस्तगमै प्रथम येह प्रस्तावना तदनंतर इस पुस्तगकी भूमिका पश्चात् पुस्तग प्रारंभ तदनंतर चित्रहार पुनः चित्र हस्तांगुलीचक्र निर्विकल्प शुक्लध्यानका सूचक पश्चात् ज्ञानावर्णिकर्मचित्र तदनंतर दर्शणावर्णिचित्र पश्चात् वेदनी बहुरि मोहनी तदनंतर आयु बहुरि नाम अर गोत्र पश्चात् अंतरायकर्म तदनंतर दृष्टांत समाधान ताहीमै येकप्रश्न आत्मा कैसाहै कैसै पाइये इसीके ऊपर दृष्टांत संग्रह तदनंतर दृष्टांत चित्र पश्चात् आकिंचन भावना बहुरि भेदज्ञान करिके ग्रंथयेह समाप्त कीयाहै इसग्रंथमै केवल स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानुभव सूचक शब्द विवर्णहै कोह दृष्टांतमै तर्क करैगा के सूर्यमै प्रकाश कहांसै आयं ताकूं स्वसम्यक् ज्ञानानुभव इसग्रंथ को सार ताको लाभ नहीं हो

यगो जैसे जैन बैस्नु शिवादिक मतवाले परस्पर लड़तेहैं बैर बिरोध क
रतेहैं मतपक्षमै मग्नहुये मोह ममता माया मानकूं नो छोडते नाहीं·
तैसे इस पुस्तगमै बैर बिरोधको बचन नाहीं परंतु जिस अवस्थामै स्व
सम्यक्ज्ञान सूतोहै ताअवस्थामै तन मन धन बचनादिकसें तन्मयीये
ह जगत संसार जागतोहै बहुरि जिस अवस्थामै येह जगत संसार सू
तोहै ताअवस्थामै स्वसम्यक्ज्ञान जागतोहै येहबिरोधतो अनादि अ·
चलहै सो तो हमसे तुमसे इससें उससे नमिटै नमिटैगा नमिटाया येह पु
स्तग जैन बैस्नु आदिक सर्वहीके पढणेजोग्यहै किसी बैस्नूकों इस पुस्तगके
पढणेसैं भ्रांति होवेके येह पुस्तग जैनोक्तहै ताकूं कहताहूं के इस पुस्त·
गकी भूमिकाके प्रथमारंभमै जो मंत्र नमस्कारहै ताकूं पढिकरिके भ्रांतिसै
भिन्नहोणा स्वभाव सूचक जैन बैस्नुआदिक आचार्यकेरचे हुये संस्कृत का
व्यबंध गाथाबंध ग्रंथ बहुतहै परंतु येहबी येक छोटीसी अपूर्व वस्तुहै जैसे

गुडखायेसै मिष्टानुभव होनाहै तैसै इस पुस्तगकूं आद्य अंत पूर्णपढणेसैं पूर्णानुभव होवैगा बिनदेखे बिनसमजे वस्तुकूं औरसै और समजनाहैसो मूर्खहै जिसकूं परमातमाकोनाम प्रियहै उसकूं येहग्रंथ जरूर प्रियहोवैगो इसग्रंथको सार ऐसा लेणा केसम्यक् ज्ञानमयी गुणीका गुणसैं सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही औगुणताकूं त्यजकरिकै स्वभावज्ञान गुण ग्रहण करणा पश्चात् गुणकूं बी छोडकरिके गुणीकूं ग्रहण करणा तदनंतर गुणागुणीका भेद कल्पनासै सर्वथा प्रकार भिन्नहोयकरि आपका आपमै आपमयी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुसैं सूर्यप्रकाशवत् मिलकरिकै रहणा येही औगुण त्यजणेका स्वभावगुणसै तन्मयी रहणेका इसग्रंथमै कह्याहै १ जैसै दीपकज्योतिका प्रकाशमै कोइ पापकरो और कोइ पुन्यकरो तिस पापपुन्यका फल स्वर्ग नरकादिकबी तिस दीपकज्योतिकूं लगतेनाहीं अर पाप पुन्यबी लागते नाही तैसेही

इस सम्यक् ज्ञानदीपका पुस्तकके पढणे वाचणे वा उपदेस देणेके-
द्वारा किसीकूं आपका आपमैं आपमयि स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानानु-
भवकी अचल परमावगाढता होवैगी तिसकूं पाप पुन्य जन्म मरणसं
सारका स्पर्श न पहूचैं उस्कूं कुछबी शुभाशुभ नलागै येह निश्चय
है॥१॥ इतिप्रस्तावना·
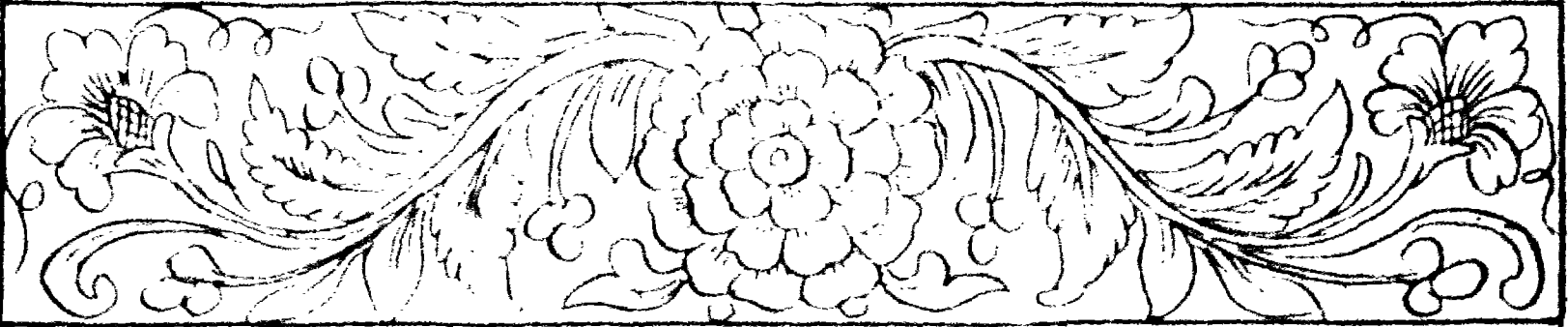
ॐतत्सत्परमब्रह्मपरमात्मनेनमः॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपकाकी भूमिकाप्रारंभः॥ ॥भूमिका हम तुम येह वह येह ४ चारशब्दहै ताके प्रथम निश्चय कोईहै सोही मूल अखंडित अविनाशी अचल स्व स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तू भूमिकाहे जैसे लक्षयोजन प्रमाण येह वलियाकार जंबूद्वीपकी भूमिकाहे तिस भूमि कामे कोईयेक अणुरेणु वा राई डालदे तब अल्पदृष्टिवानकूं येह भाष होवैके इस जंबुद्वीप भूमिमे नहीजाणवामे आवेके वाहा येक अणु रेणु राई किदर कहांपडीहे तैसेही येह ३४३ तीनसें तेतालीस राजू प्र- माण तीनलोक पुरुषाकारहे सो बहुरि अलोकाकाशहे सो कैसोहे अलो काकाशजाकेभीतर येह तीनलोक ब्रह्मांडहे परंतु ऐसा अनंत ब्रह्मांड औरबी होयतो जिस अलोकाकाशमे अणुरेणुवत् होयके समायजा वै ऐसा येह लोकालोक वा अनंत ब्रह्मांड तिस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य

सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु भूमिकामें येक अणरेणु वत् नहीजाणें किदर कहां पडे है वास्ते निश्चय समजो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहै सो निश्चय भूमिकाहै जैसें सूर्यका प्रकास पृथ्वीकेऊपर तन्मयीवत् सर्वत्र प्रसरण होरह्याहै तामें येक अणरेणु नहीजाणें किदर कहां पडे है तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यका प्रकासमें येह लोकालोक अणुरेणवत् नहीं जाणें किदर कहां पडे है सोही त्रैलोकसार ग्रंथमे श्रीमत् नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्तिं कहीहै छीयालीस ४६ चालीस ४० अोर ३४ चोतीस २८ अठाईस २२ बाईस १६ सोला १० दश १९ उन्नीस साढेबत्तलाई ३७॥ साढेसेंतीस १६॥ साढेसोले १६॥ साढेसोलेभणी आगेदोदोहीन १४॥ । १२॥ अंत ११ ग्यारे राजूगणी द्रुम ७ साननर्क ८ जुगल ऊपर १६ सो ले थानमें राजू ३४३ तेतालीसतीनसें धनाकारकीत्योज्ञानमे १ अबहे मुमुक्षुजन स

ज्ञानमिंनीहो श्रवणकरो जैसैयेह लोकालोकहै सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य-
सम्यग्ज्ञानमायि भूमिकामेंहै परंनु सम्यक् ज्ञानमयि भूमिकासे तन्मयीना
ही तैसैंही मे तूं यह वह येह ४ चारवो तन्मयो नाहीं वास्ते भ्रमणहोणोसो-
मैक्षुल्लक ब्रह्मचारी धर्मदास बणिकरिके येह पुस्तग सम्यक्ज्ञानदीपका
इस नामकी बणाईहै इसपुस्तगमै भूमिकासहित द्वादशस्थलभेदहै तामै
प्रथमनो मिथ्याभ्रमजाल संसारसै सर्वथाप्रकार भिन्न होणेके अर्थ येह
भूमिका येकाग्रह मनलगाय करिके पढो १ बहुरिपश्चात् चित्रद्वार देखो-
अर ताका विवर्णपढो द्वारहीकूं अपना स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमायि स्वभाव वस्तु मति समजो मतिमान् मतिकहो २ बहुरि तीजास्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यवस्तु स्वभावमेजैसाहै तै
साहै स्वभावमै तर्कको वा संकल्प विकल्पको अभावहै ताहीके प्रकाशमे ति
सहीकूं परस्पर विरुद्ध चित्र हस्तांगुली सूचकहै मानैहे कहतेहे सो सम्यक्

ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमे तन्मयि कदापि कोई प्रकारवी नसंभवे ३ बहु
रिचतुर्थ ज्ञानावर्णिकर्मचित्रहै ताको अनुभव ऐसो समजणा जैसैसूर्य
के आडा बादलसमयपाय स्वयमेवही आतेहै जातेहै तैसेही स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यके मतिश्रुति अवधि मनपर्ययआ
दि अजीववस्तु आवैजावै अर्थात् ज्ञानकूं आवरण करै सोही ज्ञानावर्णि
कर्म ४ पंचमभेद दर्शणावर्णिकर्म जैसे देखणेकी सक्तिहै परंतु दर्श
णावर्णि जानिको कर्म देखणे नहीं देताहै ५ षष्ठमस्थल कर्म बेदनीहै ता
का दोय भागहै साता बहुरि असाता जैसे तरवारकी लगी मिश्रीकी चासणी
ताकूं कोई पुरुष जिव्हासे चाटतेहै तन्समय किंचित् मिष्टस्वाद भाष हो॰
नाहै विशेष जिव्हा खंडन दुःखभाष होनाहै इसदुःख सुखसे भिन्नस्वभा
वहोणा गुरुपदेशात् ६ सप्तमस्थल मोहनीकर्म जैसे मदिरावसात् स्व॰
सोधनकी खबर नाही तैसेही मोहनी कर्मवसात् आपकूं स्वस्वरूप स्वानुभ

वगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप न समजताहै नमानताहै और सैं-
और आपकूं समजतहै मानतहै ७ अष्टमस्थल आयुकर्महै जैसैबेडी
सें बंध्योपुरुष आपकूं दुःखी समजनहै मानतहै तैसैही आयूकर्म ब-
सात् स्वभावदृष्टिरहित जीवहै सो आपकूं दुःखी मानतहै समजतहै अर्था
त् स्वभावदृष्टिरहितजीवकूं येह निश्चय नहींके आकासवत् अमूर्तिनिरा
कार घट आयु मठायूवन्मे आयुकर्ममे रुकरत्योहूं व्यवहारनयात् ८
नवमस्थल नामकर्म स्वभावदृष्टि रहितहै सोनामकहीकूं अपणास्वस्वरू
प स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाववस्तु समजतहै मानतहै मिथ्या
दृष्टीकूं येह निश्चय नहींके जन्म मरण नामादिक शरीरकाधर्महै ज्ञानवस्तु
कायेह निजधर्मनाहीं ९ दशमस्थलगोत्रकर्म ताकादृष्टांत जैसेकुंभका
र छोटामोटा माटीका बर्तन कर्ताहै तैसैही स्वभावदृष्टीमे नसंभवे येहनी
च गोत्रउच्चगोत्र सोही विभाव दृष्टीमे जीवनीचगोत्र उच्चगोत्र कर्मको कर्ता-

हे तोबी नीचगोत्र ऊंचगोत्रसे तन्मायि होय नही कर्ताहै १० एकादशम-
स्थल अंतरायकर्म ताकाद्रष्टांत जैसै राजाभंडारीकूं कहीके इसकूं सह
स्वरुपियादे परंतु भंडारी नहींदेताहै तैसेंही स्वभावद्रष्टीरहितजीवइ-
च्छातो कर्ताहैके मैं दान देऊ लाभलेऊ भोगभोगू उपभोगभोगू पराक्रमक
र्म बलवीर्य प्रगट करूं इत्यादिक इच्छातो कर्ताहै परंतु अंतरायकर्म इ-
च्छानुसार पूर्णता नही होणे देताहै ऐसा अंतरायविघ्न श्रीसत्‌गुरूके चर
णकी सरण होणेसे मिटैगा ११ द्वादशस्थल मैं येह हैके किसीकूं गुरूप
देशात् स्वस्वरूपको स्वानुभव हुये पश्चात् बी येह भ्रांति होतीहैके मैंअजर
अमर अविनासी अचलज्ञानज्योति नहीं अथवाहूं तो कैसेहूं मेरा अर स-
दाकाल जागतीजोति ज्ञानमायि सिद्ध परमेष्ठीकायेक पणाकैसेहै तथा कोण
सा पुन्यरूभकार्य करणेसें मेरा अर परमातमाका अचलमेल होवैगा मतस्
मैमरताहूं जन्मताहूं दुःखी रोगी सोगी लोभी क्रोधी कामीहूं अरज्ञानम-

यि परमानमानो नमरनानजनमता नरोगी नसोगी नलोभी नमोहीनक्रोधी न कामी फेर उनका मेरा मेल कैसा कैसे है कैसे होवैगा इत्यादिक भ्रांति द्वारा कोईजीव आपकूं निस सिद्ध परमेश्वी ज्ञानमयिसै भिन्न समजता है मानता है कहनाहै ताकी येकता तन्मयि ताकी सिद्धिके अवगाढताके दृढना के अर्थ अनेक दृष्टांत द्वारा समाधान देउंगा सोही कोई मुमुक्षु इससम्यक्ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसें अंतपर्यंत भलेभावसे पढकरिके आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं प्रथमतो अशुभजो पाप अपराध हिंसाचोरी। काम क्रोध लोभ मोह कषायादिकसे सर्वथा प्रकार भिन्नसमज करिके पश्चात् दान पूजा व्रत शीलजप तप ध्यानादिक शुभकर्म क्रिया है ताकूं वी स्वर्णशृंकलावत् बंध दुःखको कारण समज करिके आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानस्वभाव वस्तूकूं दान पूजादिक शुभकर्म क्रियासे सर्वथा प्रकार भिन्नस-

मजकरिके पश्चात् शुद्धसैबी आपकूं भिन्नसमज करिके आगे अनिर्व॰
चनय आपका आपमै आपमयि जैसाका तैसा निरंतरजैसाहै तैसासो
का सोही आदि अंत पूरण स्वभावसंयुक्त रहणा बहुरि ऊपर हमलि॰
खीहैके शुभ अशुभ शुद्ध येह तीनहै इसतीनूकी विस्तीर्णता पूर्णता॰
प्रथम मिथ्यात्वगुणस्थानसै लेकरिके अंतका चतुर्दशगुणस्थानजो अ
जोग केवली ताहां पर्यंत समजणा आगे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य
क्ज्ञानमयि स्वभावमै येह शुभअशुभ बहुरि शुद्धादिक संकल्प विकल्प
तर्क वितर्क विधि निषेध कदापि नसंभवै अर्थात् स्वभावमै तर्कको अभा
वहै॰ हे मुमुक्षु जीवमंडलीहो चेतकरो तुम कहांसे आयेहो कहांजावो॰
गे कहांतुमहो क्याहो कैसाहो कोणतुमाराहै किसका तुमहो बहुरिये
ह शुभाशुभ शुद्धयेहतीनसैतुमारा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि मतिसमजो मतिमानू मतिकहो येह

अशुभादिक तीनूं सम्यक् ज्ञान स्वभावमैं त्याजही है जिस भूमिमैं येह लो
कालोक अणुरेणुवत् नही जाणै किंदर कहां पडे है चलाचल रहित ऐसी
भूमिकासे सर्वथा प्रकार भिन्न तुमारा तुमसें सदाकाल तन्मयि स्व स्वरूप
स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वरूप समजो मनके द्वारा-
मानूं जैसैं दीपककूं दरवणेसैं दीपक की निश्चयता अवगाढता अचल-
ता होतीहै तैसेही इस सम्यक् ज्ञान दीपकाके पढणे वाचणेसे जरूर
निश्चय ब्रह्मज्ञानकी प्राप्तकी प्राप्ति होवैगी तथा सम्यक्तकी प्राप्तकी प्रा
प्ति निश्चयता अवगाढता अचलना होवैगी देखो श्रवणकरो जैनाचार्य
जैन ग्रंथमे कही हैके सम्यक्त बिना जपतप नेम व्रत शील दान पूजादि
क शुभकर्म शुभभावादिक वृथा तुषखंडनतहै बहुरि वेदभूमैं बी कही
हैके ब्रह्मजानानि ब्राह्मणा अर्थात् ब्रह्मकूंतो जाणते नाही अर संध्या
तर्पण गायत्री मंत्रादिकका पढणा आदि साधु सन्यासी भेषधारणाप

र्यंन वृथाहै सर्वसारकोसार सदा काल ज्ञानमयि जागती ज्योतिका लाभ
की जिस्कूं इच्छा होय तथा जन्म मरणादिक बज्र दुःखसै सर्वथा प्रकार
भिन्न होणेकी जिसकूं इच्छा होय सो प्रथम गुरु आज्ञा लेकरिकै इसपु
स्तगकूं आदिसै अंतपर्यंत पढो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
यि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिके अर्थ हम इस पुस्तगमै अशुभ शुभ
भ शुद्ध येहतीनका निषेध लिखाहै सोतो पुद्गल द्रव्य धर्मद्रव्य॰अधर्म॰
द्रव्य आकाशद्रव्य कालद्रव्य येह पांच द्रव्यसें तन्मयि अस्ति समजणा
बहुरि कोई अशुभसें येकता आपका स्वरूपज्ञानकी मानताहै समज॰
ताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी बहुरि अशुभकूं खोटा बुरा समज करि
कै जपतपव्रत शील दानपूजादिक शुभसें आपका स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञा
न स्वभावकी येकता समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्यादृष्टी है॰
बहुरि शुभअशुभ दोहु कूं अर अपणा स्वभाव सम्यक्ज्ञानकूं येकतन्म

यिसमजताहै सोबीमिथ्यादृष्टिहै बहुरि किसीकूंयेह विचारभावहैके शुभाशुभसैंभिन्नमैंशुद्धहूं ऐसी विकल्पसैं आपकास्वस्वरूप स्वानुभवग म्यसम्यक्ज्ञानमयिस्वभावकूंयेक तन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै सोबीस्वभाव पूर्णदृष्टिरहित समजणा स्वभाव सम्यक्ज्ञान दृष्टि वान्को ई पंडित होगो सोतोइस पुस्तगकी अशुद्धता पुनरुक्तिदोष कदाचित् कोई प्रकारबी ग्रहण नहि करेगा बहुरि न्याय व्याकर्ण तर्क छंद कोसअ लंकारादि शब्दशास्त्रसे आपणा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान स्वभावकूं · अग्नि उष्ण तावत् एकतन्मयि समजताहै मानताहै कहताहै ऐसा पंडि तजरूर इसग्रंथकी अशुद्धता पुनरुक्ति दोष ग्रहण करेगा बहुरि ज्यो स्वयंसिद्ध परमातमा अष्ट करम तथाद्रव्यकर्म भावकर्मनो कर्मरहित अखंड अविनाशि अचलसैं सूर्य प्रकाशवत् एकतन्मयि बस्तुहै उसीब स्तुका लाभ वा प्रातकी प्राप्ति होणेजोग थी सोहमकूंहुई ॥ ॥दूहा

होणीथीसो होगई अबहोणैकीनाहि॥ धर्मदासक्षुल्लककहै दु॰
सीजगनके मांहि॥१॥ अर्थात् जैसेंदीपकसैंदीपकचेतना आयाहै
तैसेंही गुरुउपदेशद्वारा ज्ञानहोना आयाहै एबार्तो अनादिहै सद्भू
त व्यवहारमे ज्योकोऊ गुरुके वचन द्वारा स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्तिहुये पश्चात् ऐसा अपूर्व उपगार
को लोपकरिकै गुरुको नाम प्रसिद्ध नहीं कर्ताहै गुरुकी कीर्ति बडाई
जस गुणानुवाद नही कर्ताहै सो म्हापातगी पापी अपराधि मिथ्यादृ
ष्टि हत्यारोहै अर्थात् गुरुपदकों कदाचित कोई प्रकारवी गुप्तररव॰
णा श्रेष्ठनहीं सोही मैंकेद्वारामें सत्य कहताहूं मेरा सरीरको नाम क्षुल्ल
क ब्रह्मचारी धर्मदासहै वर्तमान कालमें सोहीमे कहताहूं श्रवण क॰
रो मालवादेश मुकाम झालरापाटणमे नग्न दिगंबर श्रीमत् सिद्धश्रेण॰
मुनिनोमेंकूंदीक्षा सीक्षा व्रत नेम व्यवहार भेषका दाता गुरुहै बहुरि ब॰

राडदेश मुकाम कारंजा पट्टाधीश श्रीमत्देवेंद्रकीर्तिजी भट्टारकजी का उपदेश द्वारा मेरे कूं स्वस्वरूप स्वानुभव गम्यसम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकी प्राप्तकी प्राप्ति देणेवाले श्रीसतगुरु देवेंद्रकीर्तिजीहै वास्ते मैं मुक्तहूं बंधमोक्षसैसर्वथाप्रकार वर्जित सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहूं सोही स्वभाव वस्तु शब्द बचन द्वारा श्रीमत् देवेंद्रकीर्ति नत्पट्टेरत नकीर्ति जीके मैं भेट अर्पण करचूक्याहूं बहुरि खानदेश मुकाम पारोला मैं सेठ नानासहा नत्पुत्रपीतांबर दासजी आदि बहुतसे स्त्रीपुरुष कूं अर आरा पटणा छपरा बाढ फलटण झालरापाटण बऱ्हानपुर आदि बहुतसे सहर ग्रामोंमे बहुतसे ऽस्त्रीपुरुषांकूं स्वभावसम्यक् ज्ञानको उपदेश दे चुक्योहूं ऊपर लिखेहुये सर्व व्यवहार गर्भित समजणा बहुरि सर्वजीवरासि जिसस्वभावसे तन्मयिहै उसही स्वभावताकी स्वभावना सर्वहीजीवराशिकूं होहू ऐसी मेरा अंतःकरणमे इच्छा हुई है तिस इच्छाकासमा

धानकेअर्थ येह पुस्तग बणाईहै बणाय करिके पांचसै पुस्तगयेह छपा
ईहै ५०० पांचसै पुस्तग प्रसूत होणेकी सहायताके अर्थ रूपीया येकसो
१०० तो जिल्हा इलाहाबाद मुकाम आरामे मखनलालजीकी कोठीमेंबा
बू बिमलदासजीकी बिधवा सोकीसोही अर हमारी चेली द्रोपतीदेवी
नै दीयाहै बिशेष खर्चाके अर्थ ज्योज्यो मेरा वचनोपदेश द्वारा स्वस्वरूप॰
स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु होणेजोग होचुके ते सदा
काल अखंड अविनासी चिरंजीव रहो इतिसम्यक्ज्ञानदीपकाकी॰
प्रथम भूमिका समाप्तः ॥१॥ ॥ ॥ प्रश्न ॥ ॥ जिनेंद्र कोणहै
॥ उत्तर ॥ ॥ ज्ञानभानुजिनेंद्रहै प्रश्न जिनेंद्रकी पूजा करणा के नाही
करणा उत्तर पूजाकरणा परंतु सम्यक्ज्ञान वस्तु है सोही जिनेंद्रहै अ
ज्ञान वस्तुकूं कोई जिनेंद्र मानताहै समजताहै कहताहै सो मिथ्याद्रष्टी॰
है प्रश्न ज्ञानकोणहै उत्तर तनमनधन वचनकूं बहारे तनमनधन

वचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मकूं अनादहीमें सहज स्वभा-
वहीसें जाणनाहै सोही ज्ञानहै प्रश्न मंदिरमें पद्मासण षड्गासण धा-
तु पाषाणकी मूर्तिहै सारूं वहुरि जल चंदनादिक अष्टद्रव्य मंदिर आदि
येह सर्व ज्ञानहै के अज्ञानहै उत्तर मंदिर प्रतिमादिक अज्ञानहै इनस-
र्वकूं केवल जाणनाहै सोही ज्ञानहै प्रश्न केवलज्ञान है सो शुभाशुभ-
दान पूजा क्रिया कर्म कर्ताहै के नाही कर्ताहै उत्तर केवल ज्ञानहै सो किंचि-
तमात्रवी शुभाशुभ दान पूजा क्रिया कर्म नही कर्ताहै केवल जाणनाही
है प्रश्न तो येह शुभाशुभ कोण कर्ताहै निश्चय नयात् जिसका जोही
कर्ताहै व्यवहार नयात् शुभाशुभ कर्मसे अनत् स्वरूप अनन्मायि होय-
करिके ज्ञान कर्ताहै १ क्या करूं कहतां लाजसरम उपजतीहै तथापिक-
हताहूं जैसे सूर्यसें कदापि प्रकास नभिन्न हुवो नहोवैगो नभिन्नहै तैसे
जिससें देखणा जाणना कदापि भिन्ननाही नभिन्न होवैगा नभिन्नहै ऐ

सा केवल ज्ञानमयि परमातमासे येक नेत्र काटि मकारामात्रवा समय कालमात्रवी कोई जीवभिन्न रहताहै सोजीव संसारी मिथ्यादृष्टी पात गीहै जैसे सूर्यसे अंधकार अलगहै तदवत् ज्ञानस्वरूपि जिनेंद्रसे आपकूं अलग समज करिके फेर धातु पाषाणकी देवमूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ताहै सोमूर्ख मिथ्यादृष्टीहै बहुरि जैसे सूर्यसें प्रकास तन्मयिहै तैसे ज्ञानस्वरूपी जिनेंद्रसें गुरुपदेशात् तन्मयि होय करिके फेर धातुपाषाण की मूर्तिका दर्शण पूजादिक कर्ताहै सोसम्यक्दृष्टी धन्यवाद योग है १ हेमेरामंत्रीहो दानपूजा व्रत शील जप तपनेमादिक शुभकर्म क्रिया भावकरो बहुरि अशुभजो पाप अपराध झूठ चोरी काम कुशील वीकरो अर्थात् शुभाशुभ काम कर्म क्रिया इच्छा प्रमाण भलाई करो परंतु समज करिके करो लौकीक वचन प्रसिद्धहै क्याके देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्नातो नुकसाण विगाड किसवास्ते होता बिना समजसे ये

हु काम कार्य तुम कीया इस वास्तै नुकसाण हुवा बिना समज तुम पूर्वं अ
नंतबेर प्रतक्ष समोसरणमै केवली भगवानकी मोतीके अक्षत रत्नदीप
कल्पवृक्ष पुष्पादिकसै पूजाकरी बहुरि प्रतक्ष दिव्यध्वनी श्रवण करी
बहुरि मुनीव्रतशील अनंतबेर धारण कीये अर काम क्रोध लोभादिक
वी अनंतकालसै करते चले आये सो सर्व शुभाशुभ बिनसमजसे करते
चले आयेहो देखो बिनसमजसैं कंठमै मोतीकी मालाहै अर भंडारमैखो
जताहै बिनसमजसैही कस्तूरयो मृग कस्तूरीकूं खोजताहै बिनसमज
सैही आपहीकी छायाकूं भूत मानताहै बिन समजसैही नदीकाजल
कूं शीघ्रवेगसैं बहता देख करिके आपही कूं बहता मानताहै बिनसमज
सैही काखमै छोकरो पुत्र अर गांव देसमै खोजताहै बिनसमजसे हीसं
सारी मिथ्याती विषयभोग काम कुशीलतो छोडते नाही अर दान·
पूजा व्रतशीलादिक छोड करिके आपकूं ज्ञानी मानतेहै कहतेहै समज

तेहे बहुरि बिनसमजसैं ही सदाकाल जागती ज्योति स्वस्वरूप स्वानु भव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका कबि कदाचित् तन्मयि तातो आपसें हुये नाहीं अर मूरख व्रत जप तप शील दान पूजादिक कर्ताहे सो घृतके अर्थ जलकूं मथन वृथाही कर्ताहे वास्ते सर्व शुभाशुभ व्यवहार-क्रियाकर्मके बहुरि जन्म मरण नामजाति कुल घातन मन धन वचनादिकके प्रथम समज होणा श्रेष्ठहे १

॥ इति भूमिका समाप्त ॥

अथ सम्यक् ज्ञानदीपिकाप्रारंभः

ॐनमः ॥ ॥अथसम्यक्ज्ञानदीपकाप्रारंभः॥ ॥तहाप्रथमस्व
स्वरूपस्वानुभवसूचकश्लोक॥ ॥महावीरंनमस्कृत्य केवलज्ञान-
भास्करं॥ सम्यक्ज्ञानदीपस्य मयाकिंचित् प्रकाश्यते ॥१॥ ॥स्कं
दरिछंद॥ ॥अथअनादिअनंतजिनेश्वरम् सरसस्कंदरबोधमयि
म्मरं॥परम मंगलदायकहैसही नमतहूंइसकारणस्कभमही॥१॥ ॥
अथबचनिका॥ ॥मूलबस्तुदोयहै ज्ञान अज्ञान तामेजैसे सूर्यमे
प्रकाशगुणहै तैसेजिसबस्तुमे देखणेजाणनेका गुण स्वभावहीसेहै
सोबस्तुतो केवल ज्ञानहै बहुरि जिसबस्तुमे स्वभावहीसे देखणेजा
णनेका गुण नाहीं सोही अज्ञान बस्तुहै येह तन मनधन बचन शब्दा
दिक अज्ञानसे ऐसा मिलेहै जैसे काजलसे कलंक मिलरह्योहै बहुरि
जैसे केवलि ज्ञानमे देखणे जाणनेका गुणहै तैसे शब्दमे कहणे का-
गुणहै बहुरि ज्ञानवस्तु आपापरकू देखतहै जाणतहै सो आपहीआ

पकूं तो आपसे आप तन्मयि हो करिके जाणत है बहुरि ज्ञानसे सर्वथा प्रकार भिन्नवस्तु है ताकूं ज्ञान जाणताहै परंतु जड अज्ञान मयि वस्तु से तनमयि होकरिके नहीं जाणत है बहुरि कहणे का गुण अज्ञान-मयि शब्द है तामें है सो शब्द स्वपरकी वार्ता कहता है परंतु स्वपरकूं जाणतानाहीं स्वसें तो तन्मयि होकरिके कहताहै बहुरि परसें अतन्मयि हो करिके कहताहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुहै ताका अर शब्दादिक अज्ञानवस्तुहै ताका परस्पर सूर्य अंधकारकासा अंतर भेद मूलहींसें है तोवी शब्द है सो परमात्मा ज्ञानमयि-की वार्ता कहताहै॥ ॥अथ प्रश्न॥ ॥शब्द अज्ञान वस्तु है सो सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माकूं जाणत नाहीं फेर सम्यक् ज्ञान मयि परमात्माकी वार्ता कैसे कहताहै अथ उत्तर जैसें कोई चंद्र दर्शणको लोभी किसी गुरु संगन सैं नम्रता पूर्वक पूछी के चंद्र कहा है तब गुरु कही

के वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके ऊपर इहां बिचार करो शब्दांगुलीके अर चंद्र
के जेता अंतर भेद है तेताही भेद सम्यक् ज्ञानमयि परमात्माके अर शब्द
के समजणा इसप्रकार कहणे का गुण तो शब्द मैं है बहुरि जाणवा का
गुण केवल ज्ञानमैं है इति जैसौ जिस नगरमैं अज्ञानी राजा है ताके ऊ
पर केवल ज्ञानी राजा होसक्का है बहुरि जिस नगरमैं केवल ज्ञानी रा
जा है ताके ऊपर कोई वी अधिष्टाता राजा होणा न संभवै अब हे केव
ल ज्ञान स्वरूपी सूर्य तूं मूल स्वभावहीसै जैसा को तैसो जैसो है तैसो
सो को सोही है तूं केवल ज्ञान मायि सूर्यही है तुं न स्कु णताही अवण
करि तेरे करम भरम पुद्गल का विकार काला पीला लाल धौला हरया
अनेक पाप पुन्यरूपी बादल बीजली आदि आडा आवै जावै तोबी॰
तूं तेरेकूं केवल ज्ञान मायि सूर्य ही समज मान तूं तेरेकूं केवल ज्ञानमयि सू
र्य न समजैगो न मानैगो तो तेरेकूं तेराही घात करणे का पाप लागैगो आ

पयाती महापापी॥ ॥इतिप्रसिद्धवचन॥ ॥अथमंत्र॥ ॥ह्रांह्रींह्रः
मैकेवलज्ञानमयि सूर्यतो निश्चयहूं परंतु मै तनमनधन बचनादिकसेंए
साभिन्नहूं जैसा अंधारासै सूर्यभिन्नहे तैसा फेरमै मेरेकूं केवल ज्ञानम
यिसूर्यकोंण द्वारा होकरिकेंसमजूं मानूं सोकहो अथउत्तर नसकूंण
नाहीश्रवणकरि आत्मख्याती ग्रंथमे कुंदकुंदाचार्य ग्रंथके प्रथमारंभ
मैहीकहीहै जीवद्वार अजीवद्वार आश्रवद्वार संबर द्वार निर्जराद्वार
बंधद्वार मोक्षद्वार पापद्वार पुन्यद्वार सर्वविशुद्धीद्वार कर्ताद्वार कर्मद्वा
र येह द्वादशद्वारा तूंतेरेकूं निश्चयसमज तथा हम तुम येह वह येह ४
च्यारद्वारा द्वार॰ होय करिकै तूंतेरेकूं निश्चय समज या तन मन बचन
धनादिकके द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा पुद्गलतो आकार अरध
र्माधर्म आकाशकालहैसोनीराकार वास्ते आकार नीराकारके द्वारा हो·
करिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज है अर नही येह दोय द्वारा होकरिकै तूंते

रेकूं निश्चय समज निश्चय व्यवहारके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज वा नाम स्थापना द्रव्य भाव येह ४ च्यारके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा जन्म मरण सुख दुःख शुभाशुभ विचारके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा संकल्प विकल्प भावाभावके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज १ वेद पुराण शास्त्र सूत्र सिद्धांतके द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज तथा द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मना द्वारा होकरिकै तूं तेरेकूं निश्चय समज पूर्वोक्त समजसे विशेष समज गुरुके वचन द्वारा तूं तेरेकूं निश्चय समज और श्रवण करि जैसे सूर्य प्रकाश येक मयिहै तैसे पूर्वोक्त द्वारकूं अर तूं तेरेकूं येकमयि समजैगो मानैगो तो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होवैगो औरबी ज्योकोई द्वारहीकूं आपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव समजैगो मानैगो वो आपघाती महापापी मिथ्यादृष्टी होरहैगो

जैसैं येक बडे भारी नगरके अनेक द्वार सुंदर हैं इच्छा आवै कोई द्वारमै होकरिकै सहरमै प्रवेश करो प्रवेश करणेवालो नगरमै पूगजायैगो विचार करणा सहरके भीतर महल मंदिर मकान हैं ताके द्वार सहस्त्र लक्षादि हैं अर सहरमैं प्रवेश करणे वाला का शरीरमै दश द्वार तो प्रसिद्ध ही है विशेष रोमरोम प्रतिछिद्र हैं वास्तै सहरमै प्रवेश करणे वालेके शरीरही मैं लक्ष कोटादि द्वार हैं वास्तै पूर्वोक्त विचार द्वारा आदि अनंत संसार अपार संसारके द्वारा होकरिकै अपणा आपमै आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु कूं अर पूर्वोक्त द्वारकूं अमिउष्णतावत् सूर्य प्रकाशवत् येक मति समझो मतिमानूं जैसै राज द्वार ऐसा कहणेसै येह भाव भाषहोना है के जिस द्वारके भीतर होकरिकै राजा आतेहैं जाते हैं परंतु ऐसै न समजणा के राजा है सोही द्वार है अर द्वार है सोही राजा है केवल कहणे मात्र राज द्वार है अर्थात् द्वार है सो द्वारही है अर राजा

हेसो राजाहीहै ऐसैही सर्वद्वार द्वारप्रति समजलेणा जिसकाजोही द्वार-
है क्यूंकेसूर्यके देखणेसे सूर्यकी खबर होतीहे तैसैही जिसकूं देखणेसे
जिसहीकी खबर होतीहे येसर्व आणहोएगीसो युगती स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी प्रातकी प्राप्ति के अर्थ हम क-
रिहै औरबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाववस्तुसूचक
युक्तिआगे कहैगे तुम इस द्वारमे होकरिके आवोजावो अथवा अमुकाद्वार-
मे होकरिके आवोजावो मोक्ष द्वार जीवद्वार अजीवद्वार ध्यानद्वार इत्यादि-
क द्वारमे होकरिके आवोजावो यदि नहि आवो नहीजावो तो तुम तुमारास्व-
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावमे जैसाका तैसा जैसाहोतै
सासोका सोहीहो सोही रहो हे सूर्य तूं तेरा प्रकाशगुण स्वभावकूं त्यागकरि
के अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधारावन मति होएणा नहोएणा तैसैही हे केव
लज्ञानमयि सूर्य तूं तेरा गुण स्वभावसै निरंतर सदोदयहै सोको सोही रहणा

कदाचित् कोईप्रकारकी तूं तन मन धन वचन शब्दादिक वा पुद्गल धर्मा धर्माकाश कालादिक घन मतिद्दोएगा नहोएगा १ इतिचित्रद्वार विवरण युक्ति संपूर्ण दोहू हस्तांगुली चित्र द्वारा परस्पर उपदेस रूप सूचहै ता को अनुभव ऐसैलेएगा येह येक द्वाराहै तामें येक कहताहै इस द्वारमे होक रिकै तुम इदरकी तरफ जावोगा नवतो तुमकूं जीव चेतन ज्ञानका लाभ हो गा दूसरा कहताहै इस द्वारमे होकरिकै तुम इदरकी तरफ जावोगातो तुम कूं अजीव अचेतन अज्ञान जडका लाभहोवेगा यदितुम हमारे कहणेसे जीवाजी वज्ञानाज्ञानका लक्षलक्षणजात्यादिक परस्पराभिन्नाभिन्न समज करिके दुवि धाहै तताकी विकल्पत्याग करिके दोहू तरफ नहीं जावोगे तो तुम तुमारा स्वस्व रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावमे स्वभावहीसे जैसा का तैसा जै साहै सोकासोही जहांके तहां चलाचलरहित रहोगे १

अथचित्रद्वारचित्र.
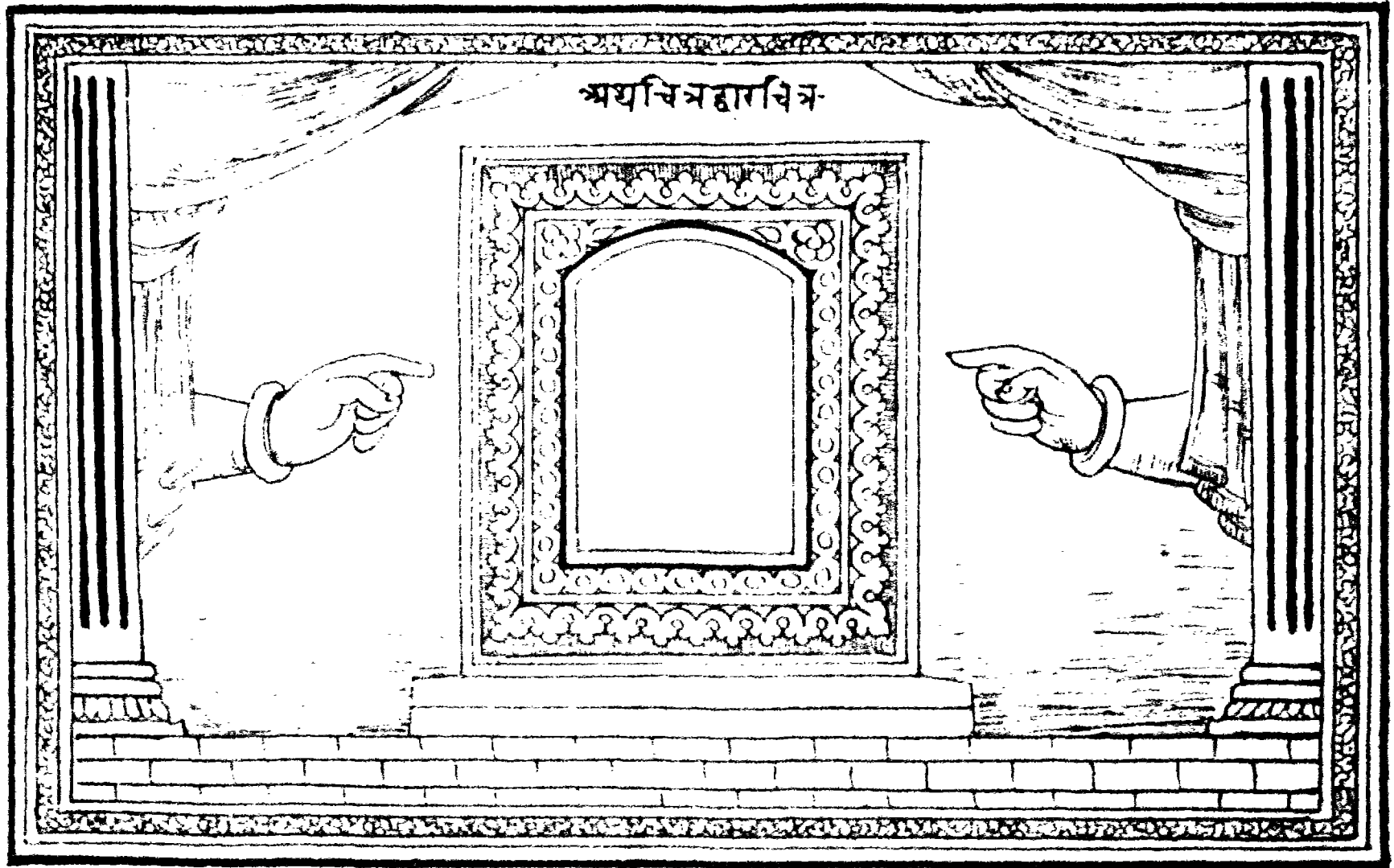
ॐनमः॥ ॥अथवस्तुस्वभावविवर्णवचनसहितलिख्यते॥ ॥दोहा॥ ॥सम्यक्ज्ञानस्वभावमै लीनभयेजिनराज धर्मदासक्षुल्लककरै नत्वानिसिदिनसाज॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ मूलवस्तु २ दोयहै एकज्ञान दूसरो अज्ञान बहुरि अज्ञान वस्तु पांचहै ५, पुद्गल धर्म अधर्म आकाश काल येहपांच द्रव्यहे तामै पुद्गलतो मूर्ति आकारहै बाकी ४ च्यार द्रव्य अमूर्ति निराकारहे इनमे ज्ञानगुण नाही जीवबी अमूर्ति निराकारहे परंतु जैसे सूर्यमे प्रकाशगुणहै तैसे जीवमे ज्ञानगुणहे वास्तेजीव वस्तु उत्तमहै परंतु जोजीव गुरुपदेशात् अपणा आपमे आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु जाणगये सोतो उत्तमहै पूज्यहै मान्यहै धन्यवादयोगहे बहुरि जैसे बकरी मंडलीमे जन्मसमयसैही पर वसात् सिंह रहताहै आपकूं सिंह स्वरूप नसमजताहे नमाननताहै तैसेही जोजीव अनादि कर्म वसात् संसार कारागारमै

है सो अपणा आपमें आपमयि सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव गुणकूं तो जाणने नाही मानते नाही अर अनादि कर्म बसात् आपकूं ऐसा मानत है के येह जन्म मरण नाम अनाम आकार निराकार तन मन धन बचन बिचार बुद्धि संकल्प विकल्प राग द्वेष मोह काम कर्म क्रोध मान माया लोभ पाप पुन्यादिक है सोही मैंहूं अर्थात् स्वरूप ज्ञान रहित है सो जीव तो है परंतु अशुद्ध संसारी जीव है अब येक दोय संख्या असंख्या एकांत अनेकांत एक अनेक हूंताहैन आदिकसें सर्वथा प्रकार भिन्न एक स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु चलाचल रहित है बिसेष स्वानुभव आगे चित्र द्वारा लेणा साधारण अबी लेणा सर्व वस्तु अपने अपने स्वभावमें मग्न है कोई वस्तुबी अपणा स्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभाव गुणकूं उल्लंघन करिके परस्वभावगुण ग्रहण करते नाही॰ वस्तु अपणा गुणस्वभाव छोडदे तो वस्तका अभाव होय वस्तका अभा

वहोतेसंते आत्मा परमात्मा अरसंसार मोक्षादिक का अभाव होवैगा सं
सार मोक्षादिकका अभाव होने संते सून्यदोष आवैगा वास्ते वस्तु कोइहै
सर्वही वस्तु अपणे अपणे स्वभावमै जैसीहै तैसीहै तैसेही स्वस्वरूपीस्वा
नुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञानमयि वस्तुभी स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै
स्वभावमै तर्कको अभावहै तथापी अनादिकालसै स्वस्वरूप स्वानुभव-
गम्य सम्यक्‌ज्ञान मयी वस्तुसे सर्वथाप्रकार भिन्नयेक अज्ञानमयि वस्तु
है तामै कहणेका बिचार चिंतवन संकल्प बिकल्प आदि बहुतगुणहै सोही
वा जडमयि अज्ञान वस्तु अनेक प्रकारसे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्‌ज्ञा
नमयि स्वभाव वस्तूकूं मानैहै कहैहै सो सम्यक्‌ज्ञान स्वभावमै संभवै नाहीं
तातै मिथ्याहै जैसी मानैहै कहैहै तैसी वस्तू वाहै नही क्यूंके वस्तु अपणा
स्वभावमै जैसीहै तैसीहै सोहैहीहै वा जड अज्ञान मयि वस्तु है सो सम्यक्‌
ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं इसप्रकार मानैहै कहैहै सोही कहियेहै वास्त-

स्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तो अपणी आप आपहीके स्वभावमें है सोनो जहांकी तहां जैसाकी तैसी जैसीहे तैसी सोकी सोईहीहै सोहै जिसकूं कोइतो निराकार मानैहै कहैहै अर उसी वस्तुकूं कोई आकार मानैहै कहैहै अर्थात् उसी वस्तुकूं कोई कैसे मानैहै कोई कैसे मानैहै अब देखो चिन्हस्तपरस्पर सम्यक्ज्ञान स्वभाव वस्तु कूं आंगुलीसे सूचैहै पूर्ववासी कहताहै मानताहै केया सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिम कूंहै पश्चिमवासी कहताहै मानताहै केया सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पश्चिमकूं नही किंतु या वस्तु पूर्वकूंहै दक्षिणवासी कहताहै मानताहै के या सम्यक्ज्ञान मयि स्वभाव वस्तु पूर्वकूं नही अर पश्चिमकूं नही। या सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुतो उत्तरकूंहै उत्तर वासी कहताहै के या सम्यक्ज्ञान मयिस्वभाव वस्तुतो पूर्व पश्चिमउत्तर कूंबी नही किंतु या सम्यक् ज्ञानमयिस्वभाव वस्तु दक्षिणकूं है ऐसैही

अग्नीकोणवासी उसवस्तूकों वायूकोणमें माननाहै वायूकोंणवासी उस वस्तूकूं अग्नीकोणमें माननाहै नैऋत कोण वासी उस वस्तूकूं ईशान कोणमें माननाहै ईशान कोंणवासी उस वस्तूकूं नैऋत कोणमें मान-नाहै ऐसेही निश्चया लंबी व्यवहारकूं निषेधैहै व्यवहारा लंबीनीश्चय-कूं निषेधैहै॥ ॥सवैया॥ ॥एककहूंतो अनेकहिदीषत एकअनेक-नहीकछु ऐसो॥ आदिकहूंतो अंनही आवत आदिस्फ अंतस्फ मध्यस्फ के सो॥ गुनकहूंतो अगुनहै कहां गुनअगुनउभयोनाहिऐसो जोहिकहूं सो-हैनहिसुंदर है नोसही पणजैसो कोनेसो॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ उस सम्यक्ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुकूं कोई कैसे माननहै कोई कैसे मानन है परंतु मानूं भलाई वस्तुयेह मानतेहै जैसीहै नही भावार्थ वस्तु अ-पणा स्वभावमें जैसीहै तैसीहै सोहै वस्तुका स्वभावमें नर्कको अभाव है॥ ॥चौपाई॥ ॥ज्ञेयाकारब्रह्ममलमाने नासकरणकोउद्यमठाने॥

वस्तुस्वभाव मिटैनहिं क्यूंही तातैंखेदकरैसठयूंही ॥दोहा॥ वस्तुविचा॰
रतध्यावतै मनपावैविश्राम॥ रसस्वादनसुखऊपजै अनुभवताकोनाम
॥२॥ अनुभवचिंतामणिरतन अनुभवहैरसकूप अनुभवमारगमोक्ष
को अनुभवमोक्षस्वरूप॥३॥ ॥अथवचनिका॥ ॥अर्थात् येह
जेतीनयन्याय एकांत अनेकांत निश्चय व्यवहार स्याद्वाद प्रमाणन॰
यनिक्षेपादिकयेहजेताहै तेताही वादाविवादहै बहुरिजेता वादावि
वादहै तेताही मिथ्यात्वहै जेता मिथ्यात्वहै तेताही संसारहै वास्ते॥
चौपाई॥ ॥सतगुरुकहैसहजकाधंधा येहवादविवादकरैसोअंधा
॥१॥ ॥औरऋणोनाटिकसमयसारग्रंथोक्तं॥ सवैया ३१ सा॥ ॥
असंख्यात लोकपरमाणजोमिथ्यातभावतेहीव्यवहारभावकेवलीउक
तहै॥ जिनकेमिथ्यातगयोसम्यकदरशभयोतेनियतलीनव्यवहारसैमु
कतहै॥ ॥पुनरोक्तं॥ ॥निश्चयव्यवहारमैजगतभरमायोहै॥ ॥

भावार्थ॥ ॥ वास्वस्वरूप सम्यक् स्वानुभवगम्य ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तोस्वभावहीसे जैसीहे तैसीहे देखो चित्र हस्तांगुली सूचहे पूर्वपक्षी- जिस वस्तुकूं पश्चिम तरफ मानैहे तैसैही पश्चिमपक्षी उसी वस्तुकूं पूर्वकी तरफ मानैहे वस्तुतो नपूर्वकूं नपश्चिमकूं वृथाही पूर्वपक्षी पश्चिम पक्षी परस्पर विरोधसूच हे- क्युंके वस्तु स्वस्वभावमे स्वभावहीसे जैसीकि तैसी जहांकी तहां चलाचलरहितहे इस स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य क् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुकी जिसकूं पूर्ण अनुभव लेणा होय सो प्रथ- म आपकूं मेकेद्वारा वा गुरुपदेसात् ऐसो कल्प लेणो ऐसो आपकूं मा- नलेणो के स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्य स्वभाव वस्तु अपणी आपमे आप स्वभावहीसे जैसीहे तैसीहे जिस स्वभावमयिव स्तुमे नर्कको अभाव मूलहीसेहे सोही मेहूं ऐसे अपणे आपकूं मेकेद्वा रा वा गुरुके बचनद्वारा कल्पलेणा वादपीछे चित्र हस्तांगुलीमोनसहित

येकांतस्थानमै बैठकरिकै देखवोही करो देखने देखने देखणारहैगा ना चणेमै मजा नाहीं नृत्यनाचदेखणेमै वडा मजाहै ॥ ॥दोहा॥ ॥सम्य क्ज्ञानस्वभावसे सदाभिन्नअज्ञान॥ धर्मदासक्षुल्लककहै प्रेमचंद्रतु मान॥१॥ चित्रांगुलिकूं देखके मनमै करोविचार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै पावोगाभवपार॥२॥ जैसासूर्यका प्रकास पृथ्वी जलाग्निआदि कर्त्ता कर्म क्रियाके तथा शुभाशुभ वस्तूके ऊपर है तैसेही चित्रहस्तांगुलीके ऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका ज्ञानगु ण प्रकाशहै परंतु चित्रहस्तांगुलिसे अर चित्र हस्तांगुलीकाभाव क्रि याकर्म आदिजेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासे ज्ञानगुण नतन्मयि है नहोयैगा नहुयेथे बहुरिज्ञानगुण अर जिसगुणीका ज्ञानगुणहै सो भी चित्रहस्तांगुलीसे बहुरि चित्रहस्तांगुलीकाभाव क्रिया कर्म आदि जेता कुछ शुभाशुभ व्यवहारहै तासे नतन्मयि हुये नहोयैगा नहै वि-

शेष और समजणा करणो जैसे येक मोटो चोडो लंबो स्वच्छस्वभावम
यि दर्पण ताके सन्मुख अनेक प्रकारका काला पीला लाल हरित रूपे
दादिक रंगका थांका टेडा लंबा चोडा गोल तिरच्छा आदि आकारहै ता
की प्रतिछाया प्रतिबिंब उस स्वच्छ दर्पणमे तन्मायिवत दीखतहै तैसैही
स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमायि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमे येह
मनुष्य देव तिर्यंच नारकीका वा स्त्री पुरुष नपूंसकका वा तनमन धन ब
चन तथा लोकालोक आदिकका शुभाशुभ जेता व्यवहारहै ताकी प्र
तिच्छाया प्रतिबिंब उस स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्व
च्छ स्वभाव दर्पणमे तन्मायिवत दीखतहै मानुकील राखेहै मानु चित्रका
र लिख राखेहै मानु काहु शिल्पकार टांचीसे कोर राखेहै भावार्थ स्व-
स्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभावमयि दर्पण हैसो
बी स्वभावहीसे स्वभावमे जैसाहै तैसाहै बहुरि तनमन धन बचनादिक

अर इस तन मन धन वचनादिक का शुभाशुभ व्यवहार बहुरि ताकी प्रतिच्छाया प्रतिबिंब स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणमे तन्मयिवत् दीखतहै सोबी अज्ञानमयि स्वभावहीसे स्वभावमे जैसाहै तैसाहै पूर्वोक्त स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वच्छ स्वभाव दर्पणको साक्षात् स्वानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति सद्गुरु का उपदेशबिना तथा काल लब्धि पाचक हुये बिना स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानको लाभ नहीहोय सुणो जैसे सूर्यमे प्रकाश तन्मयिहै तैसे जिस वस्तुमे ज्ञानगुण तन्मयिहै उसी वस्तुकूं मुनी ऋषी आचार्य गणधरादिकहैसो जीव कहतेहै सो निश्चय दृष्टीमे जीवराशी जीव मयिहै शुणो निश्चयदृष्टिमे जीवराशीके परस्पर जातिभेद नही स्वभाव भेद नही लक्ष लक्षणको भेदनहीं नामभेद नहीं स्वरूपभेद नही अर्थात् गुणगुणी अभेदं वास्तै जीवराशीके परस्पर गुणगुणी भेदनाहीं यदिस्यात् परअपेक्षाभे

दहैसो परमयोईहहै येह अमरादिसिद्धांत वार्ता वचनहैसो शब्दसै तन्मयी है अवहे मतवालेहोतथाहेजैनमतवालेहो हेवैष्णुमत वालेहो शिवमतवा ले बौद्धमतवाले आदि षट्मतवालेहो जन्मांध षट् हस्तीको जथावत् स्वरू प नजानकरिके परस्पर विवाद विरोध करते करते मरगये तैसेंहे षट्मतवाले हो षट्जन्मांधवत् परस्पर बिनसमजे विवाद वैर विरोध मति करो शास्त्रहस्य गुरुवाक्यं तृतीयं आत्मनिश्चयं अर्थात् शास्त्रमें लिखी होय सोकी सोही गुरुमु खसे वाणीखर्ती होय वहुरि सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावमें अचलप्रमाणमें आवैउसीकू हेमत वालेमित्रोहो समजो दोहा समजोसम जोसभजमै समजो निश्चयसार॥ धर्मदास क्षुल्लक कहे नवपावोभवपार॥ १॥ इति०

पूर्वदिशा
अजीव
अभोक्ता
अनेक
अकर्ता
निराकार
व्यवहार
आदि
भाव
पश्चिमदिशा
नास्ति
स्वस्वरूपस्वानुभ
वगम्य सम्यक्ज्ञानमपि·
स्वभाव सर्व वस्तु स्वभाव में जै
सा है तैसा है स्वभाव में न कै को
अभाव मूल है सो हैं· इस सर्व का
प्रकास सर्व चिन्ह हस्तांगुली
के ऊपर है॥
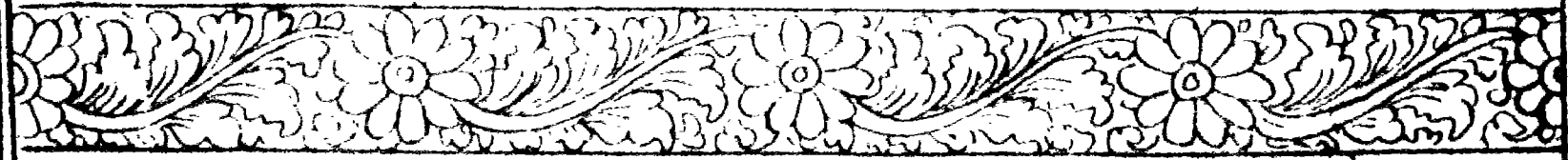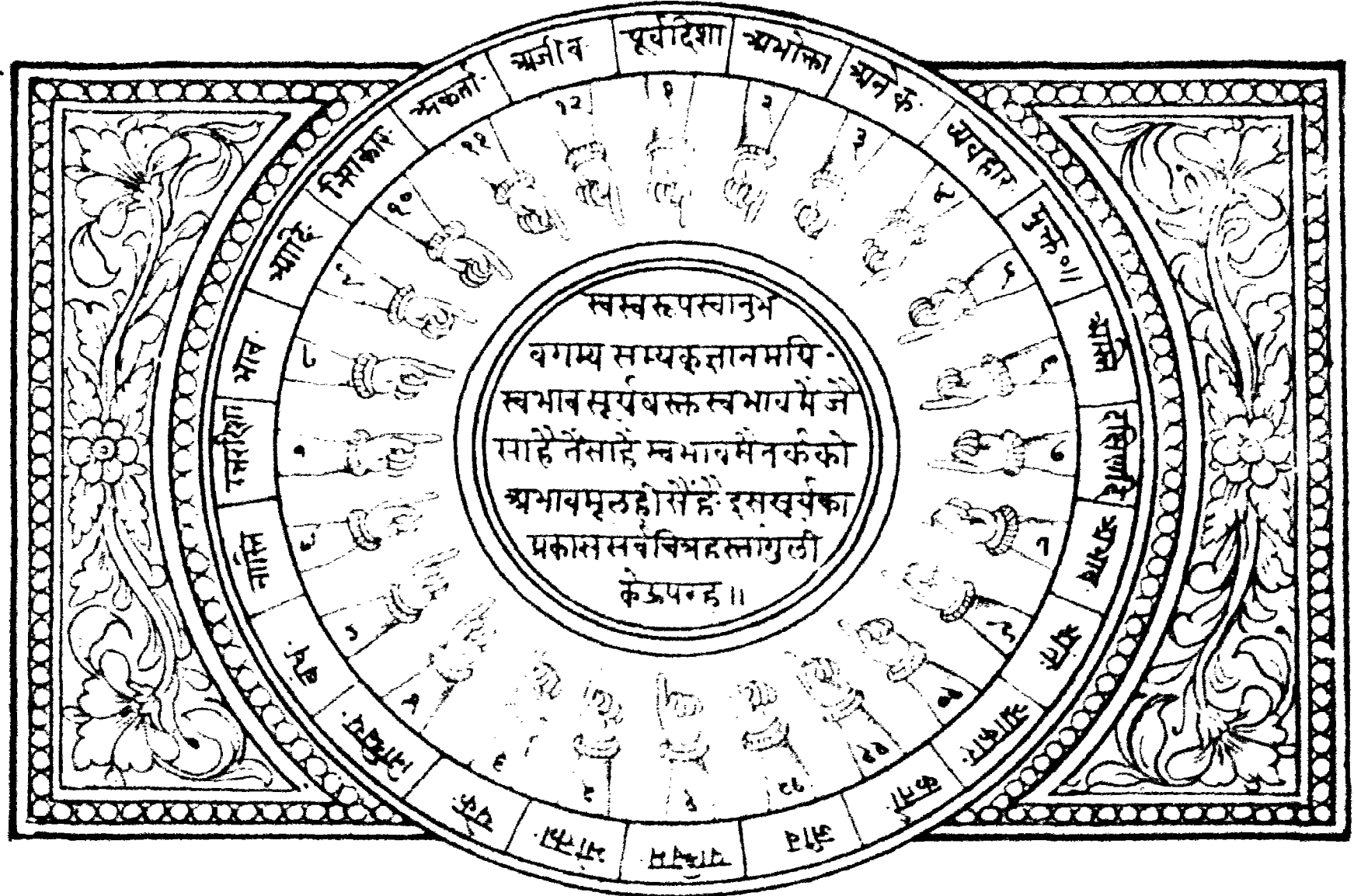
अथ स्वस्वरूपस्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावसूर्य वस्तु है तासे तन्मयि होय करिकै ताका स्वानुभव ऐसे लेगा एक नयकै तो दुष्ट कहिये हूषीहै वहुरि दूसरी नयके दुष्ट नाहीहै ऐसे येह चैतन्यविषे दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके कर्ताहै दूसरी नयके कर्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके भोक्ताहै दूसरी नयके भोक्ता नाहीहै ऐसै येह चैतन्य बिषे दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयकेजीवहै दूसरी नयके जीव नाहीहै ऐसे येह चैतन्याबिषे दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक नयके सूक्ष्महै दूसरी नयके सूक्ष्म नाहीहै ऐसे येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके हेतुहै दूसरी नयके हेतु नाहीहै ऐसे येह चैतन्यविषे दोहू नयके दोयपक्षपातहै १ एक नयके कार्यहै दूसरी नयके कार्य नाही १ एकनयकेभावहै दूसरीनय केअभावहै ऐसे येह चैतन्य विषै दोहूनयके दोहु पक्षपातहै १ एकनय

केयेकहै दूसरी नयके अनेकहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्ष
पातहै १ एक नयकेसांतकहिये अंतसहितहै दूसरी नयके अंत नाहीहै
ऐसै येह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके नित्यहै दू
सरी नयके अनित्यहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपातहै १
एकनयके वाच्य कहिये वचनकरि कहनेमै आवैहै दूसरी नयके वचन॰
गोचर नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोहू नयके दोय पक्षपातहै १ एक॰
नयके नानारूपहै दूसरी नयके नानारूप नाहीहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दो
हूनयके दोय पक्षपातहै १ एकनयके चेतकहिये जाननेजोग्यहै दूसरी
नयके चिंतवने योग्य नहीहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दोहूनयके दोय पक्षपा
तहै १ एकनयकेदृश्यकहिये देखनेयोग्यहै दूसरी नयके देखनमै नाहीं
आवैहै ऐसैयेह चैतन्यविषै दोहूनयके दोयपक्षपातहै १ एकनयके वे॰
द्यक कहिये वेदनेयोग्यहै दूसरी नयके वेदनेमै नही आवैहै ऐसै येहचै॰

तन्यविषै दोय नयके दोयपक्षपातहै १ एक नयके भाव कहिये वर्तमानप्र त्यक्षहै दूसरी नयके नाहीहै ऐसै येह चैतन्यविषै दोय नयके दोयपक्षपात है १ ऐसै चैतन्यविषै येह सर्व पक्षपातहै बहुरि तत्ववेदी हीहै सो स्वस्वरू प स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य बस्तुकूं यथार्थ स्वानुभव क रनेवालाहे नाके चिन्मात्रभावहै सो चिन्मात्रहीहै पक्षपातसै सूर्यप्रकाश वत् येक तन्मायि नहै नहोवैगा नहुयेथे अर्थात् जैसे सूर्यसें अंधकार भिन्न है तैसे स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहै सो विधिनि षेध अस्ति नास्ति राग द्वेष वैर विरोध पक्षपात हैनाहैतसै वा संकल्प विक ल्पसै भिन्नहे १ जैसे सूर्यका प्रकासमै येक लघुहै तो दूसरो स्थूलहै येक मूर्खहै तो दूसरो पंडितहै येक भोगीहैतो दूसरो जोगीहै येक लेताहै तो दूसरो देताहै येक मरताहै तो दूसरो जनमताहै येक भलोहै तो दूसरो बुरोहै येक मौनीहै तो दूसरो बक्ताहै येक अंधोहै तो दूसरो देखताहै येक पापीहै तो दूसरो

पुन्यवानहै येकउत्तमहै तो दूसरोनीचहै येक कर्ताहै तो दूसरो अकर्ताहै येकचलनाहै तो दूसरो अचलहै येक क्रोधीहै तो दूसरो क्षमावानवीहै येक धर्मीहै तो दूसरो अधर्मीहै कोई किसीसे नगीचहै तो कोई किसीसेभिन्नहै कोई बंध्योहै दूसरो मुक्तहै खूलोहै कोई उलटोहै तो दूसरो कोईसुलटोहै इत्यादिक जैसे येह सूर्यका प्रकासमे सर्वहै तैसैं ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यमे पूर्वोक्त पक्षपानका विवाद परस्परहै अर्थात् पूर्वोक्त पक्षपानहै सो पक्षपानसे अग्नि उष्णतावत् येकनमयिहै बहुरि जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तैसे पूर्वोक्त पक्षपानहै सोस्वसम्यक् ज्ञानमयि सूर्यसे भिन्नहै प्रथम गुरूपदेसात् सर्वचिन्ह हस्तांगुली के बिचमेहै सो अचल बणिकारिके बाद पश्चात् परस्पर चिन्ह हस्तांगुलीसू चहै कहहै मानैहै सो समजणा समजणेके द्वारा अपणा आपमे आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमे संभवो सोतो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवसे तन्मयि शेष न

संभवे सो अनन्मयि स्वस्वभावमे संभवै सो अपणीहै स्वस्वभावमे नसंभवे
सो अपणी कदाचित कोई प्रकारथी नहै नहोयैगी नहुईथी अब अवगाढता
के अर्थ चेतकरो पीतांबर दासजी आदिजेना मुमुक्षु मेरा प्यारा मेरा वचनो
पदेस द्वारा स्वस्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभव प्रापकी प्राप्ती लेणेजोगले
चुकेहोतो इससम्यक ज्ञानदीपका पुस्तगकूं आदिसे अंत पर्यंत् दोय म-
हिनामे येकबेर पढलीया करो यावत् देहादिक भाष तावत्काल पर्यंत येह
मेरा लिषणा सद्भूत व्यवहार गर्भित समजाणा १ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥

अथज्ञानावर्णी कर्मचित्र· ३

१	मति	१	ज्ञान·
२	श्रुति·	२	ज्ञान·
३	अवधि	३	ज्ञान
४	मनपर्य·	४	ज्ञान·
५	केवल·	५	ज्ञान·
६	कुमति·	६	ज्ञान·
७	कुश्रुति·	७	ज्ञान·
८	कुअवधि	८	ज्ञान·

॥ अथज्ञानावर्णिकर्मविवर्णमाह॥ ॥दोहा॥ ज्ञानावर्णिघातके हुवोज्ञानकोज्ञान ॥ धर्मदास क्षुल्लककहै जिनआगमपरमान ॥१॥ अथव चनिका॥ ॥जैसैदेवमूर्तिके आडो मुलमलके वस्त्रको पटलहोय तवदूसराकूं देवमूर्तिस्पष्टदी खैनाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानके येकपटवत् कर्महै सो आडोआजावै तव निरंतर दृष्टीरहितकूं अंतरज्ञान दीखै नाही अथवा जैसे सूर्यके आडो वा दल आज्यावै तव दूजाकूं सूर्य स्पष्टदीखै नाही तदवतही केवलज्ञानम यि सूर्यकेपटलवत कर्म आज्यावै तवज्ञानरहितकूं दीखतानाही जैसै सूर्यके आडा पटवत् अनेक वादल आज्यावै तोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै यादि वादलरहित सूर्य होयतोबी सूर्यहैसो सूर्यहीहै सूर्यके आडा बाद

ल आज्यावै तब सूर्यकूं सूर्यही नमानताहै नसमजताहै नकहताहै
सोबी मिथ्याती बहुरि सूर्यके आडा बादल आज्यावै तब कोई बादल-
हीकूं सूर्य समजताहै मानताहै कहताहै सोबी मिथ्याती देवमूर्तिके-
आडोपट अर सूर्यके आडाबादल येह दोय दृष्टांतके द्वारा होकरि समज-
णा बहुरि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुके प-
टवत् येक कर्म है ज्ञानरहितहै सो आडो आज्यावै तोबी सम्यक्ज्ञानस्व-
भावमयि वस्तुहै सोकी सोहीहै सोहै बहुरि जड अज्ञानमयि पटवत् क-
र्महै जिससै रहितहोय सोबी वो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञान
मयि स्वभाव वस्तू जैसाकी तैसी स्वभावमैंहै अर्थात् जैसै सूर्यके अरअ-
मावास्याकी मध्यरात्रीके परस्पर अत्यंत भेदहै तैसैंही स्वस्वरूप स्वानु-
भवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभावके अरज्ञानावर्णी कर्मके परस्पर अत्यं-
तभेदहै क्यूंकि कर्म अज्ञानहै वो ज्ञानहै कर्म अचेतन वो चेतन कर्म अ-

जीवहै वोजीवहै ज्ञानहैसो कर्मकूं जाणताहै कर्महैसो ज्ञान कूं नहींजा
णताहै ज्ञान अरु कर्म येह वस्तू दोयहै अर दोहूका लक्षलक्षण येकन
हीं जैसे सूर्य प्रकास येकहै तैसे ज्ञान अज्ञान नएकहै नहोवैगा नयेकहु
येथे ज्ञान अज्ञानका मेलहै तो ऐसाहै के जैसा फूल सुगंधका तिलतेल
का दुग्ध घृतकासा मेलहै बहुरि ज्ञान अज्ञानका अंतर भेदहै तो ऐसा
है के जैसा सूर्यका अर अंधकारका अंतरभेदहै तैसा येह अनादीवा
र्ताहै गुरुविना इसका सारको लाभ नही होवे जैसे सूर्यमे प्रकाशगुण
सूर्य स्वभावहीसेहै तैसे जिस वस्तुमे केवल ज्ञानादि ज्ञानसे तन्मयिगु
णहे सो केवल ज्ञानहे अर्थात् जिसमे केवलज्ञानादि गुण नाही सो अ
ज्ञान वस्तुहै अब जिसमे ज्ञानगुणहे औसो केवल ज्ञानहैसो पर अपे-
क्षा अष्टप्रकारहे जैसे सूर्य प्रकास एक तन्मयिहे तैसे केवल ज्ञान वस्तु
अपणा गुणस्वभाव लक्षणकूं त्याग करिके जड अज्ञानमयि वस्तुसे न

येक कवि कदाचित् तन्मयिहुये नैहोवैगा नहोताहै अब हेसज्जन अष्ट प्रकार ज्ञानावर्णि कर्मको बिचारकरै ज्ञानके अर कर्मके तन्मयिताहै केना ही उसका बिचारकरि ॥ ॥ अथदोहा ॥ ॥ प्रकासस्सूरजएकहै जड़ चेतन नहि एक ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै मनमैं धारबिबेक ॥ १ ॥ ॥ इति श्रीज्ञानावर्णि कर्मचित्रयंत्रसहितसमाप्तः ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥
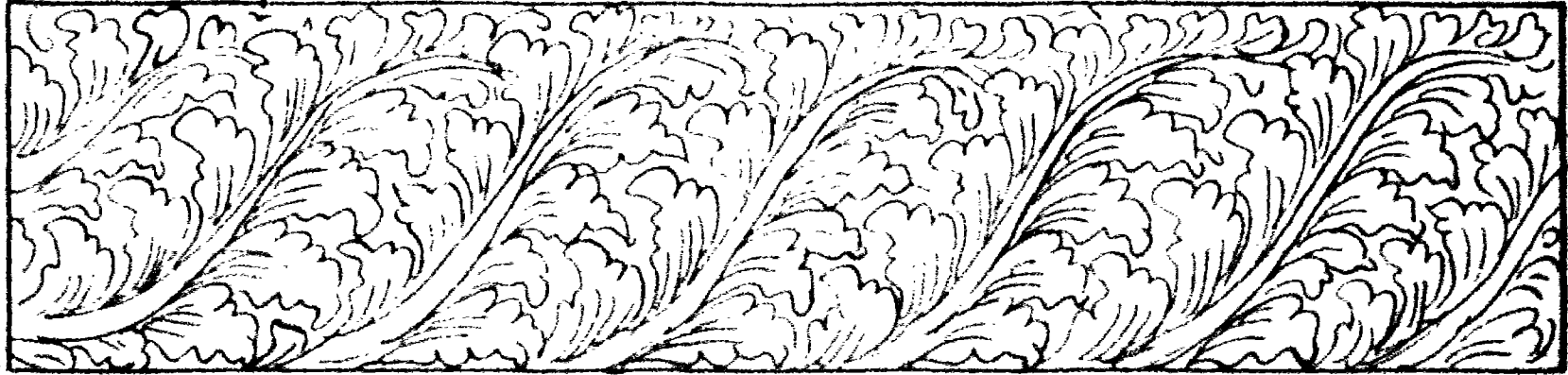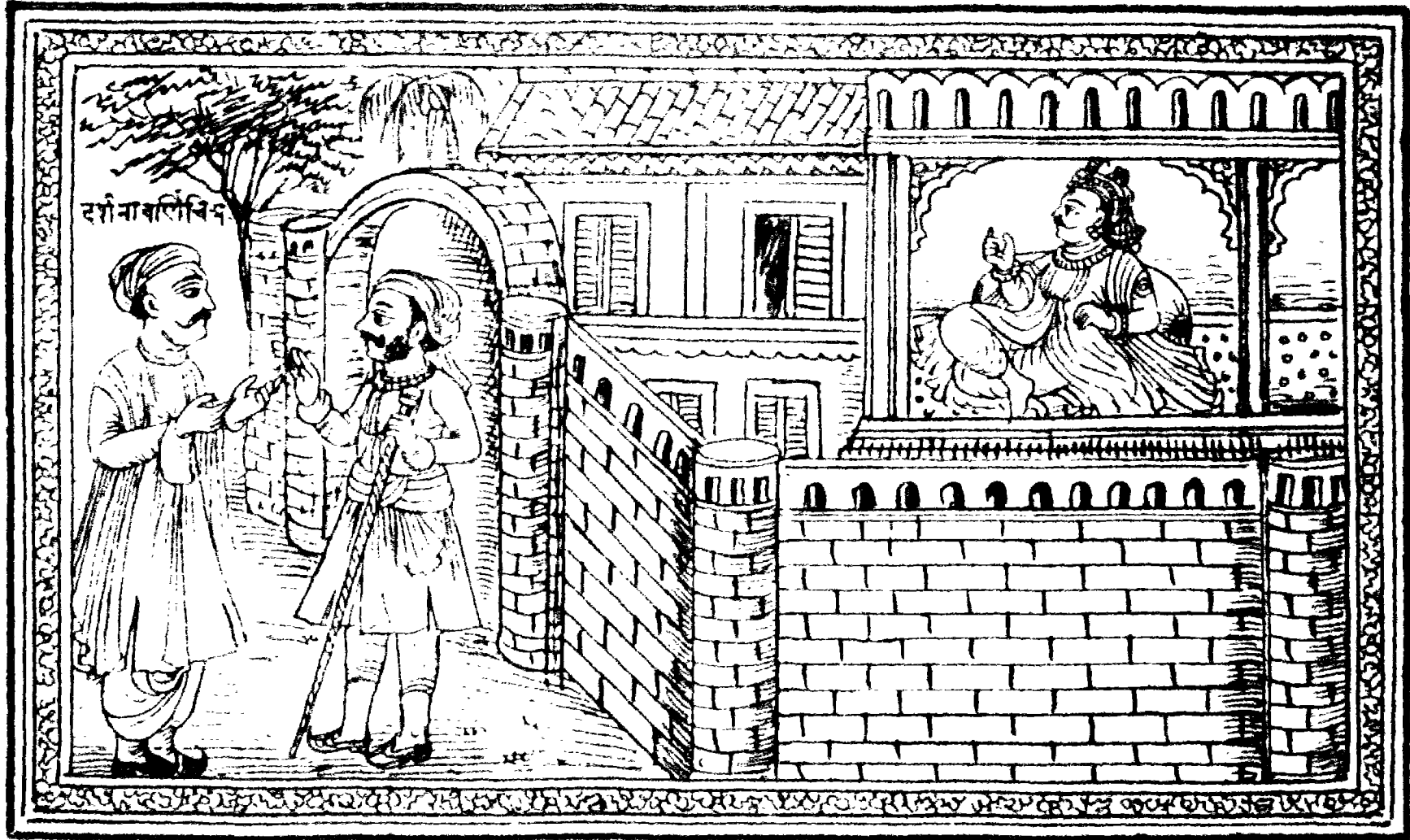
चक्षु	दर्शन
अचक्षु	दर्शन
अवधि	दर्शन
केवल	दर्शन
अथ दर्शनयंत्र	

॥ अथदर्शनावर्णिकर्मप्रारंभः ॥ ॥सोरठा॥ ॥ज्ञानभानुंजिनराज सर्वजगनकेऊपरे॥ धर्मदासकहैसार सोहीसुखकोकाजहै॥१॥ ॥अथवचनिका॥ ॥ जैसेगढमेंजाकरिके देखणेकी सक्ति तो एक पुरुषमें है परंतु द्वारपाल-भीतर नहीं जाणे देताहै तैसेही जैसे सूर्यमें प्रकासहै तैसे जीवमें देखणे जाणणेका गुणस्वभावसेंहीहै परंतु दर्शणावर्णि जानिको द्वारपा-लवत् येक कर्महै सो देखणे नही देताहै इहां असा अनुभव लेणा के द्वारपाल उनकूं देखणेके अर्थ नहींजाणे देताहै अर कहताहैके गड के भीतर क्या देखणेकूं जाताहै उत्तर जिसमें देखणे जाणवे का-गुणहै उसीकूं देखणेकूं भीतर जाताहूं द्वारपाल रोकताहै कहताहैके मतिजावो जैसा तेरेमें देखणे जाणनेका गुणहै तैसाही उसमें है सूर्यसूर्यकूं देखणेका उद्योग इच्छा कर्नाहै सो वृथाहै जैसे एक अग्नि भीतर रा

खमे दबीहै अर दूसरी अग्नि व्यक्तहै तैसैही तेरे अर तूं जिसकूं भीतर देखणेकूं जाताहै उसके अंतर समजणा राखकी अपेक्षावत् भेदसम-जणा स्वस्वरूपमे अभेद जैसो भीतरगढमैहै तैसोही तूंहै॥ ॥प्रश्न॥ जैसे जैसो भीतरगढमैहै तैसाही मै केसोहूं॥ ॥अब द्वारपालदृष्टांतद्वा राउत्तरदेताहै॥ ॥ स्फणि तूं इस द्वार भवनमे तूं तेरा स्वमुखसे ऊंचा स्वर-सें अलापकरिकें तूंही तब द्वारपालके कहे प्रमाण ऐसैही ऊंचा स्वरसे अ-वाज करिके तूंही तब प्रतिअवाज वसीही आई तब वो निश्चय समज ल-हीके जिसमे देखणेका गुण भीतरमैहै तैसाही देखणेका गुण मेरेमें है अ-बमे किसकूं देखणेके अर्थ भीतर गढमे जाऊं अर्थात् मेरेमे देखणेजा-णनेका गुण स्वभावहीसें है अबमे किसकूं देखूं अर किसकूं नदेखूं॥ दोहा॥ ॥दर्शणावर्णीकर्मको प्रगटदिखायोभेद॥ तोबीगुरुबिनना-मिले बहुतकरो तुमखेद॥२॥ ॥अथ वचनिका॥ ॥जैसे सूर्यमे प्रका

सगुणहै जैसै जिस बस्तुमें देरवणेका गुणहै सोही बस्तु दर्शणहै उसदर्शे
णका परम्प्रपेक्षा ४ भेदहै सोबी सम्यक् दर्शणतो स्वभावकूं उलंघक
रिके चक्षो चक्ष होना नाहीं जैसे जन्मांध स्वपरशरीरकूं नही देरवतहै
नहींजाणतहै तैसैही अज्ञान बस्तुहै सोस्वपरकूं नहीजाणतहै नहीदेरव-
तहै बहुरिजेसै सडकके रस्ताके येकतरफ येकद्वारको मकान स्थानहै ता
केभीतर येकस्थान अर्थात् मकानके भीतर मकान तहां अंधारामें येकपु
रुष बैठेहु वो उस मकानके द्वारा होकारिके बाहिर रस्तामें आतेहै जातेहै ता-
कूंबी जाणतहै अर स्वआपकूं बीजाणतहै तैसैही दर्शणहैसो स्वपरकूं
देरवतहै जैसे सूर्जसैं प्रकास भिन्न नही तैसे दर्शणसे देरवणा जाणना क-
दापी भिन्ननही १ सर्वकूं देरवताहैसो दर्शनहै १ इतिदर्शनावर्णि
कर्मसमाप्तः ॥ ॥श्री॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥

वेद्नीकर्मचित्र
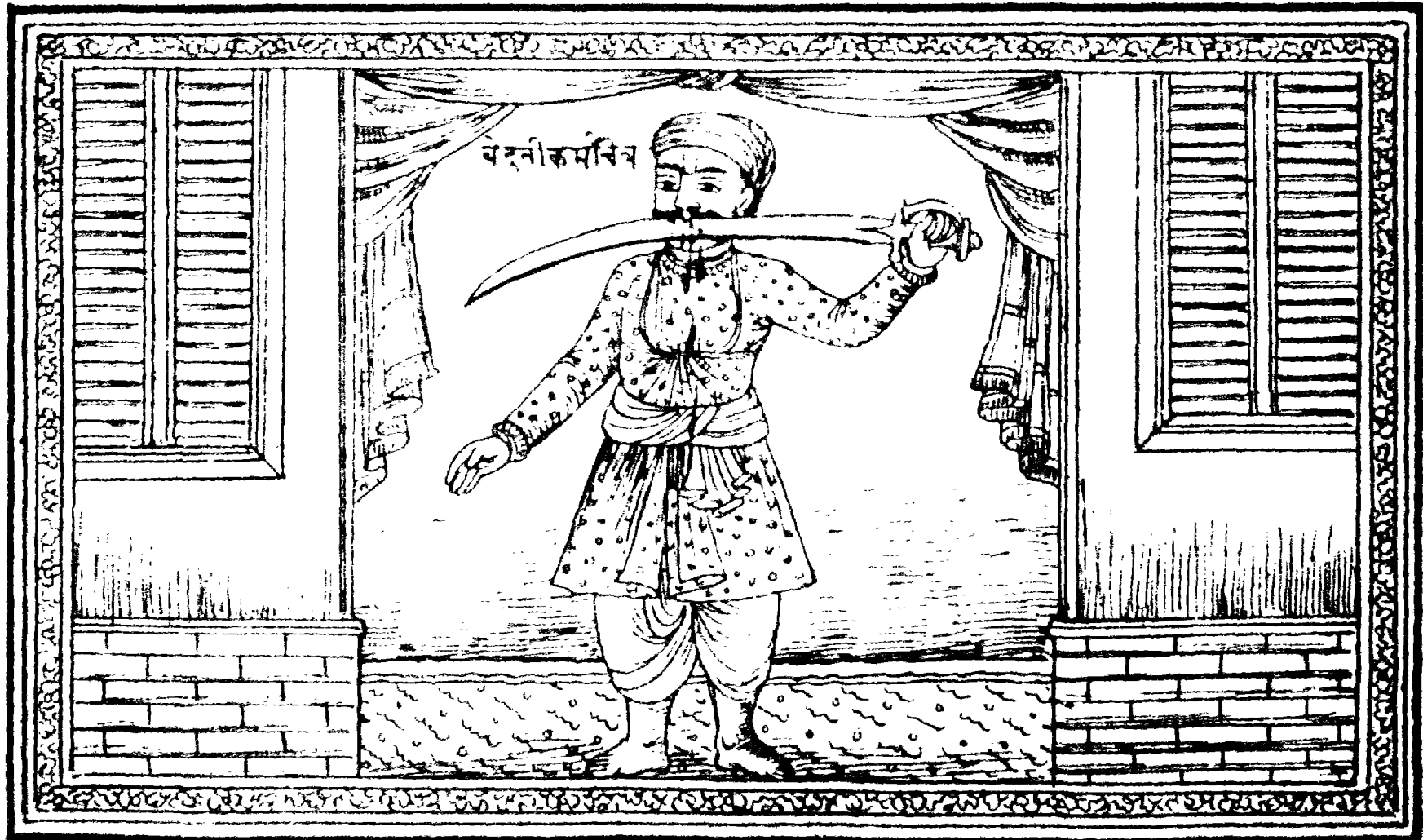
॥ अथ बेदनीकर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ विषय सुखसो दुःखहै नि
श्चय नय प्रमाण ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै समजदेख मतिमान ॥ १ ॥ ॥
अथ बचनिका ॥ सहत लपेटी षड्ग धाराकूं पुरुष जिव्हासैं चाटत है सो
कुछतो स्वाद मिष्ट भाष होतहै विशेष जिव्हा खंडन दुःख भाष होताहै तै
सेही बेदनीकर्म दोप्रकार साता असाताहै इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक् ज्ञानमयी स्वभाव वस्तुको अनुभव ऐसै लेणा जैसै सूर्य प्रकाशमें
वा आकाशमें कोहू सुख्खी कोहू दुःखीहै ताका सुख वा दुःख आकाशसे वा
सूर्य अर सूर्यका प्रकाशसैं येक नन्मात्रि होकरिकै लागने नाहीं तैसैही संसा
रका सुख दुःख साता असाता कर्म उस स्वस्वरूपी स्वानुभव गम्य सम्यक्
ज्ञान सूर्यकूं पोंहोंचनानाहीं ज्ञानमयि सूर्यकूं लागन नाहीं अर्थात् सम्य
क् ज्ञानमयि सूर्यके अर येह साता असाता बेदनी कर्मके परस्पर सूर्य अं
धकार कासा अंतरभेद परस्परहीके स्वभावहीसैं भेदहै दोहूहीके सूर्यप्र

काशवन् येकन तन्मयि ताहै नहोवैगी नहुईर्थी स्यात् जैसै दर्पणमे ज-
लाग्निकी प्रतिच्छाया भाष होतीहै तैसैही स्यात् केवल ज्ञानमयी दर्पण-
मै येह साता असाता बेदनी कर्मकी भाव बासना भाष होताहै तोबी सा-
ता असाता वेदनी कर्मसे वो केवल ज्ञानमयि दर्पण तन्मयि नहुवो नहोवै
गो नहै स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको अभावनस
मजणा नमानणा नकहणा ॥ ॥सवैय्या ३१सा ॥ ॥जैसै कोहू चंडा
लीजुगल पुत्र जणेयेक दीयो ब्राह्मणकूं येक राखलियोहै ब्राह्मणके गयो
सोतो मदिरामांसत्यागकीया ॥ ॥वचनिका॥ ॥ताकोतोउत्तम ब्रा
ह्मणपणाको अभिमानआयो बहुरि दूसरो चांडालनीके घरहीमैरह्यो
ताकूं मदिरा मांसादिकके ग्रहण निमित्तसैहीणतापणासै वो आपकूंनीच-
माननो हुवो इहां विचार करिके देखियेतो यह दोहूही उत्तम अरहीण येक
चांडालनीके पेटमैसै उत्पन्नहुये तैसैही येक कर्म खेतमैसै साता असाताबे

दनी कर्मका दोयपुत्र समजणा निश्चय द्रष्टी मैद ग्यो सुनार सुवर्णका
आभूषण करै तोबी सुनारहै सो सुनारहीहै बहुरि स्यात् वोहीसुनार ता
म्रलोहका आभूषणबनावै तोबी जैसाको तैसो सुनार है सो सुनार होहै
बहुरिजैसै सुनार शुभाशुभआभूषणादिककर्म कर्ताहै सोशुभाशुभआ
भूषणादिककर्मसै तन्मयिहो करिकै नही कर्ता है तैसैही सम्यक् द्रष्टी शु
भाशुभकर्म कर्ताहै परन्तु शुभाशुभकर्मसै तन्मयिहोय करिकै नही कर्ता
है वास्तै गुरुपदेशात् सम्यक् द्रष्टी होणा जोग्यहै। दोहा ॥एकबेदनीक
र्मका भेददोयपरकार॥ धर्मदासक्षुल्लककहै सातासातबिचार॥१॥ ॥
बचनिका॥ ॥हेजीव येह साता असाता बेदनीकर्म तेराहै तबतो तूंही
अधिष्टाताहै तथा येह साता असाता बेदनी कर्म तेरानाहीं तो फेर क्यांफि
करहै तूंनकिसीका कोईन तुमारा तेरा तूंहीहै निराधारा॥ ॥इतिश्रीबेद
नीकर्मचित्रसहित समाप्ताः॥ ॥ ॥ ॥ ॥

मोहनीकर्म

॥ अथमोहनीकर्मप्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ परस्वभावपररूपकूं मानै अपनोआप ॥ येविकल्पसबछोडके नयेसिद्धगुणथाप ॥ २ ॥ ॥ अथवचनिका ॥ ॥ जैसैंमदिराकेपीणेवालो आपपरकूं जाणनो नाहीं· मदिराबसात यद्वा तद्वा वचन बोलनाहै तैसैंही मोहनीकर्मबसात् जीव आपणा आपमैं आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि- स्वभावकूं नजाणनहै अरपरकूं ऐसा मानैहै येह तन मन धन वचनादि कहै सोही मैंहूं अर्थात येही मोहहै स्मरणां निश्चय मोहका वचन कूंकहता हूं येह तनमन धन वचनादिकहै सोहीमैंहूं येकतो येहविकल्प बहुरि दूसरो येह विकल्पहैकें येह तन मन धन वचनादिक हैसो मैनाहीं अर्थात् येहैसोही मैंहूं येहसो मैंनाहीं येह दोहूही विकल्पहै सोही निश्चय मोहहै इस दोहू विकल्पकूं अर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुकूं येक तन्मयि अग्नी उष्णतावत् सूर्य प्रकाशवत् मा-

ननाहै जाणनाहै कहनाहै सो मोहै। मिथ्याद्रष्टीहै इससै भिन्नसो सम्यक्
द्रष्टी मै तूं येह वह येह ४ च्यार अर इन च्यारका जेना खेल बिलासहै सो स
र्व द्रव्यकर्म भाव कर्मनो कर्मसै तन्मयि येकमयि समजणा होय होय मो
हनी कर्म बसात् जिसकूं भला माननाहै उसीहीकूं बुरा माननाहै जिस-
कूं इष्ट माननाहै उसीकूं अनिष्ट माननाहै मोहीजीवकूं येह निश्चय नाही
के जिसमें ज्ञानगुणहै सोही मैहूं यदि निश्चयहै नो फफन कहणेकाहै
स्वस्वरूप स्वानुभव नाही क्यूंके तनमनधन बचन आदिक अजीव वस्तु
के अर ज्ञानगुणमई जीवके सूर्य अंधकार कासा अंतर भेद परस्पर स्वभा
वहीसैहै येह भेदविज्ञान जिसके अंतः करणमे गुरुपदेशात् आकाशवत्
अचल निष्टैहै सो आदिलकहै विचक्षण पुरुष सदामे एकहूं अपणैरस
मे भऱ्या आपणी टकहूं मोह करम ममनाही नाही भ्रमकूपहै शुद्ध चेतना
सिंधु हमारो रूपहै वचनिका जैसैसूर्यमै प्रकाशगुणहै तैसे है सज्जन

हे प्रेमी तेरेमे ज्ञानगुणहे तूं निश्चय समज तूं ज्ञानहै अरयेह मोहादिक अज्ञानहे भावार्थ ज्ञान अज्ञानकूं सूर्य प्रकाशवत् एकही मानताहे समजताहे कहताहे उस मिथ्या दृष्टीकूं ब्रह्मज्ञान को उपदेस देणा वृथाहे॥ प्रश्न॥ ॥ मोह किसकूं कहतेहे ॥ ॥उत्तर॥ ॥ नदीके तट येकपुरुष बहताहुवा पाणीकूं येकाग्रह मन करिकै देखत देखत येह समजीके हमभी वहे जातहे इसीको नाम मोहहे तथा दश पुरुष परस्पर गणिना करिकै नदीके पार उतरणेकी इच्छा करी येक पुरुष गणिनाकरिके अपणाघरसे दश आयेथे नवही रहगये आपकूं दशमूं नसमजताहे नमानताहे नकहताहे इसीको नाम मोहहे अर्थात् पुद्गलादिककूं अर आप सम्यक् ज्ञान मयिहे ताकूं येकही समजनाहे सोही मोहहे ॥ इतिश्री मोहनीकर्म चित्रसहित समाप्तः ॥ ॥७॥ ॥७
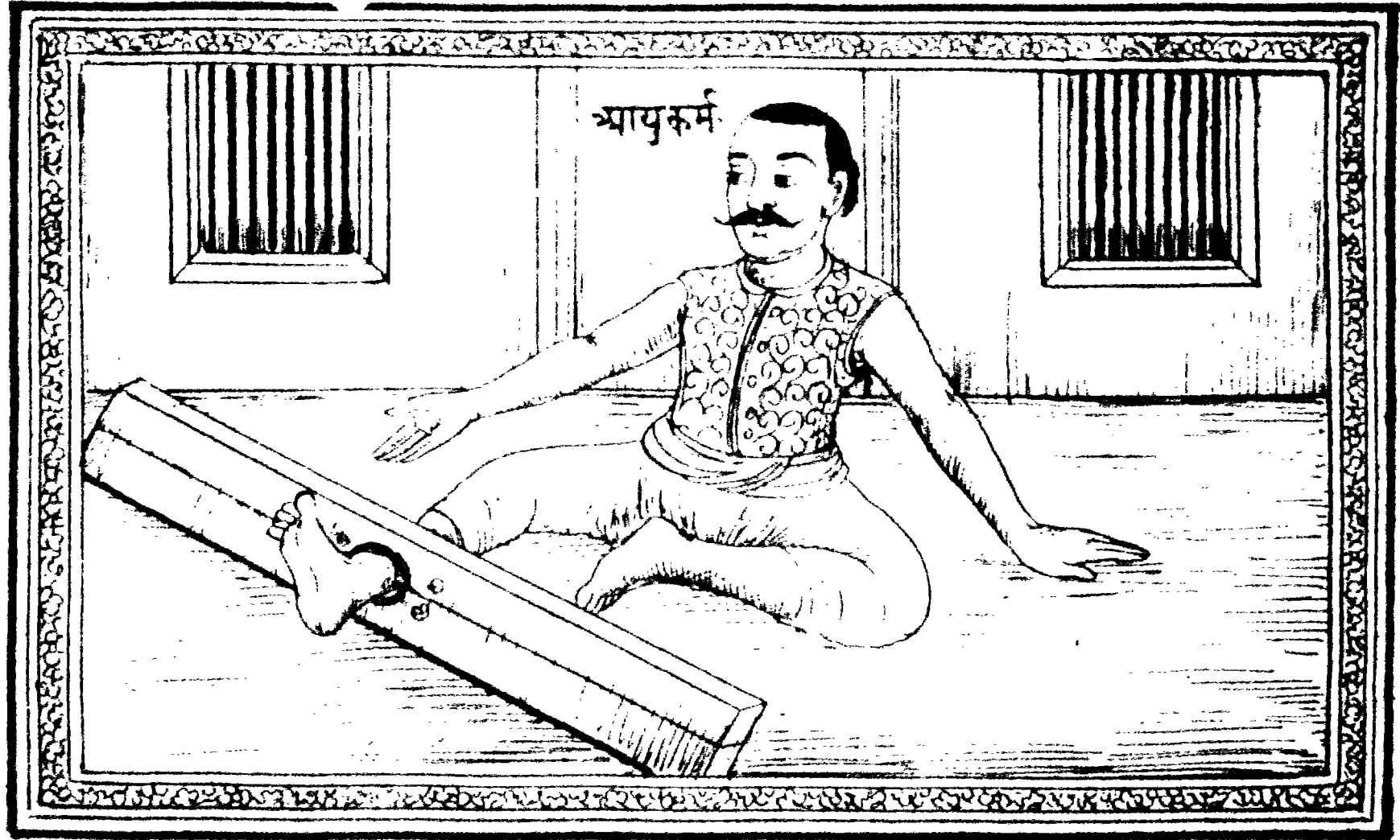
आयुकर्म

आयुकर्मयंत्रम·	
मनुष्य·	आयु·
देवा	आयु
तिर्यंच	आयु
नारकी	आयु·

॥ अथआयुकर्मप्रारंभः॥ ॥चौपाई॥ ॥खंडनमंडन· आयुनाश भयेसिद्धपरमानमपाश॥ अचलायूसमअ· चलअभेद लीनभयेनिजरूपअखेद॥१॥ ॥वचनिका जैसे कोई तस्कर वेडी खोडासे बंध्योहै तैसेही जीवआ युकर्मवसात् मनुष्यायू देवायु नर्कायु तिर्यंचायूमे जहांतहां बंधजातो है आयू पूर्ण हुयेविना एकायूकूं छोडकरिकै दूसरी आयूमे नहीं जा य अब अचलायूके अर्थ स्वस्वरूप स्वानुभव सम्यक् ज्ञानमयि स्वभा व वस्तूको स्वानुभव ऐसें लेणो जैसे घटके भीतर घटाकाश बंध्योहै मठ केभीतर मठाकाश बंध्योहै इत्यादि तैसेही देहरूपी घटमे आकाशव· त् एक ज्ञान गुणमयि जीव बंध्योहै विचारकरो जैसे घटकेभीतर आका शहै सोमहाकाशसै अलग नाहीं तैसेही देही रूपी घटके भीतर ज्ञानहै सो केवल ज्ञानसे भिन्ननाही है ज्ञान तूतेरेकूं केवलज्ञानसे भिन्नमनिस

मजो मतिमानें क्यूंकें केवलज्ञानसै भिन्न वस्तुहै सोतो अज्ञान वस्तुहै हे
सज्जन तूं ज्ञान वस्तु मूलहीसें स्वभावहीसेंहै फेर तेरेकूं तूं अज्ञान कैसें
मानताहै हेज्ञान व्यवहार नयात् तु मनुष्यायु देवायु नरकायु तिर्यंचा
युमें बंध्योहै निश्चय नयात् है केवल ज्ञान स्वरूपी स्फणि पुद्गल मूर्तिआ
कार वस्तुहै तूं केवल ज्ञानमयि निराकार अमूर्ति वस्तु स्वभावहीसेंहै
बडे आश्चर्यकी वार्ताहै मूर्ति आकार वस्तुहै सो अमूर्ति निराकार वस्तु
ज्ञानमयिकूं कैसें बंधमें डालतहै असंभवति वार्ता कैसें संभवे हेज्ञान-
भरममें मतिदृष्टे देखणे जाणवेकागुण तेरेसै तन्मयिहै तूं बंधकूं अर
बध्याकूं अरबंधणेकाद्रव्य क्षेत्र कालभाव आदिककूं सहजही जाणत
देखतहै जैसे सूर्यका प्रकाश सर्व पृथ्वीके ऊपर सहजहीसेंहै तैसे हेज्ञा
न तूं बंध्या बंधकुं सहजही जाणतहै व्यवहार नय वसात् तूं बंध्योहै सो
व्यवहार ऐसाहै वो घृतकुंभ वाऊरवलीसडकचलतीहै रस्ता लूटतेहै अ

मी बलतीहै येह पांच दृष्टांन द्वारा सर्व व्यवहार कूं समजो निश्चय व्यवहा
रसे सर्वथा प्रकार भिन्नहै सोही परमात्मा सिद्ध परमेष्ठी ज्ञानघनहै जैसे
देखो सूर्य के भीतर अंधकार नाहीं तैसेही सम्यक् ज्ञान स्वभावमे शुभा
शुभ आयु नाही मनुष्यायु देवायु तिर्यंचायु नर्कायु येह ४ च्यार आयु
है ताकुं केवल ज्ञान जाणताहै अचल अखंडायु पंचमायुहै कुछ ओर
समजो जैसे किसीके पांवमें लोहाकी बेडीसे बंध्योहै सोबी दुःखीहै
बहुरि किसीके पांवमे सुवर्णकी बेडीसे बंध्योहै सोबी दुःखी तैसेही दा
न पूजा व्रतशील जप तपादिक शुभभाव शुभक्रिया शुभकर्मादि शुभबं
धहै सोबी सुवर्णकी बेडीवत् दुःखको कारणहै बहुरि पाप अपराध काम कु
शीलादिक अशुभभाव अशुभक्रिया अशुभकर्मादि अशुभबंधहै सोबीलो·
हाकी बेडीवत् दुःखको कारणहै इस शुभाशुभसे सर्वथा प्रकार भिन्न हो
णो निश्चयहीहै सो सतगुरुका उपदेशविना प्राप्तकी प्राप्ति होतीनाहीहै

॥ ॥प्रश्न॥ ॥ मातकीअप्रामिसंभवहै ॥ ॥उत्तर॥ ॥ दधि-
मैसै घृत निकस्ने पश्चात् दधिमैनही मिलताहै ऐंसाहीसमजणा ॥ १ ॥
॥ ॥इतिश्रीआयुकर्मविवर्णचित्रसहितसमाप्त: ॥ श्रीजिनाय० ॥
॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥ श्री ॥ ॥
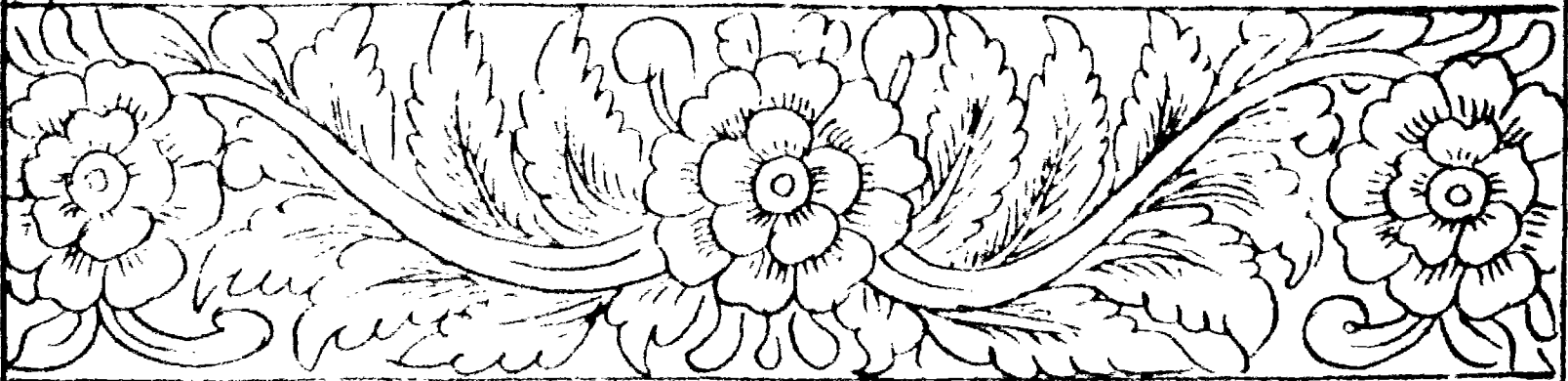
नामकर्म

॥ अथनामकर्म विवर्णप्रारंभः ॥ ॥चौपाई॥ ॥ तुमरोनामनहीहैस्वामी॥ नामकरमतुमसैंअलगामी॥ शब्दव्यवहारमैनामअनंता॥ व्यक्तरूपश्रीजिनअरिहंता॥१॥ ॥दोहा॥ ॥ जिनपदनहींसरीरको जिनपदचेतनमांहि॥ जिनवर्णनकुछओरहै येहुजिनवर्णननाहि॥२॥ ॥अथ वचनिकाप्रारंभ॥ ॥जैसें चित्रकार नानाप्रकारका आकारका नाम लिखताहै करताहै सोजेता काला पीला लाल हर्या धोला रंगका चित्र आकारदीखताहै सो पुद्गलकाहै सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूको नामक्या इसीवस्तूकोनाम व्यवहार नयात् जीवनामहै सोभी परसंगात् अनेकनामहै जैसें माटीकाघटकूं घृतसंगात् व्यवहारी जन कहतेहै सो घृतकुंभल्यावो अथवासमुदायवस्तुकोनाम फोजहै तथा जेता कुछ वचनसै कहणेमे आवैहै सोसर्वनामहै नाम देसमे एकहीनामहै बहुरि इहां स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव ऐसे लेणा जैसें सूर्यमे प्रकाशादिक

गुण सूर्य स्वभावहीसैहै तैसै कोई वस्तु ऐसीहै जिसमे स्वपरकूं देखणा जाणना येहगुण स्वभावहीसैहै विचार करो सर्वनाम अनामकूं देखता जाणताहै ताकोनाम क्याहै अथवा सर्व नाम अनामकूं कहताहै ताकोनाम क्याहै वचनआरमौन येहबी दोयनामहै अथवा एकही वस्तु अपणा स्वभाव गुणमयि स्वस्वभावमेजे सैहै तैसा अचल निष्ठहै उसीसे तन्मायि गुनवा प्रगट अनेक नाम निष्टैते जैसे सुवर्ण अपणा स्वभाव गुणादिक अपणे आपमे लीयेहुये अचलानिष्टहै ताहीमे कड़ा मुंदड़ा असरफी आदि आभूषणादिक अनेक नाम सुवर्णमे तन्मायिहै नामहैसो बी अपेक्षासे है जैसे पिताकी अपेक्षा पुत्रनामहै तैसैही पुत्रअपेक्षा पितानामहै तथा तैसैही जीवकी अपेक्षा अजीव नामहै बहुरि अजीवकी अपेक्षा जीव नाम है ऐसैही ज्ञानकी अपेक्षा अज्ञानहै बहुरि अज्ञानकी अपेक्षा ज्ञान नामहै हाहाहा धन्यधन्यधन्य सर्वपक्षापक्षरहित ज्ञानगुणसंपन्न स्वस्वरूपस्वा

नुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु स्वभाव होसे जैसा को तैसी जै-
सीहै तैसीहै ताकूं अंतर दृष्टी वा सम्यक्ज्ञान दृष्टीसे देखिये तो ननामहै न
अनामहै अर्थात् वस्तु अपणा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य ज्ञानस्वभावमें जै-
सीहै तैसीहै नाम कहो अथवा माति कहो नाम और जन्म मरण येह पांच
प्रकारका शरीरहै ताकाहै पद्मनंदी पचीसी ग्रंथमें पद्मनंदिमुनी कहगये॥ ॥दोहा॥ ॥नामकर्मकी भावना भावै रूरति संभाल॥ धर्मदास
क्षुलक कहै मुक्तिहोय ततकाल॥१॥ अपणो आपो देखके होय आपको आ
प॥ होयनिचिंतनिश्चयोरहै किसका करणा जाप॥२॥ नामकर्मकर्तारको
नामनहीं रूरणसार॥ जो कदापियो नामहै ताको कर्ता निर्धार॥३॥ ॥
इतिश्रीनामकर्मबिवर्णचित्रसहितसमाप्ता॥ ॥५॥ ॥५॥

गोत्रकर्म

॥अथगोत्रकर्मप्रारंभः॥ ॥दोहा॥ ॥ गोत्रादिकसबकर्मकूं त्याग भयेजिनराज॥धर्मदासक्षुल्लककरै वंदनस्वकेकाज॥१॥ ॥वचनिका॥ ॥जैसाकुंभार छोटामोटा माटीका बर्तन कर्ताहै तैसे स्वस्वरूपज्ञानरहित कोईजीवहै सोनीचगोत्र ऊंचगोत्र कर्मको कर्ताहै याहीतै नीचगोत्रऊंचगोत्रहै इहां समजणा चाहिये माता पक्षकूं तोजाति कहतहै बहुरि पिता पक्षकूं कुल कहतेहै जातिगोत्र येह दोयभेद कहणे मात्रहै अभेद वस्तुमे येह दोयभेद जल तरंग वत् तन्मयिहै जैसे आम्रवृक्षके आम्रही लगताहै बिचारकरो आम्रकीजातिबी आम्रहीहै अरआम्रका कुलहैसो बी आम्रहीहै जैसे जलकीजाति मिश्रीफिटकडीलूण नोसादर आदिहै क्यूंके इनकूं पाणीमे मिलावोतो येह मिलजातेहै अर्थात् मिलज्यावेसो निश्चय जाति तैसेही नीचगोत्र ऊंच गोत्रकोही नीचऊंचगोत्र है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुको स्वानुभव

ऐसैलेणो जैसे कूंभार माटीका बर्नन छोटा मोटा विबधि प्रकारका बणावै
हे कर्ताहै परंतु माटीचक्रदंड छोटा मोटा विवधि प्रकारका बर्तन भांडासै
तन्मयि होय नही कर्ताहै क्यूंके कुंभकार विचार चिंतवन नही करे तोबी·
कुंभकारके अंतः करणमे अचलनिश्चय येहहै के मै माटीनही अरमाटी
का छोटामोटा बर्तनादिक कर्महै सोवी मै नाही अर दंडचक्रादिक कर्म
हैसोवीमै नाहीं अरयेह मेरा सरीर हाडमांसचर्मादिक मयिहै सोवीमे
नाहीं अर तनमन धन बचनादिक हैसो भी मैनाहीं इत्यादिक कुंभकारके
अंतःकरणमे अचलहै तोइहां निश्चय स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नस्वभावमे येही भाव भाव मालुम होताहै के जैसे माटीको कार्य घट जै·
सैमाटी ताके बाहिर मांहि जल फेन तरंग बुदबुदा ऊपजताहै सो जलसे जू
देजुदेनाही ऐसैजो जाकोहै कार्य कारणरूप छानो नाहि तैसेही जिसवस्त
को कर्म कारण कार्य कर्ता जिसका जोहिहै अर्थात् जैसे व्यवहारदृष्टीमे·

देखिये तो माटीका वर्तन कुंभकार कर्ता है बहुरि निश्चय दृष्टीमें परमा र्थ सत्यार्थ दृष्टीमें देखिये तो कुंभकारके अर माटीके वर्तन अर माटी च क दंडादिकके एकमई पणो नाहीं वास्ते माटीका वर्तन कर्मकी करणेवा ली माटीहीहै तैसेही व्यवहार द्वारा नीचगोत्र ऊंचगोत्र जीव करैहै निश्च य स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान दृष्टी द्वारा देखियेतो ज्ञानमयि जीव नीच गोत्र ऊंचगोत्र नकरैहै अर्थात् गोत्रकर्म कोकरणेवालो गोत्र कर्मही कर्म की विधि निषेध कर्मको कर्मही कर्ताहै निश्चय सम्यक् ज्ञान दृष्टीमे देख णा ज्ञानगुणमई वस्तु अमूर्तिहै अर कर्म मूर्तिहै कृत्यमहै जैसे सूर्यका अर अंधराका नतत्स्वरूप मेल नाहीं तैसेही कर्मको अर केवल ज्ञानको मेल नाहीं ॥ ॥ इतिश्रीगोत्रकर्म वर्णन चित्रसहित समाप्ता ॥ ॥
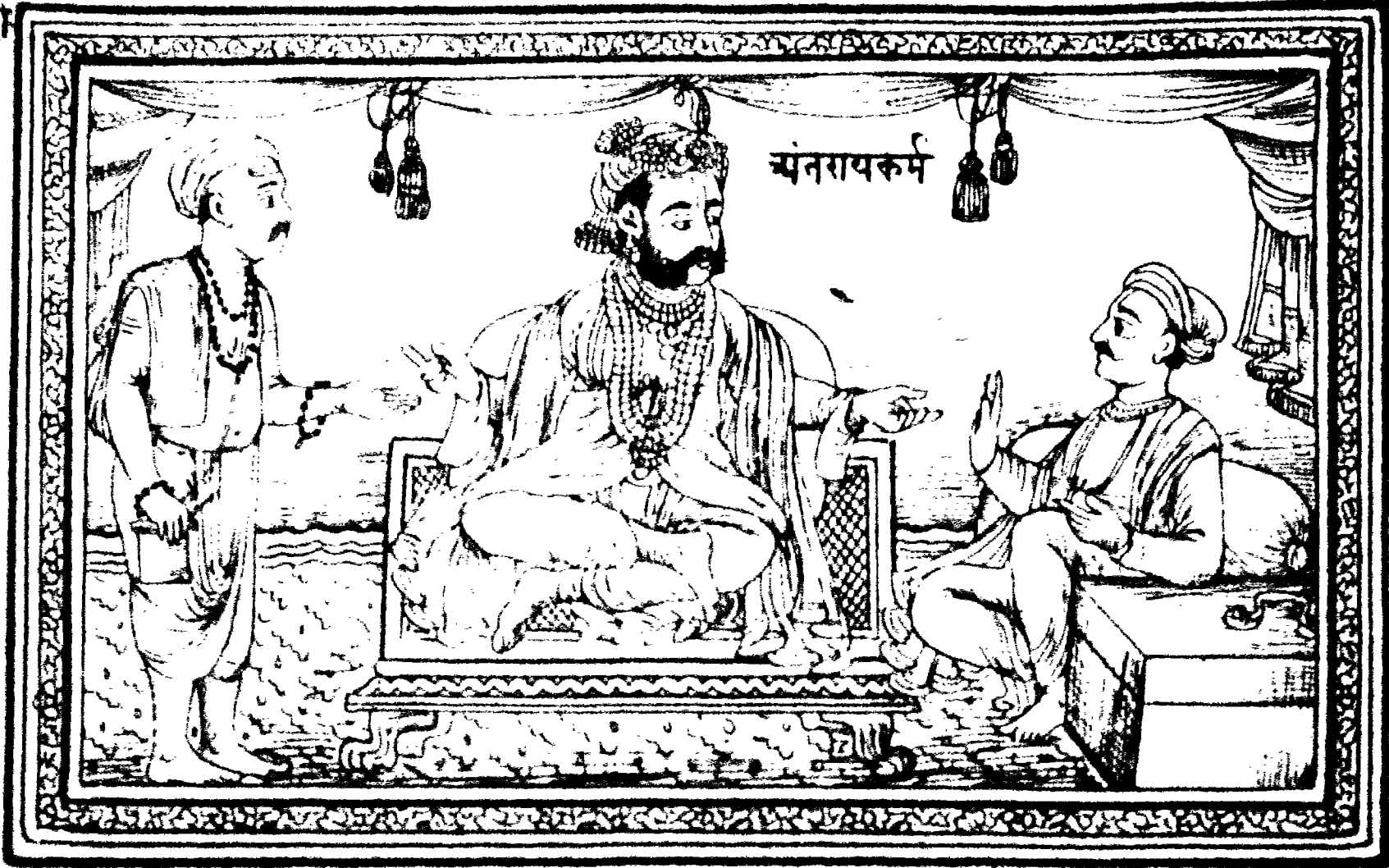
ञ्मंतरायकर्म

अथ अंतरायकर्मयंत्रम्	
दान	अंतराय·
लाभ·	अंतराय·
भोग	अंतराय·
उपभोग·	अंतराय·
वीर्य·	अंतराय·

॥ अथ अंतरायकर्म प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ त्याग ग्रहणसें भिन्न है सदा सुखी भगवान् ॥ धर्मदास· क्षुल्लक कहै स्वानुभव परमान ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ जैसे राजा भंडारीकूं कही के इसकूं एक सहस्र १००० रुपीया दे परंतु भंडारी नहीं देता है तैसेही भीतर अंतह करणमे मन राय नो हुकम करता है के सर्व माया ममता छोड देउं परंतु भंडारीवत् अंतरायकर्म नहीं छोडणे देता है इहां स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावको स्वानुभव इस प्रमाणसें लेणा मैं केहारा जैसे सूर्यमें अंधारा अलग है तैसे मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवसम्यक् ज्ञानमयी स्वभावसें येह तनमनधन बचन आदिक पापपुन्य जगत संसार अलग है तबतो इनकूं मैं क्या त्यागूं अर क्या ग्रहण करूं यदि जैसै सूर्यसें प्रकाश अलग नाहीं तदवत् मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्य

क ज्ञानमयि स्वभावसैं येह तन मन धन वचनादिक पाप पुन्य जगत संसा
र अलग नाहीं तोबी क्या त्यागूं क्या ग्रहण करूं अथवा जैसे सूर्य सूर्य
कूं कैसे ग्रहण करै तथा सूर्य अंधकारकूं कैसा ग्रहण करै अर सूर्य अं
धकारकूं कैसे त्यागै तैसैंही मैं मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावकूं कैसे त्यागूं
अर ग्रहण कैसे करूं बहुरि मेरा केवल ज्ञानमयी स्वभावसैं सर्वथा प्रका
र भिन्नहै वर्जितहै त्याजहीहै उसकूं कैसे त्यागूं अर उसकूं ग्रहणबी कैं
से करूं राजा भंडारीकूं कहताहै के इसकूं १००० सहस्र रुपिया दे परंतु
येह नहीं कहता के मै राजाहूं मेरेहीकूं उठाकरिके इनकूं दे दे अर्थात् रा-
जा परवस्तूकूं देणे का हुकम कर्ताहै परंतु अपणा स्वभाव लक्षण देणे-
का हुकुम नहीं कर्ताहै तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि
स्वभाव वस्तु अपणा वस्तुत्वकूं नै किसकूं देताहै अर नै किससे स्वस्वरूप
स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयी वस्तुत्व स्वभावकूं लेताहै भावार्थ स्वस्व-

रूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावमै पुद्गलादिक जड अज्ञानम
यि वस्तुका व्यवहार लेणा देणा नसंभवै जैसै सूर्यमै प्रकाशगुण सूर्यस्व
भावहीसै है तैसै जिस वस्तूमै देखणे जाणनेकागुण स्वभावहीसै है
सो वस्तू द्रव्य कर्म भाव कर्म नो कर्मकूं केवल जाणैहीहै द्रव्य कर्म भाव क
र्म नोकर्म कूं कर्त्ता नाही क्यूंके ज्ञानाज्ञानके परस्पर तम प्रकाशवत् तो अं
तर भेदहै बहुरि ज्ञानाज्ञानके परस्पर जल कमलवत् मेलहै बिचार करो ये
ह द्रव्य कर्म भाव कर्म नो कर्म है सो स्वभावहीमे अज्ञान वस्तुका भेदहै नाक
र्त्ता केवल ज्ञानस्वभावमै कोणहै बहुरि येह ज्ञानावर्णि आदि अष्टकर्म
है ते सर्वही पुद्गलद्रव्यके परिणामहै तिनकूं केवल ज्ञानमयि आत्मा ना
ही करैहै जो जानहै सो जानहीहै निश्चय करि ज्ञानावर्णिरूप परिणामहै सो
जैसै गोरसमै व्यापक दही दुग्ध मिष्ट खाटा परिणामहै तैसै पुद्गल द्रव्यमै व्या
पपणा करिके होतेसंते पुद्गल द्रव्यहीके परिणामहै तिनकूं जैसे गोरसके नि

कटषेगपुरुष निस्के परिणामकुं देखैहै जानहै तैसेही आत्मा ज्ञानमयि है सो तीनि पुद्गलके परिणामनिका ज्ञाता द्रष्टाहै अष्टकर्मादिकका कर्ता नाही तो क्याहै जैसे गोरसके निकट बैठा पुरुष निस्कूं देखैहै निस देखनरूप अपने परिणामनें व्यापपणेरूप होना संताहै निसकूं व्याप्य करि देखैहीहै तैसेही पुद्गल परिणामहै निमित्त जाकूं ऐसा अपना ज्ञान ताकूं आपनै व्याप्यपणा करि होता ताकूं व्याप्य करि जानैहीहै ऐसै ज्ञानी ज्ञानहीका कर्ताहै अर्थात् ज्ञानीहै सो अज्ञानमयि वस्तुसे तन्मयि होय करिके कदाचित् कोई प्रकार बी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्म आदि अज्ञानमयि कर्मको कर्ता नाहीं किं बहुना बहुत क्या कहूं ज्ञान अज्ञान सूर्य प्रकाश वत् नै एक हुवो नैहै नै होवैगो ॥ ॥ इति अंतराय कर्म विवर्ण समाप्तम् ॥ ॥ ॥

॥ अथ भ्रांतिखंडन दृष्टांत द्वादशमस्थल प्रारंभः ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ स्वस्व
रूप सम भावमै नही भरम को अंस ॥ धर्मदास क्षुल्लक कहै शुणचेतन नि
रवंस ॥ १ ॥ ॥ बचनिका ॥ ॥ दृष्टांत दृढता के अर्थ है स्वभावसम्यक्
ज्ञानदृष्टी रहितजीव है सोतो आपकूं अर भरम भ्रांति संकल्प विकल्प-
कूं येकही तन्मयिवत् समजताहै मानताहै कहताहै बहुरि कोई जीव
गुरूपदेस पाय करिके स्वभावसम्यक् ज्ञानदृष्टी हुये पश्चात् विभ्रांति भर
ममें दुःखी होयकरिकै येह समजतहै मानतहै कहताहै के तन मन धन
बचनसें बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभबी व्यवहार क्रिया
कर्म है तासैं अनन् स्वरूप भिन्न कोई परब्रह्म परमात्मा ज्ञानमयि सदा
काल जागती ज्योति नही है ताका समाधानके अर्थ दृष्टांत जैसे काहू गुरु
शिष्य कूं कही के हे शिष्य येह येक ल्वणको पिंड इस जलका भरया तसला
मै भगूनामै डालदे तब शिष्य गुरु आज्ञानुसार उस ल्वण पिंडकूं तिसज-

लपूरित तसलाभ गृनामै डाल दीयो येक तरफ येकांतमै रखदीयो प
श्चात् दूजा दिवस फिर गुरु शिष्यकूं कहीके हे शिष्य गयेदिवस तूंजलपू
रित तसलाभ गृनामै ल्वण पिंड डालाथा सो लावो तब गुरु आज्ञा प्रमा
ण शिष्य सीघ्रतापूर्वक जाय करिकै तिसजलपूरित तसलाभ गृनामै
हस्त स्पर्श द्वारा खोजणे देखणे लगा बहुत बेर पर्यंत तसलाभ गृनामै ति
सजलकूं मथन कीयो तथापि ल्वणानुभव भाष नही हुवो अर्थात् ल्वण
नही दीख्यो तब शिष्य कहीके हेगुरुजी जलमै ल्वण नाही गुरु कहीके
हे शिष्य कहताहैके नहीहै गुरु कहताहैके हे शिष्य तूं कहताहैके नही है
वहांहीहै फेर शिष्य कहताहैके नहीहै तबगुरु कहीके हेशिष्य तिस तस
लामै जलहै तामैसौ तूं येक अंजुली प्रमाण जल पीवो तब शिष्य जलपी
वणे लागो कुछ किंचित पीयो पीतप्रमाण शिष्यकूं ल्वणानुभव तत्सम
यही हुवो अर कहीके गुरुजी ल्वणहै तेरसेही तनमनधन बचनसे बहुरि त

न मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मादिकसै सर्व
था प्रकार भिन्न स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि परम ब्रह्मप
रमात्मा सदाकाल जागती ज्योति जहां निषेद है तहांहीहै स्वानुभवमा
त्रगम्यहै १ कोईजीव आपकूं ऐसें मानतहै जाएतहै कहतहै के मै सिद्ध
परमेष्ठी परब्रह्म परमात्मा नहीहूं ताकी येकता तन्मयिताके अर्थ दृष्टांतद्वा
रा गुरु समाधानदेताहै हेशिष्य इसभवनमें तूं उच्चास्वरसे अलाप ऐसें
करिके तूंही तवगुरु आज्ञा प्रमाण शिष्य उस भवनमे जाय करिके उच्चास्व
रसै कहीके तूंही तब तिस भवनाका समैसें प्रति अवाज ध्वनि ऐसीही आ
ईके तूंही तबशिष्यके अंतःकरणमें अचल निश्चय यह हुईके जिस सिद्धप
रमेष्टी परमातमाकी कर्णद्वारा वार्ताश्रवण करताथा सोतो स्वानुभव मात्र
गम्य मैहीहूं १ सिद्ध परमेष्ठी परमात्माकूं आपका स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक ज्ञानमयि स्वभावसें भिन्न समजताहै मानताहै कहताहै ताका समा

धानकेअर्थ गुरूकहताहै तुमारा तुमारेही समीपहै इहां तीन दृष्टांतद्वा
रा स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानको अनुभव देताहूं श्रवणकरो जैसै येकस्त्री आ
पकी नथनी नाकमेंसे निकाल करिके आपहीके कंठाभरणमे पहरादः
ई पश्चात् घरकार्य धंदा करणेमे येकाग्र चित्त हुई दोचार घटिका पश्चा·
त् वाऽस्त्री अपणा नाककों हात लगायो तब भ्रांति उस स्त्रीकों येह हुई·
के मेरी नथनी मेरेसमीप नही हाय मेरी नथ कहांगई इत्यादि भ्रांतिद्वा
रा दुःखित हुई श्रीगुरुके चरण सरण आई अर गुरूसे कहीके स्वामी मेरी
नथ मेरे समीप नाहीं नहीजाणु कहागई तब गुरूकही तेरी तेरेही समी
पहै देख इसदर्पणमे तब वास्त्री दर्पणमै स्वमुख देखणे लगी तत्समय
ही स्वकंठाभरणमे लगी हुई नथ अपणी आपके समीप देखकरिकेस्त्री
गुरूसे कहीकेहे स्वामी मेरी मेरेहीसमीप नथहै ऐसेही सिद्धपरमेष्ठीसें
सिद्धपरमेष्टी भिन्ननाहीं प्रश्न मैंनो सिद्धपरमेष्टीसेभिन्नहु उत्तर

जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्नहै तद्वत तूं सिद्धपरमेष्टीसे भिन्नहै तबतो तूंको
ड तप जप व्रत शील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करते संतेबी क
दाचित् कोई प्रकारबी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि हुवो नहोयेगो नहै बहु
रि जैसे सूर्यसे प्रकास येक तन्मयि अभिन्नहै तद्वत् तूं सिद्ध परमेष्टीसे ये
क तन्मयि अभिन्नहै तोबी तूं सिद्ध परमेष्टिसे येक तन्मयि अभिन्न होणेके अ
र्थ कोड जप तप व्रतशील दान पूजादिक शुभाशुभ कर्म क्रिया करने संतेबी
कदाचित कोई प्रकारबी सिद्ध परमेष्टीसे येक तन्मयि नहोवैगो नहुवोयोन
है १ सिद्ध परमेष्टीसै येकताकी अर भिन्नताकी यह दोहूही भ्रांति विकल्प
ना स्वभाव सम्यक ज्ञानमै कदापि नसंभवै १ जैसे कंठमै मोतीकी मालाहै
सो मोतीकी माल मोतीकी मालके समीप तन्मयिहीहै ताकूं भरम भ्रांतिसे
अन्यस्थानमे खोजताहै ताकूं गुरु कहीके अन्यस्थानमे मोतीकी माल ना
हीं तेराही कंठमे मोतीकी मालहै सो मोतीकी मालसै तन्मयिसमीपहै ऐ

सैही सिद्ध परमेष्टी हैसो सिद्ध परमेष्टीसै तन्मापि समीपहै १ जैसे सूर्य
के देखणेसै सूर्यकी निश्चयता सूर्यानुभव होताहै तैसैही सिद्ध परमेष्टी
परमातमा सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकूं देखणेसे सिद्ध परमेष्टी पर
मातमा सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यकी निश्चयता स्वानुभव नाहोती
है १ जैसै सुवर्णका कडा मुंदडा कंठी दोरा असरफी आदि सुवर्णसै
निश्चय स्वभाव दृष्टीमें देखियेतो भिन्न नाही तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टी परमातमासै निगोदसै लेकरिके-
मोक्ष पर्यंत जेती जीवराशि येकेंद्री आदि पंचेंद्री पर्यंतहै सो निश्चय स्व
भाव दृष्टिमें देखियेतो भिन्ननाही १ अपूर्वानुभव देताहूं श्रवण करो
कोईजीव आपकूं सिद्ध परमेष्टीसे भिन्न समजताहै अर आपहीकूं सि
द्धपरमेष्टीसें अभिन्न समजताहै ऐसी येह दोहु कल्पना जिस जीवके अं
तःकरणमे अचलहै सो जीव मिथ्यादृष्टीहै १ जैसें लोकीकमे येह कह-

णा प्रसिद्ध है के देखोजी तुम समज करिके काम कार्य कर्म कर्ता तो तुमारे येह नुकसाण किस वास्ते होने अर्थात् सत् गुरुका उपदेस वचन द्वारा कोई जीव आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावकूं समज करिके पूर्वप्रयोगात् शुभ अशुभ काम कार्य कर्म कर्ता है ताका सम्यक् ज्ञान स्वरूपी धनको कदापि नुकसाण होणे को नाहीं १ जैसै लौकीकमें येह कहणा प्रसिद्ध है के देखोजी रस्ता मार्गमे कंटकादिक विघ्न बहुत है बचकरिके जाणा तैसेही कोईजीव सत् गुरु उपदेशवचन द्वारा आपका आपमें आपमयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावकूं तनमन धन वचनसे वद्वारे तन मन धन बचन काजेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मसें बचाय करिके बच करिके फेर तीनसै ते-तालीस राजू प्रमाण येह लोक तामें बचकरिकै भ्रमण करै तोबी स्वभाव सम्यक् ज्ञान हैसो संसारमें फसणेको नाही १ जैसे चक्की का पाटके ऊ

पर बैठी मखीहै सो चक्की को पाट चोतरफ गोल फिरताहै ताकेऊपर बै
ठी मखीबी फिरतीहै तैसैही स्वभावसै अचल सम्यक्ज्ञानमयि परमात
मा संसार चक्रके ऊपर फिरताहै तोबी अचलको अचलहीहै १ जैसै स
मुद्र स्वभावमै जैसाहै तैसाहै तोबी व्यवहार नयात् समुद्रके कीनारो ह·
द्द प्रमाणहै वास्तै समुद्र बंध्योहै बहुरि समुद्रकुं कोई बंध कस्यो नाही वा
स्तै सोही समुद्र मुक्तहै तैसैही स्वयंसिद्ध परमातमा व्यवहार नयात् बं
ध मुक्तहै स्वभाव सम्यक् ज्ञानमै स्वानुभव दृष्टीमें देखियेतो बंधमुक्त·
तो दूरहीरहो परंतु बंध मुक्तकी कल्पनाको अंसबी नसंभवै १ जैसैसूर्य
केभीतर अंधकार नाही तैसै येह जगत् संसार स्वानुभव सम्यक्ज्ञान·
मयि सूर्यके भीतर नाहीं १ जैसै सूर्यका अर अंधकारका येक तन्मयि
तानाही तैसेही ज्ञानमयि परमातमाका अर जगत संसारका येक तन्म·
यितानाही १ जैसै बकरी मंडलीमै जन्मसमय सैही भरमसे पर वसात्

सिंह रहताहै अरदजो सिंह जंगलमें स्वाधीन रहताहै दोहूही सिंहकी-
जाति लक्षण स्वरूप नामादिक येकहीहै परंतु परस्पर अभेदमें भेदनि-
श्चयहै तैसेही निगोदसें नेकरिकें मोक्ष वा सम्यक् ज्ञान स्वभाव पर्यंत जी
वराशि नाम जाति लक्षणादिक युक्त येकहीहै परंतु परस्पर अभेद स्वरू
पमें भेदहै येह भेदबुद्धि अरभेद बुद्धीकी कल्पना येह बिघ दूरव सतगुरू
के चरणकी सरण होणेसें मिटैगा १ जैसें येक मोटा चोडा लंबा बहुत वि
स्तीर्ण परमाणका स्वच्छ दर्पणमें अनेक प्रकारकी अनेक चलाचल रंग-
बिरंगी वस्तू दीखैहै तैसेंही स्वच्छ ज्ञानमयि दर्पणमें येह अनेक विचि
त्र मयि जगत संसार दीखताहै १ जैसे सूर्यका प्रकासमें कोई पापकर्ता
है कोई पुन्य कर्ताहै कोई मर्ताहै कोई जनमताहै इत्यादि नाका शुभाशु
भ पाप पुन्य जन्म मरणादिक सूर्यकूं लागतानाही सूर्यसे येह जन्म मर
ण पाप पुन्य तन्मयि होतेनाही तैसेही सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावसूर्यका

प्रकासमे पाप पुन्य जन्म मरण कर्मादिक शुभाशुभ होते है ताका फल
अर मूलादिक है सो सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव सूर्यकूं पहोंचनेनाही ला
गनेनाही तन्मयि होनेनाही १ जैसे सूर्यके इच्छा सूर्यकूं देखणेकी नसं
भवै तैसे ही ज्ञान मयि परमातमा कूं ज्ञान मयि परमातमा देखणेकी इच्छा
नसंभवै २ जैसे धोबी निर्मल नीरका भऱ्या तलावमे कपड़ा धोताहै ता
कूं लागी जल पीणेकी पिपासा सो मूर्ख धोबी बिचार कर्ताहै के येह २ दो
य बस्त्र धोय पश्चात् जल पीऊंगा दोय बस्त्र धोये पश्चात् फेर भी येही बिचा
र कीयाके येह धोय पश्चात् येह धोय पश्चात् ऐसें अनुक्रम संकल्प बिचार
करतो करतो धोबी निर्मल नीरको निर्मल नीरहीमै धोबीमरगयो परंतु जल
नहीपीयो तैसेंही सर्व जीव राशि निर्मल सम्यक् ज्ञानमयि जलका भऱ्यास
मुद्रमै परवस्तुकों उजल कर्ताहै येह करे पश्चात् गुरुके उपदेस द्वारा सम्यक्
ज्ञानरूपी नीर पीयकरि सुखी होहुंगा येह करे पश्चात् सम्यक् ज्ञानमयिनीर

गुरुपदेसात् पांउगा ऐसै करते करते मरण करिकै कहांके कहांचलेजा तेहै १ जैसे धोबी मैला कपडा वस्त्र कूं साबुण क्षार शिलादिक निमनसै धोताहै परंतु धोबी वस्त्रसै साबणसै क्षारसै शिलादिकसै तन्मयि होय नही। धोताहै तैसेंही। शुभके लगी। अशुभ कालि माताकूं सम्यक दृष्टी धोताहै परंतु सम्यकदृष्टी। शुभाशुभसें अर शुभाशुभका जेता व्यवहार क्रियाकर्म है तासे तन्मयि होयनही। धोताहै॥ ॥दोहा॥ ॥ भेदज्ञानसाबणभयो समरसनिर्मलनीर॥ धोवीअंतर आतमा धोवैनिर्मलचीर॥१ जैसे कोरानवीन पक्क मांटीका कलसके ऊपर पवन प्रसंगात् रेणु आय लागैहै तैसे सम्यक दृष्टीके कर्मरेणु आयलागतीहै १ जैसे बहुत वर्षसे भरयो तेलघृतिनचीकणो मांटीको कलस ताकेऊपर पवन प्रसंगात् रजरेणु आय लागतीहै तैसे मिथ्यादृष्टीके कर्मवर्गणा आये लागतीहै २ जैसे कोई मूक पुरुषका मुखमें मिश्री गुड खांड डालदियां मूक कूं मिष्टानुभव हुवो

परंतु कहनहीसक्का जैसैंही कोई जीव कूं गुरुपदेशात् आपका आपकूं आपमें आप मथि स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव हूवा परंतु कहनहीसक्का
१ प्रश्न गुरु स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव कैसैं देना होगा उत्तर गुरुकी गुरुही जाणैं तथापि कुछ कहताहूं जैसें कोई चंद्र दर्शणकोइ-च्छुक गुरुसैं बूजीके चंद्र कहांहै तब गुरु कहीके वो चंद्रमा मेरी अंगुलीके ऊपर इत्यादिक अनेक प्रकारसैं गुरु स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव देताहै
१ जैसें किसी पुरुषकी स्त्री अपणे भरतारसैं कहीके तुम इस बालककूं लडावो गोदमें लेवो तो मैं घरकार्य करूं तब वो पुरुष स्वपुत्रकूं अपणी गोदमें लेकरि लडाणे लाग्यो ततरमय बालक रुदन करणे लागो तब पुत्रको·पिता तिस बालककी थिरता रूरवके अर्थ कहताहैके हे पुत्र रुदन मति·करै यहां अपणी माता बैठीहै इहां विचारणा चाहियेकी माता तो तिस बालककीहै पुरुषकी नाहीं पुरुषकी तो स्त्रीहै ः स्त्रीकूं माता कहणा व्य·

वहार विरुद्ध है तथापि बालककी स्थिरता करवके अर्थ वो पुरुष व्यवहार-
विरुद्ध बचन बोलताहै तेंमेही शिष्य मंडलीकेअंतःकरण स्थिरताके अर्थ गुरु
स्यात् अपभ्रंश बचन बोलताहै हेतुगुरुका उत्तमहै १ जैसे अग्नीमें क-
पूर चंदनादिक डालदीजियेंतिसकुं बी अग्नीजलय देतीहै वहारि चर्म मला
दिक डालदीजियें तिसकुं बी अग्नी जला देतीहै तेंमेही सम्यक् ज्ञानाग्नि
विषे येह शुभाशुभ पाप पुन्यादिक जल जातेहै अर्थात् नहीरहताहै १ जै
से येकजात येक लक्षण येक स्वरूप येक तेज येकगुणादिक युक्त रतनरा-
सि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह रतन भिन्न भिन्न तया जैसे अग्नी
का अंगाराकी रासि दूरसे येकहीसी दीखतीहै परंतु है वह अंगारा भिन्नभि
न्न तेंमेही जीव राशि भिन्नभिन्नहै गुण लक्षण जाति नामादिक सर्वका ये-
कहै १ जैसे दधी मथन करिके तिसको माखण निकास करिके पीछाको पी
छो तिस छाच तक्र मट्ठामें डालदेतोबी वो माखण छाच तक्रमें मिल करि-

के येक होणेको नाही तैसैही गुरु संसार सागरमैसै जीवकूं निकास क·
रिके पीछाको पीछो संसार सागरमै डाल देवैतोबी वोजीव संसार साग
रसै अग्नी उष्णतावत् मिल करिके येक होणेको नाही १ जैसै किसीके
पास सर्पका जहर विष निवारणी बूटी जडी मंत्रसमीपहै वो सर्पसै नही
डरताहै तैसै किसीके पास स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञान तन्मयिहै वो संसार-
सर्पसै नही डरताहै १ जैसै कुंभकारका चक्र दंडादिक प्रसंगात् फिरताहै
बहुरि दंडादिक प्रसंगात भिन्न हुये पश्चात्‌वी वोचक्र कुछ किंचित् काल
पर्यंत फिरवि फिरतारहताहै तैसैही कोईजीवका ४ च्यार घातिया कर्म
भिन्न हुये पश्चात्‌वो पूर्व प्रयोगात् कुछकिंचित् कालपर्यंत संसारमै भ्रम
ताहै १ जैसै रूकी गोवरी छाणा कंडाके येक कणिका माभवी अग्नी लाग
गई तो सो अग्नी तिस रूकी गोवरी छाणा कंडाकूं अनुक्रमसै जलायक
रिके भस्मकरिदेताहै तैसैही कोइजीवके गुरुप देशात् येक समय काल

मात्रवी सम्यक्ज्ञानाग्नि तन्मयि होय लाग जावेगी तो अष्ट कर्मादि ना
मकर्म पर्यंत जलाय देगी बाद पश्चात जो रहणे जोगहै सो को सोही स्व
स्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु अपंड अविनासीर-
हगा १ जैसै काष्ट पाषाण चित्रामकी ऽस्त्री आकार फूतलीकूं कोई कामी
तीव्र काम राग भावमै देखतं देखतं ताको वीर्य बंध छूट जाताहै तैसेही
कोई धातु पाषाणकी पद्मासण पद्गासण ध्यानमुद्रायुक्त वैराग सूचक
मूर्तिकूं कोई मुमुक्षु तीव्र अपणा वीत राग भावसहित देखेतो तत्काल ताका
अष्टकर्मबंध छूट जाताहै १ जैसै व्यभिचारणी ऽस्त्री स्वघर कार्यादिक कर्ती
है परंतु ताके अंतः करणमें वासना व्यभचारि पुरुषकी मफ लगी रहतीहै तै
सेही सम्यकदृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारीक काम कार्य कर्ताहै परंतु अं
तः करणमें ताके दृढ अचल वासना स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक्ज्ञान-
कीहै अर्थात स्वसम्यक्ज्ञानकूं अर आपकूं अग्नि उष्णतावत् एक तन्मयि

समजनाहै माननाहै १ जैसै गुमास्तो दुकान वा कोठीको काम कार्य रा गद्वेष ममता मोह युक्त कर्ताहै परंतु ताके अंतः करणमें अचल यह है के येह धन परिग्रह वहुरि धन परिग्रहका शुभाशुभ फल मेरा नाही सेठ काहै तैसेही सम्यक् द्रष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारका शुभाशुभ व्य वहार क्रिया कर्म राग द्वेष ममता मोह सहित कर्ताहै परंतु ताके अंतः करणमै अचल दृढ अवगाढ येह हैके येह संसारका जेता शुभाशुभ व्य वहार क्रिया कर्म राग द्वेषादिक हैसो वहुरि ताका शुभाशुभ फलहैसो मेरा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुका तन्मयि नाही येह संसारका शुभाशुभ कर्मादिकहै सो सर्व तन मन धन वचन सैं तन्मयिहै तिसीहीकाहै १ जैसे स्वच्छ दर्पणमें अग्नि वहुरि जलकी प्रतिछाया दीखतीहै ताकरिके वा दर्पण उष्ण शीतल नहीहोतो तैसे ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमै संसारका

शुभाशुभ क्रिया कर्मकी प्रतिच्छाया भाप होतीहै तोकरिकै वो स्वच्छ-
सम्यक् ज्ञानमयि दर्पण राग द्वेषसें तन्मयि होते नाही ॥ १ जैसे आकास-
मे काला पीला लाल मेघ बादल बीजली आदि अनेक विकार हो ताहै अ-
रबिगडताहै तोकरिकै आकाश विकारी नही होताहै तैसेंही स्वसम्यक-
ज्ञान मयि आकाशमें येह क्रोध मान माया लोभादिक होते संतबीसो स्व
सम्यक ज्ञानमयि रागद्वेषादिकसें तन्मयि होते नाही ॥ १ जैसें जिस घरमै
अग्नी लागैगी तो घर जलैगा बलैगो परंतु घरके भीतर बाहिर आकाशहैसो
कदाचित् कोई प्रकारवी जलैगा बलैगा नाही तैसेंही देह रूपी घर तथा स-
रीर घरमे आधिव्याधिरोगादिक अग्नि लागैगी तो देह सरीर घर जलैगो ब
लैगो परंतु देह सरीरके वा लोका लोकके भीतर बाहिर स्वसम्यक ज्ञान-
मयि निर्मल आकाश वनहै सो कदाचित् कोई प्रकारवी जलैगो बलैगो वा
मरैगा जन्मैगो नाही ॥ २ जैसे सूकी गोवरीके कणिका मात्रवी अग्नी ला-

गजावैतो तिस अग्नी प्रसंगात् सोसूकी गोबरी अनुक्रमसें जलजानी· है तैसैही कोहू जीवके सत्गुरू बचनोपदेस द्वारा येक नेत्र टीमकाग· वा येक समय काल मात्रबी सम्यक् ज्ञानाग्नी तन्मयि लाग जायतो तिस जीवका द्रव्यकर्म भावकर्मनोकर्म अनुक्रम पूर्वक जल्जाय बलजाय इ समे कदाचित् कोई प्रकार संदेह नाहीं १ जैसें कोहू स्त्री अपणा स्वभ र्तारकूं त्यज करिके अन्य पुरुषकी सेवा रमण आदि कर्तीहै सो स्त्री व्य वचारणी मिथ्यात्‌णीहै तैसैही कोहू अपणा आपमें आपमयि स्वस· म्यक् ज्ञानमयि देवकूं त्यज करिके अज्ञानमयि देवकी सेवा भक्तिमें ली· नहै सो मिथ्यातीहै २ जैसें कोहू मदिरा वारुणी पीवणेका सर्वथा प्र· कार त्याग करेगा तब मदोन्मत्त पणाका त्याग संभवैगा तैसैही कोहू जीव जाति लाभ कुल रूप तप बल विद्या अधिकार येह अष्टमद सर्वथा प्रका र त्यागेगा तब निश्चय मार्दवजो स्वसम्यक् ज्ञान गुणहै तासें तन्मयि होवे·

गा १ जिसके तिल तुसमात्र परिग्रह नाहीं। अर पंच प्रकारका सरीर न नहै तासें कदाचित् कोई प्रकारसें। तन्मयि नाहीं सोही सतगुरु है १ जैसे कोहू मद भंगादिक पीय ताकरिके मदोन्मत्त है ताकूं लोकीक जन ऐसें कहते हैं येह मतवालेहै नसेहै। कोई अपूर्व मति मंद मदिरा पीय करिके मदोन्मत्त होरह्याहै येह जैन मतवाले वैष्णु मत वाले शिव मतवाले बौद्ध मतवाले इत्यादि बहुरि इनकूं कोहू कहैकै तुम कोणहो तब वह स्वमुखवान् अपणा आप कहताहैके हम जैन मत वाले हम वैष्णु मतवाले हम शिव मतवाले हम बौद्ध मतवाले इत्यादि येह मतवाले स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तुसें तन्मयि नाहीं २ जैसें सूर्य अपणा स्वभावगुण प्रकास नहीं छांडे तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञान अपणा ज्ञान गुणकूं न छांडे २ जैसें कोहू केवल अंगके ऊपर आंटकरि मधु छताकूं तोडणे लागे ताके तत् समय सहस्त्रादिक लगी मधु मक्षिका तथापि वो पुरुष अडकरह

ताहै तैसैंही कोहू जीव गुरु बचनोपदेशात् स्वसम्यक् ज्ञानानुभव कंब
ल ओढलीनी ताकेपेह संसार माक्षिकानहीं लगती १ जैसे कागपक्षी
बोलताहै तैसैंही किसीकुं स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी तन्मयिता परभाव
गाढतानो हुईनही अर बडे बडे वेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पढतेहै सोका
क भाषितमवत्त १ जैसे कस्तूर्या मृगके समीपही कस्तुरीहै परंतु क
स्तुरीकी सुगंध नासिका द्वारा धारण करिकै कस्तुरीकुं इदर उदर जंगल
मैं खोजता फिरताहै धावता दोडताहै तैसैंही जीवके समीपही जीवसैं तं
न्मयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै ताकुं जीव आकास पाताल लोका
लोकमैं खोजताहै अज्ञानी जीवकूं येह खबर नाहीं के जिसकुं मैं खोजता
हूं सो वस्तुतो मेरी मेरेही समीपहै मेरा स्वसम्यक् ज्ञानसैं तन्मयिहै वामैंही
स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहूं १ जैसे इंद्रजालका खेल मिथ्याहै तै-
सैंही येह संसारका खेल मिथ्याहै स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा सत्यहै

१ जैसे स्वप्नाकी माया कूडीहै तैसेंही संसारकी माया कूडीहै स्वसम्यक्ज्ञा
नमयि परमातमा सत्यहै १ जैसें जहां देह नहीं तैसें तहां जन्म मरण नामा-
दिक नाही अर्थात जहा देहहै तहांही तिनसे तन्मयि जन्म मरण नामादिक
है १ जैसें चलती चक्कीका दोहु पाटकेबीच जेता गहूंचीणा मुंग उडद आदिधा
न्य स्वपरंतन सर्व पिसजातेहै आटो होजातोहै येक कण दाणुबीनही बचता
है परंतु उसी चलती चक्कीमें कोई कोई बीज लोहाका कीलाके नजीक रहता
है सो बच जातांहै तैसेंही संसार चक्रके बीच पड्याहै जीव सोतो मरणादि
क होगा होकरि नर्क निगोदमें जाय पडतेहै परंतु कोई कोई जीव गुरुबचनो
पदेस द्वारा आपका आपमें आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाके
तन्मयि शरण हो जायहै सो जीव जन्म मरणके दुःखसें बचजातेहै १ जैसेंस
र्पणी १०८ पुत्र जणतीहै जाणिकरिके गोलाकार अपणी देह गोलाकारके
बीच सब पुत्रसमुदाय कूं राखि करिके अनुक्रमसे सर्व कूं भक्षण करिजा

तीहै परंतु कोईकोइ गोलाकारमै निकस जातोहै सो बच जातोहै तैसेही उत्सर्पणी अवसर्पणी का गोलाकारमैसै कोइक जीव निकस करिकै भिन्न हुवो सो तो बच्यो शेषरहे सो उत्सर्पणीका अवसर्पणीका मुखमै रहै १ जैसे बांझ स्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका आदि अंत पूर्वापर सर्व विवर्ण श्रवण करायो तथापि तिस बांझ स्त्रीकूं पुत्रोत्पत्तीका कदाचित् कोई प्रकारबी साक्षात अनुभव होते नाही तैसेही कुन मिथ्यादृष्टिकूं स्वसम्यक् ज्ञानोत्पत्तीका पूर्वापरविवर्ण श्रवण करावो तथापि ताकूं सम्यक् ज्ञानोत्पत्ति को साक्षात् अनुभव होते नाही १ जैसे किसीको नाक छिन खंडनहै ताकूं कोई दर्पण दिखावै तो वो नाकछिन अपणा दिलमे यह विचार करै के मेरा नाक छिनहै इसी वास्ते यो मेकूं दर्पण बतावहै तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं स्वसम्यक् ज्ञान दर्पण दिखावणा अयोग्य १ जैसे बांझ स्त्रीकूं पुरुषका संयोग होतेसंतेबी पुत्र फल लाभानुभव नही होताहै तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं

देव गुरु सास्त्र सत पुरुषांको सतसंग होनेसं ते बी स्वसम्यक् ज्ञान फल
लाभानुभव नहीं होनाहै १ जैसैं हंस दुग्ध पाणी मिले हुयेकूं भिन्नाभि
न्न समजताहै तैसें स्वसम्यक् ज्ञानी येह लोकालोककूं आपका आपमैं
आपमधि स्वसम्यक् ज्ञानकूं भिन्न भिन्न समजताहै १ जैसें स्वप्नाअव-
स्थामै घरकुटुंब बेटा बेटी ऽस्त्री मातापिता धनधान्यादिक दिखताहै-
ताकूं जाग्रत समय देखियेतो नहीं दिखताहै अर्थात् स्वप्ना अवस्थाका मा
ता पिता स्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते हैं ताका दुःख हर्ष सोक जाग्रत अव
स्थामैं नहीं होते तैसेही जाग्रत अवस्था समयका माता पिता ऽस्त्री पुत्रा
दिक है सो स्वप्नामैं नहीं दीखताहै अर्थात् जाग्रत अवस्था समयका मा-
ता पिता ऽस्त्री पुत्रादिक सर्व मरजाते है ताका दुःख हर्ष सोक स्वप्नाअव-
स्थामै नहीं होते १ सदाकाल देखना जाणताहै ताके सन्मुख येह स्वप्ना
समयका अर जाग्रत समयका संसार होताहै बिगडताहै १ जैसे स्वप्नास

मय कोई किसी को मस्तग छेदन कियो मारगेस्यो तिस समय आपकूं· मस्यो समझ्यो मान्यू सोही जाग्रत हुवो नब कहणे लाग्यो के मेस्वप्रामे मरगयोथो तैसैही येह जन्म मरण पाप पुन्यादिक स्वप्नाकारखेलहे इस· खेल का नमासा देखना जाणताहे सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानहे १ जैसें म नचाला स्वमानाकूं मानाही कहताहे परंतु नाकोंधि श्वासक्या क्यूंके कदाचित् अपणी माताकूं अपणीस्त्री मानलेतो प्रमा णक्या तैसेंही येह मनि मंदिरामें मदोन्मत्त येह जैन मनिवाले वैष्णुमनि वाले शिव मनिवाले वेदांतमनिवाले बौद्ध मनिवाले आदि षट् मनिवा ले हैं सो स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तूकूं ओर· सैं ओर मकार मानले कहदेवैतो प्रमाणक्या १ जैसें माटीका कूटा घोट कसैं बालक प्रीत कर्नाहे सोबी दुःखीहे बहुरि कोहु सत्य साचाघोटकसे प्रीत कर्नाहे सोबी दुःखीहे कारण उसका घोटककू कोहू तोडे फोडे अर·

तिसका घोटक कूं बी कोई चारो दाणु नदे या ताडै तैसैही कोहूजो माटी-
की पत्थरकी चित्रामकी काष्टकी झूटी देव मूर्त्तिसें प्रेम प्रीत कर्ताहै सोबी
दुःखहीको कारणहै बहुरि कोहु सत्य साचो देवहै तासें बी प्रेमप्रीत कर-
ताहै सोबी दुःखहीको कारणहै अर्थात् स्वसम्यक ज्ञानमयि स्वभाव वस्तुसे
भिन्नहोय करिकें परवस्तुमें प्रेम प्रीत करैगा सो दुःखानुभवमें लीनही
रहैगा १ जैसें येक पुरुष पाषाण का देव मूर्त्तिकूं अर धातुमूर्त्ति देवकूं
बहुरि काष्टकी देव मूर्त्तिकूं अर चित्र देव मूर्त्तिकूं बडे प्रेमभावसें ताकी पू
जा प्रणाम कर्ताथा देववसात् पाषाणकी मूर्त्तितो फूटगई तूटगई अर
धातुकी देव मूर्त्तिकूं चोर तस्कर लेगये बहुरि काष्टकी देवमूर्त्ति अग्नीमेज
ल बल करिकें भस्म होगई अर चित्रामकी मेघपवन वा हस्त स्पर्शात् द्वारा
बिगडगई अर्थात् धातु पाषाणादिककी देवमूर्त्तिमें नष्टहोणा आदिअने
कदूषण मनक्षानुभव होना देख करिकें अपणो आपमें आपमयि स्वस-

म्यक ज्ञानानुभवगम्य स्वभाव स्वरूप आपही कूं देव समज करिके चुप
चाप रहे १ जैसै कोइ पुरुष किसी साहुकारकी दुकानको द्रव्य स्वर्ण
रत्नादिक दूरसै देख करिके कहीके मेरकूं येह जेता द्रव्य रत्नादिक मे
रेसे दूर अलगही दीखताहै ताका मेरे त्यागहै तैसैही स्वस्वरूप स्वानुभ
वगम्य सम्यक् केवल ज्ञानहै ताके येह संसार लोकालोकका स्वभावहीसै
त्यागहै १ जैसै कोई द्रव्यार्थि पुरुष राजाकूं जाण करिके ताकी दृढ श्रद्धा
करिके राजाके अनुस्वार चलताहै रहताहै ताकूं राजा द्रव्य देताहै तैसैही
कोइ जीवहै सो प्रथम स्वसम्यक् केवल ज्ञान राजाकूं अपणा स्वभावगु
णसै तन्मयि समजकरिके जाण करिकै ताकी दृढ परमावगाढ श्रद्धा करिके
केवल ज्ञान राजाके अनुस्वार चलताहै रहताहै ताकूं केवल ज्ञान राजस्वभा
व सम्यक् ज्ञानमयि मोक्ष देताहै १ जैसै संस्कृत भाषामै मलेंछ नहीं स
मजे तोहोवैतो मलेंछकूं मलेंछी भाषामै समजावणा तैसैही अज्ञानी

कूं अज्ञान भाषामें समजावणा १ जैसें कोईक हैके दोहूराजा परस्पर· युद्धकरिरहाहैं बिचारसैं देखियेतो परस्परकी फोज लडनेहै दोहूराजा तो अपणे अपणे स्वस्थानमें निमग्नहै तैसेंही ज्ञान अज्ञान दोहुही अ पणो अपणा स्वस्थानमें अपणे अपणे स्वभावमें निमग्नहै अपणे अ पणेस्वभावहीमें १ जैसे कोहू कहके राजाइस गांवकूं लूटताहै जलादी यो इसगांवकूं बालदीयो इस गांमकूं बचादीयो इसग्रामकी रक्षाकरी परंतु बिचारसें देखियेतो लूटणे मारणे बचाणेका जलाणेका इत्यादिक कार्यहै ताकूं फोज सिपाई जमादार फोजदार आदि करतेहै राजा नहीक र्ताहै तैसेंही स्वसम्यक् केवलज्ञान राजाहै सोकिंचिन् वी शुभाशुभ क्रिया· कर्म नही कर्ताहै १ जैसे सुवर्णका सुवर्णमयि भावकटिकूंडलादिकसु वर्णमयिही होताहै बहुरि लोहाका लोहमयिही होताहै तैसैही स्वस्वरू प सम्यक्ज्ञानका भाव क्रिया कर्म सम्यक्ज्ञानमयिही होताहै बहुरि तैसैही

अज्ञानका भाव किया कर्म अज्ञानमयिही होताहै १ जैसे मातंग चांडालकी बहुरि उत्तम ब्राह्मणकी किया कर्म भाव येक नाही किंतु भिन्नभिन्नहै तैसेही ज्ञानअज्ञानकी कियाकर्म भाव येक नाही अर्थात् भिन्नभिन्नहै १ जैसे काहू पुरुष अहार कीयो सो अहार उदराग्नि प्रसादात मांसरुधिर मज्जा मल मूत्रादि होयहै तैसेही जिसके गुरु वचनोपदेश द्वारा साक्षात् अंतःकरणमें सम्यक् ज्ञानाग्नि प्रज्वलित भई ताके सर्व कर्म स्वमेवही आपणी आपणी प्रणतीमें प्रणवहै १ जैसे वैद्यके समीप विष नासनी दवाहै वो वैद मरण होणे जोग विष भक्षण करते संतेबी मरतो नाही तैसेही सम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रियोगात् विषय भोग भोगते संतेबी कर्मसे बंधतो नाही १ लौकीकमें प्रसिद्ध है जैसे काहू स्त्री कूं भोगे सो पुरुषहै तैसेही क्रोध मान माया लोभ मोह ममता मायाकूं भोगे सो सत्य पुरुषहै बहुरि जिसकी छातीके ऊपर यह क्रोध मान माया लोभ मोह ममता माया चढरहीहै

सो पुरुष नही वो सत्यरूपीहै १ जैसे स्वर्वण कर्दमके बीच पड्याहै तोहु सुवर्ण कर्दमसै येक तन्मयि लिन होणेको नाही तेसैही स्वसम्यक ज्ञा- नी सम्यक द्रष्टी सर्व कर्मके बीच पड्याहै तोबी सर्व कर्मसे तन्मयि नही ल पटताहै १ जैसे घटके भीतर बाहिर मध्य आकाश हे सो घटोत्पत्ती होने संते तो घट उपजतो नाही बहुरि घटको नास होने संते आकासको नास नही होते तेसेही स्वस्वरूप सम्यक ज्ञान मयि परमातमाहे सो देहको बि नसने संतेतो बिनसतो नाही मरतो नाही बहुरि देहके उपजते संते उपज तो नाही जन्मतो नाही १ सहज स्वभावहीसे आपा परकुं जाणताहे सो- ही स्वसम्यक ज्ञानहै १ जैसे तुषहे सो तंदुल नाही तैसेही पंच प्रकार का- सरीर देहहे सो स्वसम्यक ज्ञानमयि परमातमा नाही १ जैसे बांससे बां स परस्पर घृष्ट होवेहै तब अग्नी सहज स्वभावहीसे उतपन्न होतीहे तेसेही आत्मासे आत्मा तन्मयि मिले तब सहज स्वभावहीसे स्वसम्यक ज्ञानाग्नि

उत्पन्नहोतीहै १ जैसे सूर्योदय समय स्वमेवही कमल प्रफुल्लित होता
है तैसैही किसीके अंतःकरणमै स्वसम्यक ज्ञानमयि सूर्योदय होनेसं
ते मनस्वरूपी कमल प्रफुल्लित होताहै भावार्थ मनमै बडीकुसी हर्षहो
ताहै के हाहाहाहा जिसके प्रकाशमे येह लोकालोक प्रगट दीखताहै
ऐसा सूर्यका दर्शण लाभ हूवा अथवा विशेष हर्ष प्रफुल्लित पणो ऐसो
केजिस सूर्यका प्रकासमे येह लोकालोक जगत संसार जन्म मरण ना·
मानाम बंधमोक्षादिकहै सो सूर्य स्वभावहीसे मैहीहूं १ जैसे फोजतो
है परंतु तामै फोजदार नाही तो वाफोज वृथाहै तैसैही व्रत शील जप तप
ज्ञान ध्यान दया क्षमा दान पूजादिकतोहै परंतु तामै स्वसम्यक ज्ञानमयि
गुरूनही तो वह व्रत शीलादिक वृथाहै १ जैसे कोई ऽस्त्री को भर्तार परदे
समैजाय करिके तत्रस्थलही मरगयो अब वास्त्री तिस भर्तारकी आसाध
रण करिके भोगादिक उत्पत्तीका सिणगार काजल टीकी मेंदी नथनी आदि

सिणगार करनीहै सो वृथाहै तैसैही मोक्षमै गये स्वस्वभाव सम्यक ज्ञानसै तन्मयि होगये निर्ग्रंथगुरु सोतो अब पलट करिके पीछा आते नाही जैसैल वणकी फूतली क्षार समुद्रमै गई सो पलट करि के आती नाही तदवत्‌ही स मजणा अब चलेगये निर्ग्रंथ गुरू ताकी आसा धारण करिके संसारिक शु भाशुभ भोगादिक उत्पत्तीका शुभाशुभ क्रिया कर्मादिक करणा वृथाहै १ जै सै कोहू जन्मसमयसै लगाय अद्यपर्यंत गुड शर्करा खाईनाही अरगुड स कराकी वार्ता विवर्ण कर्नाहै सो वृथाहै तैसैही कोहू कदाचित्‌ काहू प्रकार वी स्वस्वरूप स्वयंसिद्ध सम्यक ज्ञान मयि परमानमासै तो तन्मयि हुये नाही अर उनका गीत वेद पुराण सास्त्र सूत्र स्वमुखात्‌ पढताहै बोलताहै कहताहै सो सूकपक्षीवत वृथाहै १ जैसे सीलवंतीस्त्री स्वघर त्याग कोई काल पर घर प्रतिवो जावै आवै तोबी फिकर नाही तैसैही स्वसम्यकद्रष्टी पूर्वकर्मप्रि योगात्‌ कुछकाल संसारमैभी भ्रमण करै तथापि फिकर नाही १ जेसे सूर्यो

दयहोते प्रमाण तत्काल तत्समयही अंधकार उपसम होजातेहै तैसेंही किसीके अंतः करणमै स्वसम्यक्ज्ञान सूर्योदय होते प्रमाण तत्काल तत् समयही मोहांधकार उपसम हो जातेहै १ जैसे व्यभचारणी स्त्री अपणा स्वघर त्याग कारिके परघर नही जाती आतीहै तथापि ताकी वासना व्यवचारी पुरुषकी तरफ लगी रहतीहै तैसेंही जिसकू स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता अवगाढ परमावगाढता नाही ऐसा मिथ्यादृष्टीकी वासना भाव शुभाशुभ संसारकी तरफ लगी रहतीहै १ जैसे जिसकोही या दुकानको कामकार्य सेठ कर्ताहै ममता माया मोह सहित तैसेंही गुमास्तो ममता माया मोह सहित कर्ताहै परंतु भीतर परिणाम भेदो भिन्न भिन्नहै तैसेंही किसीकूं गुरुवचनोपदेशात स्वसम्यक ज्ञानानुभव होणे जोग होचुके पकतो ऐसो बहुत दूजा ऐसोके संसारकूं या लोकालोककूं व- हारि अपणा स्वभाव सम्यक ज्ञानकूं एक सूर्य प्रकासवत निश्चय समजतो

है माननाहै दूजाऐसा नेदोहूही संसारका कार्य कर्म कर्नाहै नामेयेक दोषी दूजो निर्दोस १ जैसे मूकपक्षी स्वमुखात् रामरामराम बोलताहै परंतु स्वस्व रूप सम्यक्ज्ञानमें तन्मयि बीज वृक्षवत् तथा जल कल्लोलवत् रमै सोरामहै ऐसा रामकूंतो जाणतोनाहै। फिरवो मूक पक्षी स्वमुखात् रामराम बोलता है सो वृथाहै तैसेही मिथ्याद्रष्टी स्वयंसिद्ध स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि सिद्धकूं तोजाणतो नाही अर स्वमुखात णमोसिद्धाणं ऐसे बोलताहै सो वृथाहै इहांविधि निषेधमें स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तन्मयिनसमजणा १ जैसे दीपज्योतिके भीतर कालो काजल कलंकहै तैसेही स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञान दीपज्योतिके प्रकासमें कर्मसे तन्मयि कर्म कलंकहै इहां कोई मिथ्याद्रष्टी दृष्टांतमें तर्कस्थापन करो के स्वसम्यकज्ञानानुभवतो नही ग्रहण करैगो अर सून्यदोष ग्रहण करैगो क्याके दीपज्योतिमें कालो कलंक काजलहै परंतु दीपज्योतिके बुजगये पश्चात् काजल वी कहांहै अर

दीपज्योतिर्बी कहांहै ऐसी तर्क द्वारा शून्यदोष ग्रहण कर्ताहै सो जरूर
स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभवसे सून्यहै मिथ्यादर्ष्टीहै १ पंचेंद्रिय कूं
बहुरि पंचेंद्रियका जेता शुभाशुभ विषय वा भोगोप भोगादिक कूं सह
ज स्वभाव होसे जाणताहै देखताहै सोही केवल ज्ञान है ऐसे नहीं स
मजणा मानणा कहणाके घ्राणेंद्रियका विषय भोगकूं जाणताहै सो
कुछ ज्ञान औरहै जिव्हा इंद्रियका विषय भोगाकूं जाणताहै सो कुछ-
ज्ञान औरहै ऐसैही कर्णेंद्रियका स्पर्श इंद्रियका विषय भोगादिककूं जा
णताहै सो कुछ ज्ञान औरहै बहुरि तनमनधन बचनादिककूं बहुरि तन-
मन धन वचनादिकका जेता शुभाशुभ क्रिया कर्म कूं और ताका फलकूं
जाणताहै सो कुछज्ञान औरहै ऐसी भेदाभेदकी कल्पना कदाचितको
ई प्रकारबी स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्मयि न संभवे १ जैसे सूर्यका प्र-
कासमे पडी रस्सी रात्रिसमय सर्प भाष होतीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञा-

नानुभव विना ज्ञानहैसो जगत संसारवत् भाषहोताहै १ जैसे सीपमें
चांदी भाष होतीहै तथा मृगतृष्णामें नीर भाष होताहै तैसेंही स्वसम्य-
क् ज्ञानमें तन्मयिवत् यह संसार जगत भाष होताहै १ जैसे अंधसमूह-
कूं खेंच तनयन सर्वांग तैसें आतम ज्ञानविना होय मोहमें लीन १ जैसें
आकाशके धूलि मेघादिक नही लागते तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञानके पापपु-
न्ये बहुरि पाप पुन्यका फल नही लागते १ यह लोकालोक जगत संसार
कूं स्वसम्यक् ज्ञानहैसो सहज स्वभावहीमें जाणताहै ताकी विधि नि-
षेद कोण प्रकार १ जैसें सूरवीर नरेश मलेंच्छादिक देसकूं जीत करिके
मलेंच्छादिक देसहीमें रहताहै तैसेंही स्वसम्यक ज्ञानी क्रोध मान मा-
या लोभ वा विषय भोगादिककूं जीत करिके तिसही विषय भोगादि-
कमें रहताहै १ तन्मांधि तत्स्वरूप होय करिके नहीरहताहै १ जैसें घटके
भीतर बाहिर मध्य आकाशहै सो घटकूं कैसें त्यागे अरग्रहणवी कैसेंक-

रे तैसैही येह जगत संसारके भीतर बाहिर मध्य स्वसम्यक् ज्ञानहै सो क्या त्यागै ऋर क्याग्रहण करै १ जैसै समुद्रकेउपर कलोलउपजतीहै बिनसतीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि समुद्रमै यह स्वप्ना समयको जगत उपजतोहै बहुरि जाग्रत समयको जगत बिनसताहै बहुरि जाग्रत समयकोजगत उत्पन्न होताहै ऋर स्वप्न समय कोजगत बिनसता है १ जैसै जन्मांध रतन सुवर्णादिकका आभूषण पहरनाहै सो वृथा है तैसेही स्वसम्यक् भाव सम्यक् ज्ञानानुभवकी परमाव गाढविना ब्रत शील तपजप नेमादिक संपूर्ण वृथाहै १ जैसै कोऊ पुरुष वृक्ष कुंप काडिकरिके स्वमुखवात् कहकेमे बंध मोक्षसें कब भिन्न होऊगा तैसैही बंध मोक्षसें भिन्न होएेकी इच्छा कर्नाहि सो स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञान रहित मूर्ख मिथ्या द्रष्टाहै १ भावाभाव विकारहै सो आपणे आपणा स्वभावहीतै है १ जैसै तोलमै गुंजा ऋोर सुवर्ण बरोबरहै परंतु मूल स्वभावमै बरो·

बरनाहीं तैसैही जगतओरजगदीस येह दोन्यूही बरोबरहै परंतु मूलस्व
रूप सम्यक्ज्ञान स्वभावमै दोन्यू बरोबरनाही १ जैसैबिन धूम्रकी अग्नि
सोभायमानहै तैसैही भ्रमरूपी धूम्र करिकेरहित स्वसम्यक्ज्ञान मयिस्व
भाव वस्तु सोभायमान भाषतीहै १ जैसेज्वरके अंतसमय अन्नप्रिय ला-
गनाहै तैसैही शुभाशुभ संसारके अंत स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानानुभव प्रि
यलागनाहै १ जैसे कुकर्दम राजा स्वर्गकूं त्याग करि पर वर्गकूं मिश्रि-
तहोय मर्णादिक दुःखकूं प्राप्त हुवो तैसैही कोहू स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञान-
कूं छोडकरिके परस्वभाव परवर्गसे आपकूं तन्मयिवत् समझताहै मान-
ताहै सो जन्म मरणादिक संसारका दुःख भोगताहै १ जैसे मही मंडलमैन
दीको प्रभाव एकताहीमै अनेक भांतनीरकी झरनहै पत्थरकोजोर तहां-
धारकी मरोड होय कंकरकी रवानी तहां आगकी झरनहै पवनकीझकोर तहां
चंचल तरंग उठै भूमिकी निंचान तहां भवरकी पडितहै तैसैही एक स्वस्वरूप

सम्यक ज्ञानमई आत्माहै बहुरि अनंत रसमयी पुद्गलहै तिन दोऊका पुष्प-सुगंधवत् तथा घट आकाशवत् संयोग होते संते बिभावकी भरपूरताहै १ स्वसम्यक ज्ञानानुभव हुये पश्चात् बी कुछ काल पर्यंत पूर्वकर्म प्रयोगात् सम्यक दृष्टि संसारमें भ्रमण करताहै कैसे जैसे कुंभकारको चक्रदंड कुंभकार आदि प्रसंगात् परिभ्रमण करैहै परंतु दंड कुंभकार आदिक कापसंगसे भिन्न हुये पश्चात् बी कुछ काल पर्यंत परिभ्रमण करैहै तैसे १ जैसे परजो तन मन धन वचनादिककूं अर इन का शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलकूं जाणताहै तैसेही पलट करिके आपकूं ऐसे जाणैके येह तन मन धन बचनादिककूं बहुरि इन तन मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै ताकूं मेंके द्वारा मैंजाणताहूं येह मेरा स्वस्वभाव सम्यक ज्ञानकूं जाणते नाहीं ऐसे आपकूं जाणै सोही कहीहै आपस मजकारधरनही जाणै दूजाकूं क्या समजावै भ्रमण करै संसारजगतमैं

हृदय हानमैनहींआवे १ तथा जबतक हैं अज्ञान तबीलक कुटंम कबीलाभा ईहैं ज्ञान हुवातो आनमा आपमैं आप समाहीहैं १ जैसेजैसी प्रीत प्रेम घर कुटुंब बेटा बेटीसे है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञान मायि परमानमासे तन्मयि प्रेम प्रीत अचल होय तो सहज विना यतन विना परिश्रम नहीं संसार रूभार रू मसै प्रेमराग टूटजाय १ जैसे सूर्यके सहजहीं अंधकारका त्यागहे तैसे ही स्वसम्यक् ज्ञान सूर्यके सहज स्वभावहीसे यह भ्रमजाल संसारहै ताका त्यागहै १ जैसे कोहू पुरुष स्त्रीकूं भोगताहै परंतु आप स्त्रीसे बहुरि ताका भाव क्रिया कर्म फलसे तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके स्त्रीकूं नहीं भोगताहै तैसे ही स्वसम्यक ज्ञानमायि परम ब्रह्म परमानमा पुराण पुरुषोत्तम पुरुषहै सो सर्व संसार भ्रम जाल मायास्त्रीकूं भोगताहै परंतु संसार भ्रमजाल मायासे जैसे अंधकारसे सूर्य भिन्नहै तदवत् संसार भ्रमजालमायासे भिन्न होकरि भोगताहै अर्थात् संसार भ्रमजाल मायास्त्रीसे आरना

का भाव क्रिया कर्म फलसे तन्मयि तत्स्वरूप होय करिके नही भोगनाहै १
जैसे स्त्रीबी पुरुषकूं भोग देतीहै सो पुरुषसे तन्मयि होय करिके नाही दे·
तीहै तैसेही संसार भ्रमजाल मायास्त्रीहै सो स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानम·
यि पुराण पुरुषोत्तमकूं भोग देतीहै सो पुरुषसे अलग होय करिके देतीहै
तन्मयि होय करिके भोग नही देतीहै १ जैसा काजलसे कालो कलंक तन्म
यिहै तैसेही तन मन धन बचनादिकसे बहार जेता तनमन धन बचनादि
कका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै तासे अज्ञान् तनमईहै १जै
से स्वच्छ दर्पणमे कृष्ण वस्त्रकी प्रतिछाया काली तन्मयिवत्सीदीखती
है सोतिस दर्पणकी नाही कृष्ण वस्त्रकीहै सोकृष्ण वस्त्रसे तन्मयिहै तैसे
ही स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव दर्पणमे येह द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मम
यि संसारकी प्रतिछाया कर्म कलंकमयि तन्मयि वत्सी दीखतीहै सो स्व
च्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणकी नाहीं द्रव्य कर्म भावकर्मनो कर्ममयि संसा

रहै ताकौहै सोनासै तन्मयिहै १ जैसै स्वच्छ दर्पणमै अग्नीकी प्रतिछाया तन्मयिवत्सी दीखतीहै तासैतो वो दर्पण तो गरम उष्ण नही होते वहुरि तिसही स्वच्छ दर्पणमै जल नीरकी प्रतिछाया दीखती है तन्मयि वत्सी तासै तो दर्पण शीतल नही होते तैसैही स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि दर्पणमै काम कुशीलादिक रागमयिकी छाया भावभाष होते संते तो रागमयि होते नाही वहुरि शील व्रतादिक वैरागमयिकी छाया भावभाष होते संते वै रागमयि होते नाही ऐसै स्वच्छ सम्यक् ज्ञानमयि स्वभावसे येह राग द्वेष तन्मयि नाही १ जैसै जलमे चंद्र प्रतिबिंबहै सो पकडवामै हस्तमे नही आवै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नो कर्मादिक बंधमै नही आते १ जैसै गोमटनाम पर्वत केऊपर बाहुबली राजसंपदा छोडकरिकै धनधान्य रूपवर्ण रतनादि वस्त्र पर्यंत बाह्य परिग्रह छोड करिके नग्नदिगंबर होय करिकै खडेरहे ध्यानमे ऐसा लीन रहेजो वज्र पानादिक-

स्वशरीरपै गिरे तोबी चलायमान नही हुये सर्वांगमे अिनके सर्प्श्रोर वृ-
क्ष लता लपटगई मौनचलरहित इत्यादि अवस्था पर्यंत पहोंचगयेयेक-
वर्ष पर्यंतरवडेरहे तथापि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानानुभवकी
परमावगाढतासे तन्मयि नही भये कारण ताके अंतः करणमे सूक्ष्म अनि
र्वचनीय येह वासनारही कि मै भरनकी प्रथ्वीके ऊपर खडाहूं पूर्वोक्त दि
शा अवस्थासै सर्वथा प्रकार भिन्नहूये तब स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी परमा
वगाढतासे तन्मयि सूर्य प्रकाशवत् मिले १ गुरु भ्रमजालसंसारसे सह
जही भिन्न करदेताहै १ जैसे जलकुंडमे जलकेऊपर तेलबिंदू तरतीहै तैसै
ही लोकालोकजगत संसारकेऊपर वा पंचभूत वा पुद्गल पिंड भाव राग द्वेष
केउपर तथा काम क्रोध कुशील आदिक जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया क
र्म है अरताका जैसा तैसा फलहै ताके सर्वकेऊपर स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य
सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव स्वरूप परमब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्ठी तरता

है सोके सो इस भ्रमजालसंसारमें डूबेगा वा कैसें गुप्त होवैगा १ जैसैज्यों
घटकहिये घीवको घटकोरूपनघीव नैसैत्यौंवर्णादिकनामसें जड़नात्व
हनजीव १ जैसोरखांडोकहियकनको कनकम्यानसंजोग ॥ न्यारोनि
रखनदेखिये लोहकहसबलोक ॥ २ ॥ जैसैकोहू अग्नीसे जलताहुवा
घरमैसें निकस करिकै बाहिर सड़क वा मारग चोगानमै खडोरहकरि पुका
रतोहैके यावस्तुजलतीहै अमुकीवस्तबलतीहै तासै कोहु कहकै तूं तो
नहीजल्यो नही बल्यो तूंतो नही जलताहै नही बलताहै तबवो कहकै मै
तोनहीजलताहूं नही बलताहूं मैंतो नही जल्यो नही बल्यो येह घरजलता
है बलताहै अर घरके भीतर अमुक अमुक वस्तू जलती बलतीहै तैसैही
कोहु मुमुक्ष गुरुपदेशात् इस भ्रमजाल संसारसे अलग होय करिकै ऐ
सै पुकारताहै कै वो मर्यो वो मरताहै मैतोनहीमर्यो नमरताहूं इत्यादि
कोहु मुमुक्ष तो ऐसा बोलताहै बहुरि जैसे बलता जलताहुवा घरमैसेको

हु निकस करिके बाहिर सड़क चोगानमै दिलकादिलमै येह विचार कर
ताहै के घरजलगयो बलगयो अर घरके भीतर शुभाशुभ अमुकी अमु
की वस्तुथी सोबी जलगई बलगई अब किसकूं क्या कहू यदि कहूतो·
क्या वह वस्तु अब अमुकी शुभाशुभ लाभ होएगे की नाही वास्ते बोल
एणा वृथाहै तैसेही कोइ मुमुक्षु गुरूपदेशात् भ्रमजाल संसारसे अल
गहुये पश्चात् विचार द्वारा देखताहै के पुद्गल धर्माधर्माकाश काल इन
पांचमे ज्ञानगुण स्वभावही से नाही अर मेरा स्वरूप स्वभाव है सो अब
गुरु कृपाद्वारा ज्ञानसे तन्मयिहै वास्ते बोलएणा वृथाहै ऐसे कोइ मुमु-
क्षु नबोलताहै १ जैसै ज्वरके जोरसे भोजनकी रुचिजाय तैसैही मोह
कर्मसे अपएणा स्वभाव सम्यक ज्ञानकूं येक तन्मयि समजताहै मानता
है कहताहै ऐसा मिथ्यादृष्टीकू स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानानुभव सूचक उ
पदेस प्रियनही लागताहै १ जैसे सूर्यका प्रकाशमै अनेक प्रकारकी शु

भाशुभ वस्तु काली पीली धोली हरित रतन दीप चमक दमक पाप अप
राध देणा लेणा दान पूजा भोग जोगादिककूं देखताहै अर सूर्यका प्र-
कासकूं अर सूर्यकूं नही देखताहै सो मूर्खहै तैसैही स्वस्वरूप सम्य-
क् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमें येह लोकालोक जगत संसार का
म कुशील क्रोध मान माया लोभादिक दीखताहै ताकूं तूं मिथ्या दृष्टी दे-
खतोहै अर पलटवा उलट हो करिके स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि स्वभा
व सूर्य परमातमाहै ताकूं नही देखतोहै सोही मिथ्यादृष्टीहै १ स्वभा
व सम्यक्ज्ञानहै तासे कोई वस्तु तन्मयि नाही उसी वस्तुका स्वभाव स-
म्यक् ज्ञानके त्यागहै १ मरजावै जलजावै गलजावै चलजावै इत्यादि
अनेक प्रकारका शुभाशुभ कष्ट करते संतेबी स्वस्वरूप स्वानुभवगम्यस
म्यक्ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीका प्रतक्ष्यानुभवकी
परमाव गाढता अचलताका अखंड लाभ नही होवै सतगुरु महाराजस

हज बिना परिश्रम शुभाशुभ कष्ट न करते संते ही सदा काल ज्ञान मयिजा
गतीज्योतिका तन्मयि मेल करादेताहै धन्यहै गुरू १ बेद कहिये केव-
लीकी दिव्यध्वनी सास्त्र कहिये महा मुनीका बचन तिनसेवी सो स्वस्व-
रूप सम्यक् ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति परब्रह्म मनस्यानुभव
नही जाणवामे आवै वहुरि वो सम्यक् ज्ञान मयि सदा काल जागतीज्यो
ति परमातमाहैसो पांचयंद्री षष्ठम मनसैवी मन स्सानुभव नही जाण-
वामे आवै वहुरि मनगुरु सहज स्वभावहीसैविना परिश्रमही सदा
कालजागतीज्योति ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीकी तन्मयि-
ता कर देताहै गुरु धन्यहै १ मनकूं वडे आश्चर्य होताहै क्याके पांचइंद्री
षष्ठम मनसै अर केवलीकी दिव्यध्वनीसे वहुरि वेद पुराण सास्त्र सूत्र प
ढणे वाचणेसेतो वो सम्यक् ज्ञान मयि सदाकाल जागती ज्योति नहीं-
जाण वामे आवै फेर गुरू कैसे दीखाते होंगे कैसें जनादेते होगे क्या कह

तेहोगे अरशिष्यबी कैसै समजता होगा हाहा हाहा हा गुरु धन्य है हाय खे- द गुरु नही होते तो मैं इस भ्रमजाल संसारसे भिन्न कैसै होता १ जैसै ये कके अंक बिना बिंदु प्रमाण भूत नाही तैसै येक गुरु विना त्यागीपणो पंडितपणो जो गी सन्यासी व्रत शील दान पूजा शुभाशुभ आदिक प्रमाण भूत नाहीं १ जैसे बीज राखि स्फल भोगवै जो किसाण जगमांहि तैसे स्वस्वरूपी सम्य क् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी है सो अपणा आपमें आपमयि स्वभाव धर्म कूं आपका आपमें आपमयि समज करिके पूर्व पुण्य प्रयोगात् विषय- भोगादिक का स्फल भोग नाहै १ जैसे सफेद काष्ट अग्नीकी संगतीसे क्ष- ष्ण काला होजाता है कोयला हो जाता है फेर कारण पाय पलट करिके अ ग्नीकी संगती करैतो कोयला जलबल करिके सफेद खाक होजाते है तै- सेही कोइ जीव विषय भोगादिककी संगती पायकरिके अशुद्ध होजाते है फेर पलट करिके गुरु आज्ञा प्रमाण विषय भोगादिक कूं अपणा स्व-

भाव सम्यक् ज्ञानसे भिन्न समज करिके पश्चात् विषय भोगादिकसे अ
नन्मयि होय करिके विषय भोगाकी संगति करै सोजीव परम पवित्र शुद्ध
होजातोहै १ वस्तु स्वभावमे येह शुद्धाशुद्ध है सो स्यात् कथं चित् प्रका
र १ स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभाव वस्तूसे तूं मे ये
ह वह च्यार शब्द तन्मयीनाही १ जैसे काहू सूर्यका प्रकाशमेसे येक अ
णुरेणु उठाय करिके अंधकारमे क्षेपदे तासै तो सूर्योदय कुछ कमती हो
तेनाही बहुरि कोइ अंधकारमेसे येक अणुरेणु उठाय करिके सूर्यका प्रका
शमे क्षेपदे तासै सो सूर्योदय बडी होते नाही तैसेही स्वस्वरूप स्वानुभव
गम्य सम्यक् ज्ञान सूर्योदयमेसे येह अनंत संसार निकस करिके कहू क
हांजानेरहनासै तो सोसम्यक् ज्ञान सूर्योदय शून्य कमती होते नाही ब
हुरि कहु कहांसे येह संसारहै तैसाही अर अनंत संसार स्वस्वरूपसम्य
क् ज्ञान सूर्योदयमे आय पडे तासै सोसम्यक् ज्ञान सूर्योदयकी वृद्धी हो

ने नाही १ जैसें येक दीपकके बुज जाएसै सर्व पूर्ण अनंत दीपक नहीं बुजते तैसैही येक जीवके मर जाएसै सर्व पूर्ण अनंत जीवसै तन्मयि जिनेंद्र मरते नाही १ सर्व भाव पदार्थ वा द्रव्यक्षेत्र काल भव भाव भोगजोग पाप पुन्यादिक संसार है तासें स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु तन्मयि नाहीं वास्ते स्वस्वरूप ज्ञान है सो सर्व संसार पाप पुन्य भाव पदार्थादिक जेता शुभाशुभ व्यवहार है ताको निश्चय स्वभावही सें त्यागी है स्वसम्यक ज्ञान है ताके परवस्तुका सहज स्वभावहीसें त्याग है कैसै जैसें यथानामकोपि पुरुषः परद्रव्यमिदमितिज्ञात्वात्यजति तथासर्वान् परभावान् ज्ञात्वा विमुंचति ज्ञानी १ जैसे नाटिककी रंगभूमि मैं कोउ स्वांगधारण करिकें नाचता है ताकूं कोहू ज्ञाता जाणलेके तूं तो अमुका है तब वो स्वांगधारक पुरुष नाटिककी रंगभूमि मेंसे निकस करिके यथावत् जैसाको तैसो होय करिकै रहता है तैसैही येह लोकालोकरं

गभूमि मै जीवाजीव पुष्पगंधवत् येक होय करिकै चोरासी लक्ष योनी मै नाचनाहै ताकूं सतगुरु ज्ञाता कहीके तूं तो जिस्मै ज्ञानगुण तन्मयिहै सोही तूंहै येह मनुष देव तिर्यंच नारकी या स्त्री पुरुष नपुंसकादिकस्वांगहै तूं स्वांग नाही बहुरि स्वांगका अर तेरा सूर्य प्रकाश वत् येक तन्मयिता नाही तूं इस स्वांगकूं जाणनाहै येह स्वांग तेरेकूं जाणने नाही तूं ज्ञानवस्तु है बहुरि येह मनुष्यादिक स्वांग है सो अज्ञान वस्तु है जैसे सूर्यांधकारका मेल नाही तैसे येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका अर तेरा येक मेल नाही जैसै सूर्य प्रकास इस पृथ्वीके ऊपर है ताका अर पृथ्वीका मेलहै तैसे हे ज्ञानसूर्योदय तेरा अर येह मनुष्यादिक स्वांगहै ताका मेलहै हे ज्ञान देख तूं सर्व मायाजाल संसार स्वांगसे व्यतिरेक भिन्नहै श्रवण करि समज मै कहनाहूं अंतमै दोय अक्षर आवै ताके द्वारा तेरा तूंही स्वानुभव लेणा कुमति ज्ञान १ कुश्रुति ज्ञान १ कुअवधि ज्ञान १ मति ज्ञान १ श्रुति ज्ञान

१ अवधिज्ञान १ मनपर्यंयज्ञान १ केवलज्ञान १ ऐसैं है ज्ञान तूं सर्वसं
सार स्वांगसे स्वभावहीसें भिन्न है तूं मनुषनाही तूं देवनाही तूं तिर्यंच नाही।
तूं नारकीनाही तूं स्त्रीपुरुषनपूंसक नाही बहुरि मनुष्यादिक अरस्त्रीपु
रुषनपूंसकका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्म फलहै सोबी तूं ना
ही तूं तो येक निर्मल निर्दोष निराबाध शुद्ध परम पवित्र ज्ञानहै जैसैं का
चकी हांडीमें दीपकहै ताका प्रकाश काचकी हांडीके भीतर बाहिर दोहु
तरफहै तैसैंही स्वसम्यक् ज्ञान दीपिकाको प्रकाश लोकालोकके भीत
रबाहिर दोहु तरफ येक सोहीहै १ जैसैं सुवर्णकी छुरीसैं बी कलेजा-
फट जातेहै अर लोहाकी छुरीसैं बी कलेजा फटजातेहै तैसैंही ज्ञान म-
यि जीवका पापसैं बी भला नाही होते अर पुन्यसैं बी भला नाही होते१
॥ ॥प्रश्न॥ ॥ पापपुन्यकरणाके नाही करणा उत्तर पापपुन्य
सैं अग्नी उष्णतावत् येक तन्मयि होय करिके पाप पुन्य कर्ताहै सो मूर्खमि

थ्या दृष्टी है बहुरि जैसे सूर्यसे अंधकार भिन्न है तदवत् कोई पापपुन्य
सै भिन्न होय करिकै पश्चात् पापपुन्य पूर्व कर्म प्रियोगात् कर्ता है सो ज्ञा
नी सम्यक् ज्ञान दृष्टी है १ जैसे ज्येष्ट वैशाख मासमै मध्यान्ह समय सू
र्यका प्रकाशमै मरूस्थल भूमिमै मृगमरीचकाजल दीखता है तदवत्
ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि सूर्यका प्रकाशमै येहलो
कालोक दीखता है ज्ञानकूं १ अभेदमै अनेकभेद अभेदसे तन्मयि जे
सै वृक्ष अभेद नाहीसै तन्मयि अनेकभेद मूल साखा लघुसाखा फल॰
पत्र फलमै अनेक फल अनेक फलमै अनेक वृक्ष येकयेक वृक्षमै अने
क लघुदीर्घ साखादिक अनंत भेद है तैसे ही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य॰
सम्यक् ज्ञानमयि जिनेंद्र मूलमै अनंत जीव राशी भेद है सो जिनेंद्रसे त॰
न्मयि अभेद है १ जैसे गंगा यमुनादिक नदी समुद्रसे मिली है तैसे ही गु
रूपदेस पाय करिकै सम्यक् दृष्टी जीव जिनेंद्रसै तन्मयि मिले है १ जैसे॰

येक सुवर्णसें अनेक नाम कडा मूंदडा कंठी दोरा असरफी कांचन कनक हेम आदिहै सो तन्मयिवत् है तैसेंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव वस्तु मै येह जिनेंद्र शिव शंकर ब्रह्मा ब्रह्म विष्णु नारायण हरि हर महेश्वर परमेश्वर ईश्वर जगन्नाथ महादेव आदि अनंत नाम तन्मयिवत् है १ जैसे कोई पुरुष ऽस्त्रीका कपडा वस्त्र आभूषणादिक धारण करिके अर्थात् सुंदर देवांगना वत् बणकरिकै नाटिककी रंगभूमिमे नाचणे लग्यो तत् समय नाटिक देखणे वाले पुरुष मंडलीकहताहै के होहो हो क्या सुंदर स्त्रीहै ऐसा वचन सभा मंडलीका श्रवण करिके सो स्त्री स्वांग पुरुष आप अपणे दिलमें जाणताहै मानताहै के में ऽस्त्री मूलहीसें नाही येह सभामंडलीके पुरुष मेरा निजस्वभावगुण लक्षणतो जाणते नाही बिना समजसे येह मेरकूं ऽस्त्री कहताहै मानताहै जाणताहै सो वृथाहै तैसैही स्वस्वभाव सम्यक ज्ञानमयि सम्यक्-

दृष्टी आपअपणा अंतः करणमै येह निश्चय समजताहै मानताहै के ये
ह बहिर दृष्टिवान् मेरेकूं स्त्री पुरुष नपूंसकादिक मानतेहै कहताहै जा
ननाहै सो दृथाहै मेरो स्वभाव सम्यक्ज्ञानहै सोतो नःस्त्रीहै न पुरुषहै
न नपूंसकादि कोई बी किंचित् मात्र स्वांग मेरा स्वरूप सम्यक् ज्ञानसे त-
न्मयि नाही १ जैसै येक पुरुषतो निर्मल नीरका भस्या तलावके किनारे
तिष्ठेहुये इच्छाप्रमाण निर्मल नीर प्रतिदिवस पीय करिकै सुखीहै बहु
रि जो कोई पुरुष तलावसै लक्षयोजन भिन्न येकक्षीरोदधि समुद्र निर्म
ल नीरको भस्योहै ताके किनारे तिष्टेहुयो इच्छाप्रमाण निर्मल नीर पीय
करिके सुखीहै तैसेही संसारमे पूर्वकर्म प्रयोगात् कुछ किंचित् संख्या
प्रमाण कालपर्यंत रहणेवाले सम्यक् दृष्टीका बहुरि संसारसे भिन्न मो
क्षहै तामै रहणेवाले स्वसम्यक् ज्ञानमयि सिद्ध परमेष्टीका अर्थात्
दोहूका सुख सम समानहै २ जैसे दुग्धका भस्या कलसमै येक नील·

मणी रत्न डालदीजिये तब दुग्धका अर नील मणी रत्नका रंग अर दुग्ध-
का रंग येकसाही नीलमणी रतन तेजवत् समान भाष होताहै तैसैही-
ज्ञान ज्ञेय येकसा भाष होताहै परंतु ज्ञान अज्ञान कदाचित् कोई प्रकार-
बी येक तन्मयि होते नाही १ जैसे माटीका घटमें घृत भर्यो होय तिसकार-
ण तिस घटकूं घृत घट कहतेहै कहो भला परंतु घट माटीको माटीमयिहै-
माटीका घटके अर घृतके अग्नीउष्णतावत् येक तन्मयिता हुई नहोवैगी न-
है तैसैही ज्ञानमयि जीवके अर अजीवज्यो तन मन धन वचनादिकके अर
जेता तन मन धन वचनादिकका शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै ताके पर
स्पर सूर्य प्रकासवत् नयेक तन्मयिता हुई अर नहै नहोवैगी १ जैसे ला-
ल लाखके ऊपर लग्यो लाल रतन तार तनमें लाखकी लाली अर रतनकी-
लाली दोहु लाली येकसी तन्मयिवत् दीखतीहै परंतुहै वह दोहु लाली
भिन्नभिन्न ताकूं असल जहोरी होताहै सो दोहू लालीकूं भिन्नभिन्नसम

जनाहै माननाहै कहनाहै तैसैंही आकास अमूर्ति निराकार अजीव म-
यिहै ताका बहुरि स्वसम्यक ज्ञानमयि अमूर्ति नीराकारजीवमयि है
ताका परस्पर अमूर्ति अमूर्तिपणा बहुरि निराकार नीराकारपणा-
येक तन्मयिवत् मिथ्या दृष्टीकूं भाष होताहै परंतु सूक्ष्म दृष्टिवान्
जो स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानी सम्यक दृष्टी दोहु अमूर्ति
कूं बहुरि दोहु नीराकारकूं भिन्नभिन्न समजनाहै माननाहै कहनाहै
१ परमातमा स्वसम्यक ज्ञान मयि हैसो आदि अंत पूर्ण स्वभाव सं
युक्त है येह परसंजोग पररूप कल्पना रहित मुक्त है ॥ प्रश्न कैसैं
है उत्तर श्रवणकरो जैसैं प्रथम आदिमें पूर्णचिन्ह बिंदु है सोकी
सोही अंतमेंबी पूर्णचिन्ह बिंदुहै देखो स्वानुभव दृष्टीके द्वारा आदि
०१२३४५६७८९१० अंत १ बहुरि जैसैं सूर्य प्रात काल आदि
है सोही सूर्य सायंकाल अंतहै तो क्या मध्यान्हकाल नहीहै अर्थात् है

तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्य सदा कालहै १ " जैसैजैसोपी
वैपाणी तैसै तैसी बोलै वाणी " तैसेही जिनकूं गुरूपदेस द्वारा आप
का आपमैं आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी सामकी प्राप्ती अचल
हुई सो स्वमुखवान् ऐसै बोल्तांहैके स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै
सोही सोहं प्रश्न ऐसैंतो बहुतनसैं बाल गोपाल बोल्ताहै उत्तर
जैसै रात्रीसमय येकस्वान मन्यस चोरकूं देख करिके भूंक भूंक बोल
ताहै ताका शब्द श्रवण करिके सहर मे बहुतसे श्वान तदवत् ही भुंक-
भूंक बोल्ताहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानानुभव ज्ञानीका स्वमुखवान् श-
ब्द श्रवण करिकै सम्यक् ज्ञानानुभव रहित मिथ्या दृष्टीबी ऐसैहीबो
लताहै केहमही परमातमाहै मिथ्यादृष्टीकूं येह निश्चय नाहीके श-
ब्दके अर सम्यक् ज्ञानीके परस्पर सूर्य अंधकार कासा अंतरभेद है १
बहुरि " जैसैजैसोखावै अन्न ताकै तैसो होवैमन्न " तैसैही किसीमुमु

ष्यकूं गुरुपदेस द्वारा स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञानानुभवकी प्राप्तकी प्राप्ति ताकी अचल अवगाढता हुई ताको मन ऐसो हो जातो है. के ऊपरतो व्यवहार करै पण भीतर स्वप्नसमानजूं भाषै तथा ताको मन ऐसो हो जातोहैके मेरो मनहै परंतु मैं मन नाही बहुरि मनका जेता शुभाशुभ व्यवहार है सोबी मै नाही अर जेता शुभाशुभ व्यवहारका सुख दुःख फलहै सोबी मैनाही बहुरि मैहै सो येक येह शब्दहै वास्तै मै शब्दकूं अर मनादिककूं जाणनाहै सोही सोहं अत्र स्थल पर्यंत मनहो जानाहै. १ जैसै मैल्या मल मूत्रमै रतन पड्योहै ताकूं लेणा जोगहै मल मूत्रकी मैलाई दुर्गंध तासै अपणा हंस गिलान भाव धारण करिकै. रतनकूं नही ग्रहण कर्ताहै सो मूर्खहै तैसैही तन मन धन वचनादिक. मै पड्योहै स्वसम्यक् ज्ञान रतन ताकूं कोई तन मन धनादिकका शुभाशुभ विकार देख करिकै ताकी गिलान धारण करिकै स्वसम्यक् ज्ञान

रतनकूं तन्मयी धारण नहीं करताहै सो मूरख मिथ्यादृष्टीहै १ जैसे कोई कहींके सूर्य कहां रहताहै ताको उत्तर एसा है के सूर्य सूर्यके भीतर तन मयी रहताहै तैसेही स्वसम्यक्‌ज्ञान सूर्यहै सो स्वसम्यक्‌ज्ञान सूर्यही मै रहताहै निश्चयनयात्‌ १ जैसे पुष्पमे सुगंधहै तथा जैसे तिलमैंतै लहै वा जैसे दुग्धमें घृतहै तैसेही यह लोकालोकहै तामे तथा तन मन धन वचनहै तामें बहुरि तन मन धन बचनका जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महै तामें अतन्मयि सहज स्वभावहीसें स्वसम्यक्‌ज्ञानहै १ हे मुमुक्ष मंडलीहो स्वसम्यक्‌ज्ञानसें तन्मयि होयकरिके देखो कोबि धिको निषेध १ जैसे दर्पणमें काला पीला लाल हरित आदि अनेक रंग बिरंग बिकार दीखताहै सो दर्पणका तन्मयि नाही तैसेही स्वच्छ स्वसम्यक्‌ज्ञानमयि दर्पणमे यह राग द्वेष क्रोध मान माया लोभ काम कुशीलादिकका बिकार तन्मयि सा दीखताहै सो स्वच्छ सम्यक्‌ज्ञा

नमयि परमातमाका नाही १ जैसै नवका रंगरंगीलीहै सोबी पार उतार देनीहै बहुरि रंगरंगीली नवका नहीहै सोबी पार उतार देनीहै तैसैही स्वानुभव ज्ञानमयि कोहू गुरुहै सो न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य छंदादिक युक्तहै सोबी संसार सागरसे पार उतार देनाहै बहुरि कोहू गुरुहै सो स्वसम्यक् ज्ञानानुभवि परंतु न्याय व्याकर्ण कोश अलंकार काव्य छंदादिकरहितहै सोबी संसार सागरसे पार उतार देताहै १ जैसे गोरस अपणे दुग्ध दही घृत माखण आदि पर्यायसे भिन्न नाही बहुरि दुग्ध दही घृत माखण आदिकहै सो गोरससे भिन्न नाही तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमासे स्वरव स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिक भिन्न नाही बहुरि स्वरव स्वसत्ता चेतन जीव ज्ञानादिकहै सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा भिन्न नाही १ जैसे नारयो धूलीकूं धोवणेवालो स्वर्णकी कणिकाकूं नही जाणताहै तो इच्छा आवै जेता कष्ट करो धू

ली धोवणेका उनकूं कदाचित्‌बी स्वर्ण लाभ होते नाही तैसैही कोई मुनी साधू सन्यासी भोगी जोगी ग्रहस्ती आदिकोई स्वसम्यक्‌ ज्ञानमयि परमातमाकूं तो जाणते नाही। अर व्रत जप तप ध्यान दान पूजादिक-का बहुप्रकार कष्ट करते है तो करो उनकूं कदाचित्‌बी स्वसम्यक्‌ ज्ञानमयि परमातमाको लाभ होते नाही १ जिस जती व्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस वा भोगी ग्रहस्ती आदि भेषमै स्वसम्यक्‌ ज्ञानानुभव अचल हुवा सो जती व्रती जोगी जंगम मुनी परमहंस भोगी ग्रहस्ती धन्यहै धन्यहै धन्यहै सहस्त्रवेर धन्यहै १ जैसै अग्नि द्रव्यहै तामै उष्णताका गुणहै जो इस अग्नि उष्णगुणविषै भिन्न भई तो इंधनकूं जलाय नशकै जो कदाचित्‌ अग्नीसै उष्णगुण भिन्न होय तो काहे करि जलावै अग्नी भिन्न हुई तो उष्णगुण किसके आश्रय रहै निराश्रय हुवा वहबी जलावणेकी क्रियातै रहित होय गुणगुणी आपसमै जुदे हुये कार्यका

रणको असमर्थ है जो दोहूकी येकता हुई तो जलावणेकी क्रिया विषै समर्थ होय तैसैंही सतगुरु उपदेसात् केवल ज्ञान गुणीका अर ताकागुण देखणा जाणनेका अर्थात् दोहूकी येकता तन्मयिता होय तब सहज स्वभावहीसे अष्टकर्म काष्टकूं जलावणेकी क्रिया विषै समर्थ होय १ जैसैं सूर्य मेघपटल करिकै आच्छादित हुवा प्रभारहित कहियेहै परंतु सो सूर्य आपणे स्वभावतैं तिस प्रभासैं त्रैकाल भिन्न होय नाही तैसैंही स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्यके करम भर्म वा द्रव्य कर्म भावकर्म नो कर्म स्वरूपी बादल पटल करि आच्छादित हुवा ताकूं ज्ञान प्रभारहित कहियेहै परंतु सो स्वसम्यक् केवल ज्ञानमयि सूर्य आपणा आपमैं आपमयि आपकागुण स्वभाव ज्ञान प्रकाशसे त्रैकाल कोई प्रकार बी भिन्न होय नाही १ जैसैं पाचक होतीसीजती हांडीमैंसे येक चावल देखिये तो सीजगयो तो सी जताहुवा सर्व चावलाको निश्चयानुभव हो

जाताहै के सर्व चावल सींजगये तैसेही अनंत गुण मयी स्वसम्यक् ज्ञा
न परमातमा ताकायेकबी गुण को किसी कूं गुरुपदेसद्वारा अचला
नुभव हुवो तो निश्चय समजणाके जेता परमानमाका गुण है ते तास
वगुणाका ताकूं अचलानुभव हो चुक्या १ जैसे घटके प्रथम कुंभ·
कारहै तैसे तनमन धन वचनके बहुरि जेता तन मन धन वचनका शु
भाशुभ व्यवहार क्रिया कर्मके प्रथम आदिनाथ स्वसम्यक् ज्ञानम
यि परमातमाहै १ जैसें कुंभकार घटचक्रादिकसे तन्मयि होय करि·
के घटकर्म कूं नही कर्ता है तैसेही स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहै
सो तन मन धन वचनादिकमें तन्मयि होय करिके शुभाशुभ व्यवहार
क्रिया कर्म नही कर्ताहै १ जैसे नय दोयहै येक द्रव्यार्थिक येक पर्या
यार्थ जैसे सुवर्ण सुवर्णत्व करिके नउपजेहै नाविनसैहै बहुरि ति
सहीसे तन्मयि कटि काटि कादिक पर्याय बिनसैहै उपजेहै सोबीक

थंचित् प्रकार तैसैंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि प
रमातमा स्वस्वभावमें नउपजैहै नविनसैहै बहुरि तिसहीसें तन्मयि
जीव चेतनादिक पर्याय है सो उपजैहै विनसैहै सोर्घी कथंचित्प्र
कार १ जैसैं समुद्र अपणे जलसमूह कारि उत्पाद व्यय अवस्थाकूंना
हीं प्राप्त होता अपणे स्वरूप कारि स्थिर रहैहै परंतु च्यारही दिशा
नकी पवन कारिकै कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै तोवी सदा नित्य टं·
कोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै तैसैंही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञा
नार्णव केवल ज्ञानमयि समुद्र अपणे स्वगुण स्वभाव समरसनीरस
मूह कारि उत्पाद व्यय अवस्थाकूं नाहीं प्राप्त होता अपणे स्वरूपक·
रि स्थिर रहैहै परंतु मनुष देव तिर्यंच नारकी यही च्यार दिशानकी पव
न करिकै संकल्प विकल्प राग द्वेषादिक कल्लोलका उत्पाद व्यय होयहै
तोवी सदा नित्य टंकोत्कीर्ण जैसाहै तैसाहै १ जैसैं सुनार आभूषण

दिक कर्मको कर्ताहै परंतु आभूषणादिक कर्मसे तन्मयि तत् स्वरूप-
होयकरिकै नाही कर्ताहै तैसैही आभूषणादिक कर्मका फलकू त-
त्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै तैसैही स्वसम्यक्स्वानु
भव ज्ञानी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म कर्ताहै परंतु तन्मयि तत्स्वरू
प होय करिकै नाही कर्ताहै तैसैही संसार का शुभाशुभ कर्म का फल
सै तत्स्वरूप तन्मयि होय करिकै नाही भोक्ताहै १ अधुनाचेत् १
वस्तु का स्वभाव वचनमैं तन्मयि नाही अर्थात वचन गम्य नाही लोका
लोककूं बहुरि जेता लोका लोकमैं अपणे अपणे गुण पर्याय सहित
द्रव्य अचल अनादिसै जैसाहै तैसा ताकूं येकही समयमैं सहजही नि
राबाधि पूर्वक जाणताहै देखताहै सोही सर्वज्ञ देवहै ऐसा सर्वज्ञ देव
सै तन्मयि होयकरि तिसही का स्वस्वानुभव ज्ञानमै लीनहै सो संदेहसं
का उपजावने नाही १ जैसैं चंदन वृक्षके जहर विषमयि सर्प लपटार

हताहै तोबी चंदन अपणा गुणस्वभाव सुगंधपणा शीतल पणा कूं-
छोड करिकै जहर विषमयि विषवत् होने नाही तैसैही स्वसम्यकदृ
ष्टीके पूर्वकर्म सयोगात् शुभाशुभकर्म लाग रह्याहै तिसकरिकै तिस
सै तन्मयि होतेनाही १ जैसै सूर्यके भीतर सूर्यसै अंधकार तन्मयि
नाही तैसैही स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक ज्ञानमयि सूर्यके भी
तर अज्ञान तन्मयिनाही १ जैसे जिसनगरमै अज्ञानी राजाहै ताके
ऊपर केवलज्ञानी राजा होसक्ताहै बहुरि जहां केवलज्ञानही राजाहै
ताके ऊपर कोईबी अधिष्ठाता नसंभवै अर्थात तैसैही स्वस्वरूपी-
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि त्रैलोक्यनाथ परमातमाके ऊपर ता
सै अधिक कोई नहै नहोवैगा नकोई हुवा १ जहां भरम होताहै तहां
ही भरम नाहीहै जैसे सरल मार्गमै सायंकाल समयकोहू रस्सीकूं
पडीदेख करिकै संकावान हुवो के हाय सर्पहै तबकोहू गुरुकेहीके है·

बत्स भय मति करै येह तो रस्सीहै सर्पनाही १ तन मन धन बचनसे बहुरि तन मन धन बचनादिक का जेना शुभाशुभ व्यवहार किया कर्महै तासे तत्वरूप तन्मयि होणेकी जिसके स्वभावसेही इच्छा नाही सो नर ज्ञानीहै १ कर्तासे होवे तिसको नाम कर्महै दान पूजा व्रत जप तप सामायिक स्वाध्याय ध्यानादिक शुभकर्महै पाप अपराध चोरी हिंसा कुशीलादिक अशुभ कर्महै अर्थ येहके शुभाशुभ कर्मको कर्ताहै सो शुभाशुभ कर्मसे अग्नी उष्णतावत् येक आपकूं तन्मयि समज करिके मानकरिके कर्ताहै सोतो मिथ्यादृष्टीहै बहुरि शुभाशुभ कर्मसे आपकूं सर्वथा प्रकार भिन्न समज करिके फेर शुभाशुभ पूर्व प्रयोगात् कर्मकर्ताहै सो स्वसम्यक्दृष्टीहै १ जैसे सूर्यके भीतर प्रकास तन्मयिहै तैसे जिसवस्तुमे देखणे जाणने का गुण तन्मयिहै सोही वस्तु दर्शणहै और वस्तकूं दर्शण माननाहै समजनाहै कहनाहै सो मूर्ख मिथ्यादृष्टीहै १ जहातलक

घरमे अंधकारहै तहांही प्रकाशहै क्यूंके प्रकाशनही होतेतो अंधकार
की खबर कैसे होती कैसै जाणते जिसका प्रकासमै सूर्य दीखताहै
अर अंधकार आदि दीखताहै सोही स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्-
ज्ञानमयि परब्रह्म परमातमा सिद्ध परमेष्टीहै १ जैसेंजहां प्रथीकेऊप
र कूप खोदैगा तहांही पाणी नीर निकलताहै तैसैही तनमन धन बच
नादिकके भीतर बहुरि तन मन धन बचनादिकका जेता शुभाशुभव्य
वहार क्रियाकर्महै ताके भीतर आकाशवत् व्यापक स्वसम्यक् ज्ञानमयि
ब्रह्मकूं कोई खोजेगा तो प्रगट प्रसिद्ध होताहै १ शरीर पिंडसे स्वसम्य
क् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होते तो कदाचित् कोई प्रकारवी कोइवी
नहीमरते तथा येह लोकालोक जगत संसार दीखताहै तासे सोस्वस
म्यक् ज्ञान मयि परमातमा तन्मयि होतेतो हरकिसीकूं दीखतो होहो·
हो ऐसा अपूर्व विचारकी पूर्णता श्रीमद्गुरूके चरणकी शरण बिना नहीं

होगी १ जैसै जहालग पक्षी के दोय पक्ष तन्मयिहै तहांपर्यंत पक्षीइ
दर उदर भ्रमनाहै उडनाबैठनाहै बहुरि जिससमय तिस पक्षीकी दो
हुपक्ष खंडन निर्मूल होजाय तब सो पक्षी इदर उदर भ्रमण करिरहित
होय जहांकोतहां स्थिर अचल रहताहै तैसैही जहां पर्यंत जीवके निश्च
य व्यवहार की तन्मयिताहै अवगाढताहै तहा पर्यंत च्यारगती चवरासी
लक्षयोनिमै भ्रमण कर्ताहै बहुरि जिस समय जिस जीवके काल लब्धी
पाचक द्वारा तथा सतगुरूके उपदेस द्वारा निश्चय व्यवहारकी पक्षखंड
न निर्मूल होवैगी तत्समयही च्यारगति चवरासी लक्ष योनीमै भ्रमण
कर्नै रहित होय जहांके तहां अचल स्थिर रहताहै १ जैसै उडद मुंगकी
दोय दाल हुये पश्चात् मिलते नाही अर बोवैतो उगते नाही तैसैही जीवा
जीवकी जहां सर्वथा प्रकार भिन्नताहै गुरुप्रसादात् तहां जीवाजीवकी
तन्मयिता येकतानाही दोहूकी येकतासे संसार उत्पन्न होतेथे सो अब

होएणेको नाहीं १ जैसै अंधाके स्कंधाके ऊपर बैठे पांगुलो इहां विचार करो देखो अंधोतो चलताहै अर पांगुलो देखताहै तैसैही अंधवत् येह संसार चक्र ताकेऊपर स्वस्वरूप स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान सो पांगुलावत् संसार चक्रके ऊपर बैठेहुवो केवल देखता जाणताहै १ देखणा जाणना येह निज धर्म केवल ज्ञानकाहै १ प्रश्न संसारकूं चक्र संज्ञा कैसैहै उत्तर जाग्रतमै येह संसार दीखताहै सोही पलट करिके स्वप्नामै दीखताहै बहुरि जो संसार स्वप्नामै दीखताहै सोही पलट करिके जाग्रतमै दीखताहै ऐसै येह संसार चक्र फिरताहै प्रश्न येह संसारचक्र किस भूमिका केऊपर फिरताहै उत्तर अलोकाकाशमै अणु रेणुवत् येह संसार चक्र आप आपहीके आधार जल कल्लोलवत् फिरताहै प्रश्न सुसप्ति और तुर्या समय संसारचक्र कहां रहताहै कहा फिरताहै उत्तर येक पुरुष सुलोचन अर्थात् ताकेनेत्र तोहै परंतु ता

के तनमन धन वचनादिक मूलहीसें नाही ताके आगें येह संसार चक्रभ
मणयुक्त नाचताहै स्वलोचन पुरुष देखताहै परंतु कहता नाही १ जै
सैं कमती ज्यादा भोजन जीमणेसे वेमारी दुःख होताहै तैसेंही कोहु-
संसारका विषय भोग कमती ज्यादा भोक्ताहै कर्त्ताहै सोही दुःखी वे-
मार होताहै अर्थात जहां बराबरका व्यवहार क्रिया कर्म है तहां बिरो
ध भावनसंभवै १ शब्दातीतका शब्द सूचहै १ जो वस्तु निरंतर है तामे-
विधि निषेधको अवकाश कदापि तासें तन्मयिनसंभवै १ जैसें वैद्य पु-
रसहैसो विषकूं उपभोगता संता मरणकूं नही प्राप्त होताहै कारण ति
स वैद्यके समीप दूसरी विषनासनी दवाई है तैसेंही जिसके समीपस्व
सम्यक्ज्ञान तन्मयिहै सो कर्मजनित पूर्व प्रयोगात् विषय उपभोगभो
गते संतेभी मरते नाही १ जैसें सुवर्ण अग्नीसें तप्त होतेसंतेबी अपणा
सुवर्ण पणा आदिगुण स्वभाव छोडते नाही तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञान-

दृष्टी पूर्व कर्मप्रियोगात् कर्म वेदना दुःखरूपी अग्नी में तप्तायमान होते संतेबी अपणा स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानादिगुण छोडते नाही १ जैसे जलती हुई तेलकी कढाई मे अपूपायन् सूर्यका प्रतिबिंबजलताहै बलता है तोबी आकाशमे सूर्यहै सो नजलता नमरता तैसैही संसारमे स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि परमातमा मरताहै जनमताहै तोबी स्वस्वभावे कदाचित् कोई प्रकारबी नमरता नजन्मता १ जिसकी गुरूपदेसात् स्वभाव दृष्टी अचल हुई सो सहस्र वेर धन्य वाद योग्यहै १ जैसे मदिराके तीव्र अतिभावकूं जाण करिके तिस मदिराकूं कमतीबी नही पीताहै अरज्यादाबी नही पीताहै इस प्रमाण मदिरा पीवते संतेबी मदोन्मत्त नही होते तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी मोह मदिराके तीव्र अतिभावकूं जाण करिके तिस मोह मदिराकूं कमतीबी नही ग्रहण कर्ताहै बहुरि अधिकविशेषबी नही ग्रहण कर्ताहै इस प्रमाण मोह मदिराकूं स्व

सम्यक् दृष्टी ग्रहण कर्ने संनेवी स्वसम्यक् ज्ञान स्वभावकूं छोड करिकें मो
ह मदिरासैं अर्थांउष्णतावन येक तन्मयि होते नाहीं १ जैसें वृक्षके ल
गेहुये फल येकवेर परिपक्क होय परि जायनो वो फल फेर पलट करिकें
उस वृक्षके नाही लागतो तैसेंही कोई जीव काल पाय करिके गुरुपदेस
द्वारा अपणा आपमें आप मयि स्वसम्यक् ज्ञानानुभव अचल परिपक्क
पूर्णानुभव होय करिकें येकवेर संसार जगनसें भिन्नहुये पश्चात् फिर प-
लट करिकें संसार जगनसें तन्मयि होते नाहीं १ ओरवी तीन दृष्टांत-
द्वारा स्वसम्यक् ज्ञानानुभव लेणा जैसें दहीमेंसें माखण घृत भिन्नहुये
पश्चात् पलट करिकें दहीमें मिलतो नाही १ वृक्षकी जड उपडे पश्चात् कु
छ काल पर्यंत फल फूल पत्ता हारिनरहताहे परंतु दस पांच दिवसमें स्व
यमेव हि सुष्क सूक जाताहे १ चणीक चीणा भूजदिये पश्चात् बोवें
तो उगते नाही अर खावें तो स्वाद लागते १ तिलमेंसें तेल निकसे पश्चा

न् पलट करिके नही मिलने १ इत्यादि॰ जैसै समुद्र है सो बहुतसे रतन आदि अनेक वस्तुसे भस्या होय है सो येक जल करि भस्याहै तोहू ताये निर्मल छोटी वडी अनेक लहरी कल्लोल उठेहै तेसर्व येक जलरूप हीहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान मयि समुद्र है सो रतन त्रय सम्यक् दर्शण सम्यक् ज्ञान सम्यक् चारित्र येही तीनरतन आदि अनेक शुभाशुभ शब्दादिक वस्तुसे भस्या होय है सो येक समरस जल करि भस्याहै तो॰ हू तामै निर्मल कुमतिज्ञान कुश्रुतिज्ञान कुअवधिज्ञान बहुरि मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मन पर्ययज्ञान केवलज्ञान आदि येही छोटी बडी तामै अनेक लहरी कल्लोल उठेहै तेसर्व येक स्वसम्यक् ज्ञानमयि॰ स्वसमरस जल नीरहीहै १ जैसे लोद फिटकडी का पुटबिना मजीठरंगमै वस्त्र भीजोरहै चिरकाल तोहू वस्त्र सर्वथा नही होवै लाल तैसैहीजीव संसारमैहै चिरकालसेहै सो सर्वथा प्रकार कदाचित् कोई प्रकार वीआ

पणा जीव स्वभाव छोड करिकै अजीव सै येक तन्मयि होते नाही १ जैसै निश्चय करि स्रुवर्ण है सो कर्दमके बीच पड्या है तोहु कर्दम करिके तन्म-यि लिप्त होते नाही स्रुवर्णके तन्मयि काई लागती नाही तैसै ही स्वसम्य क् दृष्टी निश्चय करि संसार कर्दमके बीच पड्या है तोहु ताके रागद्वेष रूपमै लाई तन्मयि लिप्त होता नाही १ जैसै शंख श्वेत स्वभाव है सो शंख सचित्त अचित्त मिश्रित अनेक प्रकार द्रव्यनकूं भक्षण करै है तोहु ताका श्वेत भाव है सो कृष्ण करणेकूं समर्थ नाही हूजिये है तैसै ही स्वसम्यक् दृष्टीका स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभाव है सो सचित्त अचित्त मि श्रित अनेक प्रकार द्रव्यनका भोग उपभोगकूं भोगता संताबी तोहु ता का स्वसम्यक् ज्ञानमयि विशुद्ध स्वभाव है सो अजीव अचेतन अज्ञा-नमयि भाव करणेकूं समर्थ नाही हूजिये है १ जैसै सहस्रमण काच खंडमै येक असल रतन पड्यो है तोबी सो असल रतन अपणा रतन-

स्वभाव गुण लक्षणादिककूं छोड करिके तिस काच खंड वत् होते नाही तैसैंही स्वसम्यक् दृष्टि अनंत अज्ञान मयि संसारमै पड्यो है तोभी अपणा स्वसम्यक् ज्ञान स्वभावकूं छोडकरिके संसार अज्ञानमयिसे तन्मयि तत्स्वरूप होतेनाही १ जैसे दुग्ध जलमिले हुयेकूं हंस जल छोडकरिके दुग्धकों ग्रहण कर्ताहै तैसेही क्षीर नीर वत् मिले येह संसार अर स्वसम्यक् ज्ञान ताकूं स्वसम्यक् दृष्टी हंस अज्ञान मयि संसारकूं छोड करिके स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावकूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसे हस्तीका मस्तगमै मांस अर मोती मिलेहै ताःमै काग पक्षीहै सोतो मोती छोड करिके मांस ग्रहण कर्ताहै बहुरि हंस पक्षी है सो मांस छोड करिके मोती ग्रहण कर्ताहै तैसैही मिथ्या दृष्टीतो स्वसम्यक् ज्ञान गुण छोड करिके अज्ञानकूं ग्रहण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टी अज्ञान औगुणकूं छोड करिके स्वसम्यक् ज्ञानगुण

कूं ग्रहण कर्ताहै १ जैसैं परवस्तकूं परवस्तसैं तन्मयि होय करिकै परवस्तकूं ग्रहण कर्ताहै सो निश्चय तस्कर चोरहै सोई दर उदर शंका सहित भ्रमण करैहै बहुरि अपणा आपमैं आपमयि आपही काध न ग्रहण कर्ताहै सो साचो सत्य निश्चय साहुकार है सो इदर उदर निःशंकासहित भ्रमण कर्ताहै बेफिकर तैसैही मिथ्या दृष्टीहै सो तो तस्कर चोरवत शंकासहित संसार चारगति चौरासी लक्ष योनी मे भ्रमण कर्ताहै बहुरि स्वसम्यक् दृष्टीहै सो जैसैं कुंभकार का चक्रके ऊपर अचल बैठी हुई मखी परिभ्रमण करैहै तैसैही सत्य साहुकार वत् स्वसम्यक् दृष्टीहै सो निःशंक बेफिकर संसार च्यारगति चौरासी लक्ष योनीमे भ्रमण करैहै १ जैसैं येक पुरुष नदीके तटपर खडो हुवो तीव्र वेगसैं वहताहुवा नीरकूं एकाग्रह ध्यान करिकै देखैया तिस कारणसैं उसकूं येह भ्रांति हुई के हम भी वहेजाते है पुकारता था

दुःखीथा ताकूं दयालमूर्तिसद्गुरू कहताहै के तूं दुःखी मति होतूं नही बहताहै येह तो नदीकोनीर बहताहै अबतू इसदुःखसैं सर्वथा प्रकार भिन्न होणेके अर्थ सर्वथा प्रकार बहताहुवा नदीकानीर कूंमति देखै तूं तेरी तरफ देख तब गुरू आज्ञा प्रमाण भ्रांतिमे बहता पुरुष बहताहुवा नदीकानीरकूं देखणा छोड करिके अपणा आपही तरफ देख करिके आपकूं अचल नही बहतासमज करिके बहुत खुसी आनंदहुवो अर गुरुके चरणमै नमोस्तु करिके कहीके हेगुरुजी मै बहेजातोथो सो आपमोकूं बचादियो तैसेंही गुरु संसारमे बहते हुयेकूं बचादेताहै १ सारांस हे मुमुक्षु जनहो बहताहुवा भरमजाल संसारसे बचणेकी तुमारेको इच्छा है तो इस भ्रमजाल संसारकूं देखणेके अर्थ तो तुम जन्मांध वत होजावो बहुरि तुमारा तुमसे तन्मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मयि स्वभावहे ताकूं देखणे

केअर्थ तुमसद्दम्म सूर्यवत् अचलहोजावो १ जैसै रसोई पाकसस्थान मैं आटो दाल चावल घृत सर्करा गुड लवण मिरच भांडा बासण लक डी इंधन आदि भोजनकी सामग्री अर भोजन बणावणे वालो आदिस र्वहै परंतु अग्नी बिना तांदुलादिक सर्व सामग्री कचीहै तैसैही सिद्धप रमेष्टी कास्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानाग्नि बिना येह मुनी पणा त्यागी ब्रती क्षु ल्लक ब्रह्मचारी पणा दान पुन्य पूजा पाठ सास्त्राध्ययन ध्यान धारणा उपदेस देणा लेणा आदि तीर्थ यात्रा जप तप शुभाशुभ व्यवहार बहुरि शुभाशुभ व्यवहारका क्रिया कर्म अर ताका शुभाशुभ फल आदिस र्व कचाहै अर्थात् मिथ्या है यदिस्यात् पूर्वोक्तका फलहै तो स्वर्ग नरकहै बहुरि स्वर्ग नरकहैसो अरहट घटियंत्रवतहै १ ज्ञान संसार सागर- के भीतर बाहिरहै परंतु जैसा येह संसारहै तैसो ज्ञान नाही १ जैसैच कमक पत्थरीमैं अग्नीहै सो दीखतानाही तोबी अग्नीहै तैसै संसारज

गनमे स्वसम्यक् ज्ञान प्रसिद्ध हे सो दीखतो नाही तोबी स्वसम्यक्ज्ञा
नप्रसिद्ध हे १ जैसे मूरख लोक कोई नयन्याय द्वारा कहताहे के अग्नी
जलतीहे बलतीहे परंतु पूर्ण दृष्टीसे देखियेतो अग्नी स्वभावमे अग्नी
नजलती नबलती तैसेंही असत्य व्यवहार द्वारा देखियेतो स्वयंज्ञा॰
नमयि जीव मरताहे जन्मताहे निश्चय सत्यजीवत्व स्वभावमे देखिये॰
तो नजीव मरताहे नजीव जन्मताहे १ जैसे हम खूब चोकस ठिक निश्च
य करचूके सूर्यके सन्मुख अंधकार नाही तैसेंही स्वसम्यक्ज्ञानमयि
सूर्यकेसन्मुख अज्ञान रूपी अंधकार नाही १ जैसे सूर्यके अर अंध
कारके येक तन्मयि मेल नाही तैसेंही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यके अ
र अज्ञानमयि अंधकारके परस्पर येक तन्मयि मेल नाही १ जोजिस
से भिन्नहे वो उससे भिन्नहे इतिन्यायम् १ जैसे सूर्य प्रसिद्ध हे ताही
का प्रकाशमे घट पट मठ आदि प्रसिद्ध हे तैसेंही स्वयं सम्यक् ज्ञानम

यि सूर्य प्रसिद्ध है ताहीका प्रकाशमें येह लोकालोक जगत संसार प्र-
सिद्ध है १ येह तन मन धन वचनादिक हैसो बहुरि तन मन धन वचना-
दिकका जेता शुभाशुभ भावकर्म क्रियादिक अर इनका फल येह स-
र्व स्वस्वरूप सम्यक् ज्ञानकूं जाणत नाहीं १ स्वसम्यक् ज्ञानका अरये
ह लोकालोक जगत संसारका मेलतो असाहै जैसा फूल सुगंधका-
सा दुग्ध घृतवत् तिल तेलवत् बहुरि येह लोकालोक जगत संसारहै
ताका अर स्वयं सम्यक ज्ञानहै ताका परस्पर अंतर भेद है तो ऐसाहै
जैसा सूर्य अंधकारका परस्पर अंतर भेद है तैसा १ जैसे जहां पर्यंत
समुद्र है तहां पर्यंत कल्लोल लहरी चलती है तैसैही जहां पर्यंत स्वस
म्यक् ज्ञानार्णव है तहां पर्यंत दान पुन्य पूजा व्रत शील जप तप ध्या
नादिक की बहुरि काम कुशील चोरी धन परिग्रह भोग विलासकी इ
च्छा वांच्छा रूप लहरी कल्लोल चलती है १ जैसे कमल जलहीमें उ-

त्पन्न हुवो वहुरि जलहीमै रहताहै परंतु जलसै लिप्त तन्मयि नाहीहो
ते तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि सम्यक् दृष्टी येह लोकालोकजगतसं
सारमै उत्पन्न हुये अर इसीही संसार जगत लोकालोक मै रहताहै प
रंतु येह संसार जगत लोकालोकसैं लिप्त तन्मयि नाही होते १ जैसैन
दी समुद्रसै भिन्न नाही तैसैही जिस वस्तुमै ज्ञानगुणहै सोजीवजिनें
द्रसैभिन्ननाही १ जैसै सुवर्णकी वस्तु सुवर्णमयीहीहै वहुरि लोहाकीवस्तु लोह
मयीहीहै तैसैंही स्वयंज्ञानमयिजीवकीवस्तुस्वयंज्ञानमइहै वहुरि अज्ञानमयी अ
जीवहै ताकी वस्तु अज्ञान मयिहीहै १ जैसै मृग मरीच का जल दीखता
है सोनही दीखते प्रमाणवत मिथ्याहै तैसैही येह जगत संसार दीख
ताहै सो स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानसै तन्मयि होयकरि स्वस्वरूप सम्यक्
ज्ञानकी तरफ देखते संते मिथ्याहै १ जैसै मृग जलमैं किसीकी तृषा
उपसम होती नाही वरूअगोलाहोते नाही तैसैही तीव्र स्वयं स्वसम्यक्

ज्ञानमयि सूर्यका भलाबुरा येह मृगमरीचका जलसै भर्या संसारजगत है-
तासै होतेनाही १ जैसे जहांकोप्यासी तहांको मरमजाऐ तैसैही स्वसम्य
क्ज्ञानमे तन्मयि होय करि रहताहे सोस्वसम्यक्ज्ञानको मरमजाणताहे
१ जैसे जिस हांडीमे रवाऐंकूं मिले ताकूं फोडणा तोडणा बिगाडणा जो
ग्यनही तैसैही येह लोकालोक जगत संसारमे जिसकूं स्वस्वभाव सम्यक्
ज्ञानकी प्राप्तकी प्राप्ति भई ऐसा संसारकूं बिगाडणा जोग्य नही १ जैसे-
पूर्णजलसै भर्योघट शब्दनाहीकर्ताहै तैसैही परिपूर्ण स्वस्वभाव समर
सनीरसै तन्मयि स्वयं स्वसम्यक् ज्ञानहे सो शब्दसे तन्मयि होय करिके न
ही बोलताहे १ जैसे जहां पर्यंत मंडपहे तहां पर्यंत बेलि बिस्तीर्ण होर
हीहे ऐसे नहीसमजणा के बेलडीमे बिस्तीर्ण होणेकी सक्ती नहीहे तै
सैही उस स्वस्वरूपी स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि परमातमाकोज्ञा
न लोकालोक पर्यंत बिस्तीर्ण होयरह्योहे ऐसे नही समजणा के उस-

ज्ञानमयि परमातमामें येतावन्मात्र ही ज्ञानहै अर्थात् जैसा येह लोका
लोक है ऐसाही और सहस्त्र लक्ष लोकालोक बी होयतो यो स्वसम्यक्
ज्ञानमयि परमातमा येकही समयमात्र कालमें निराबाध पूर्वक जाणें
परंतु येह लोकालोक शिवाय दूसरो ज्ञेयकोई है ही नाही भावार्थ जा॰
णें किसकूं जाणताही है सो क्या जाणें येह लोकालोकतो तिस स्वसम्यक्
ज्ञानमयि परमातमा का ज्ञानप्रकाशके भीतर अणुरेणुवत् नही॰
जाणें किदर कहां पडेहे १ जैसें स्वमाकी मायाकूं छोडणाक्या अर ग्रह॰
णकैसें करणा तैसेंही वो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमाहे सो इसअ
ज्ञान मयि लोकालोक जगत संसारकूं छोड करिकें कहां पटके कहांडा
लै बहुरि ग्रहण करिकें कहां राखै कहां धरे १ जैसें कांचकी हांडीमें दी
पक भीतर बाहिर प्रकासरूपहे तैसेंही किसी जीवकूं गुरुपदेस द्वारा॰
स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान सरीरके भीतर बाहिर प्रसिद्ध होवै सोजीव

सहस्रबेर धन्यवाद योग्य है १ प्रश्न स्वसम्यक् ज्ञानमयि परब्रह्म पर
मातमाको अचलानुभव कैसे होय उत्तर हे शिष्य इस भवनमें तूं उच्चा
स्वरसै अलाप ऐसें करिके तूं ही तब शिष्य गुरुआज्ञा प्रमाण तिस भवनमं
दिरमे उच्चा स्वरसैं कहीके तूं ही तबनत् समयही पलट करिकै तिस शिष्य
के कर्णद्वारा होकरि अंतः करणमे प्रतिध्वनि सोकीसोही पहोंचीके तूं
ही तब शिष्य प्रतिध्वनी श्रवण द्वारा निश्चय धारण करिके स्वसम्यक् ज्ञा-
नमयि परब्रह्म परमातमा है सोही सोहं १ स्वसम्यक् ज्ञानानुभव श्रव-
ण करो जैसें कोइ पुरुष नीरसै भर्या घटमे सूर्यको प्रतिबिंब देख करिके
संतुष्ट थो ताकूं निश्चय सूर्य कूं जाणतो पुरुष कहीके तूं ऊपर आकाश
मै सूर्य है ताकूं देख तब वो पुरुष घटमे सूर्य कूं देखणा छोड करिके ऊप
र आकाशमे देखणे लागे तब निश्चय सूर्य कूं देख करिके अपणा अंतः
करणमे बिचार कियाके जैसो ऊपर आकाशमै सूर्य दीखता है तैसो ही

घरमैं सूर्य दीखनाहै जैसोइहा तैसोउहां तैसोउहां जैसोइहां नइहा·
नउहां अर्थात् जैसोहै तैसोजहांको तहां तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि
सूर्यहै सो तोजैसोहै तैसो जहांको तहां स्वानुभवगम्यहै सोहै यहनय·
न्याय शब्दसे तन्मयि वर्णरहाहै पंडितसो स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानम
यि परब्रह्म परमानमाकूं अनेक प्रकारसैं कल्पहै सो अथाहै १ जैसैयेक
किसीको प्रियपुत्र द्वादश वर्ष पश्चात् परदेसमेंसे आयो आने प्रमाण मा·
ता भ्राता सज्जनादिकसे मिले ताको आनंद हुवो सो फेर वो आनंद रहनाना
ही आनंदको हेतु परदेसमेंसे आयो सो पुत्रविद्यमानहै परंतु प्रथममि
लापसमय प्रथमानंद हुवाथा तैसा आनंद अवहैनाही इहां प्रथमानंद
संभवैहै इसी आनंदसे सर्वानंदरूपहै तैसैही प्रथम स्वयंसिद्ध स्वस·
म्यक् ज्ञानमयि परमानमा परमानंदमयि प्रथमहै उसीसे भोगानंद जो
गानंद धर्मानंद विषयानंद हिंसानंद दयानंद आदिजेता आनंदशब्द·

है सो स्वसम्यक् ज्ञानमयि परमातमा परमानंद का सूचक है १ जैसे अंध
कुटीमै बैठे हुवो पुरुष तिस कुटीके द्वारा होकरिके बाहिर मनुष्य पशू प-
क्षी वृषभ घोटकादिक परहै ताकूं जाणतहै बहुरि स्वयं आपकूंबी जाण-
तहै तैसैंही स्वसम्यक् ज्ञान मयि सम्यक् दर्शी स्वपंदेह अंधकुटीमै बैठ
करिकै आपापरकूं जाणतहै १ जैसा बीज ताको तैसा फल १ जैसे नेत्र
सै देखताहै बहुरि नेत्रकूं नही देखताहै सो अंधवत् स्यात् तैसैंही ज्ञान-
सै जाणताहै बहुरि ज्ञानकूं नही जाणताहै सो अज्ञानवत् स्यात् १ जैसै
नट नाना प्रकार का स्वांग धारैहै परंतु आप अपणा दिलमै जाणताहै मा-
नताहै कै येह जैसा स्वांगहै तैसा मैनाही तैसैंही स्वसम्यक् ज्ञान मयि स-
म्यक् दर्शीहै सो अपणा आपमै आपमयि स्वसम्यक् ज्ञानसे तन्मयिहै
ताकूं तो स्वांगं न मानतहै न समजतहै परंतु स्वस्वभाव सम्यक् ज्ञानसे त-
न्मयी नाही तिस सर्वहीकूं स्वांग जाणताहै मानताहै १ जैसे घरके अ-

भी लागै ताके प्रथम कूपरयो दणा जोग्यहै तैसैही येह देह कुटीके काला
मिलागै ताके प्रथम सद्गुरु वचनोपदेस द्वारा देह कुटीके भीतर बाहिर म
ध्य निरंतर स्वसम्यक् स्वानुभव गम्य सम्यक् ज्ञान मयिस्वभाव वस्तूहै
ताकूं तन्मयि समज लेणा मान लेणा योग्यहै १ जैसै चकवा चकवीसा
यंकाल रात्री समय अलग अलग होजानेहै सो कोण उनकूं द्वेष भाव॰
सै अलग अलग कर्त्ताहै बहुरि प्रात काल सूर्योदय समय वह चकवा च॰
कवी परस्पर मिलतेहै ताकूं कोण प्रीतराग भावसै मिलातेहै तैसैही
जीव अजीवकूं कोणने प्रीतराग भावसै मिलायाहै बहुरि कोण द्वेषभा
वसै अलग अलग करताहै १ जैसै सुवर्णका अनेक भेद अलंकारहै अ
नेक भेद अलंकारकूं गलादेवेतो येक केवल सुवर्णहीहै तैसैही येक स्व॰
यंसिद्ध स्वसंम्यक ज्ञानहै ताका भेद कुमतिज्ञान कुश्रुति ज्ञान कुअवधि-
ज्ञान मतिज्ञान श्रुतिज्ञान अवधिज्ञान मनपर्ययज्ञान केवलज्ञान इत्या

दि भेदहै ताकूं गालदंइ वांटे तो यक केवल स्वयंसिद्ध स्वसम्यक्‌ ज्ञानही है १ जैसें सूर्यका प्रकासमें अंधकार कहांहै सूर्य निकासलीयातो प्रतिबिंब कहांहै आत्मज्ञानीकूं जगत संसार मृगजल धनहै सूर्य नहोय-तो मृगजल कहांहै ऐसें गुरूपदेस द्वारा आपकूं आपमें आपमपि आपहीमें आपकूं रवचलियेसें आकार कहांहै ऐसें जगत संसारहै सो भरमहै भरमउडगयेतो जगत संसार कहांहै १ जैसें जलअग्नीको संयोग पाय करिकें गरमहै परंतु गरमहै नही क्यूंके उसी गरमजलकूं अग्नीके ऊपर डालदे पटकदेतो अग्नी उपसम होजातीहै बूज जातीहै तैसेंही स्वसम्यक्‌ ज्ञानहै सो क्रोधादिक अग्नीको संयोगपाय करिकें संतप्त होजातेहै परंतु संतप्त होते नाहीं क्यूंके उसी स्वसम्यक्‌ ज्ञानकूं क्रोधादिक अग्नीकेऊपरवासंसार जगतके ऊपर डालदे पटक देतो क्रोधादिक अग्नी बहार संसार जगत उपसम होजातेहै १ जैसें सूर्यको प्रकास तथा आका

श सर्वत्रहै तैसैंही स्वसम्यक्ज्ञान सर्वक्षेत्र काल भव भावादिकहै तहां
है निश्चयनयात् १ स्वसम्यक्ज्ञान स्वभावमै रात्री दिवसका भेद नसंभ-
वै इसी वास्ते स्वसम्यक्ज्ञानको नाम सदोदय सूर्यहै १ जैसै बालक ल
डका लडकी बाल्य अवस्यामे गुदागुदी बनाय करिकै मैथुनादिक भोगो
पभोग आभाषमात्र कर्ताहै परंतु योवन अवस्था समय साक्षात् मैथु
नादिक भोगोपभोग उसींही लडका लडकीकूं निश्चय प्राप्त होजावैहै
तब पूर्वकृत्य गुदागुदीकूं असत्य जाणकरिकै येक ठिकाणै समेट क-
रिकै राख देताहै तैसैंही किसीकूं गुरुपदेश द्वारा काल लब्धी पाचक द्वा
रा स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानस्वभावकी अचलता परमावगा
ढता होणेजोग्य होचुकी सो धातु पाषाण काष्टादिककी मूर्ति जहांकीत
हां दूसरे बालवतके अर्थ राख देताहै १ जैसै समुद्रका जल खाराहै परंतु उ
सीसमुद्रके तट कूपखोदै तो जल मिष्ट निकलताहै तैसैंही गुरुपदेस पाय

करिके कोहू संसार क्षारसमुद्रके तट खोजै गातो स्वसम्यक् ज्ञान मिष्ट जलका लाभ होवेगा १ जैसे दोहा बीजराखरूख भोगये ज्यू की साए जगमांहि ॥ त्युंचक्रीनृपरूख करैं धर्मबिसारनाहि ॥१॥ तैसेही कोहू स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव बीजकूं आपका आपमें आपमयि आपही के पास आपही राख करिके पश्चात् संसारका शुभाशुभ फल भोगताहै ताको स्वभावधर्म कदाचित् कोहू प्रकारबी नष्ट होनेनाही १ जैसे वृक्षकी जड मूलमै इच्छाप्रमाण जलडालो परंतु समयपाय फल लागैगा तैसेही मिथ्यादृष्टीकूं इच्छा प्रमाण स्वसम्यक् ज्ञानोपदेस देवो तथा साक्षात् सूचक वचन कहोके तूही जिनेंद्र शिव स्वसम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यहे ऐसा सूचक वचन कहते संतेबी मिथ्या दृष्टीके स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता काललब्धी पाचक हुये विना होतीनाही १ जैसै सूर्य प्रकाश कर्ताहै अंधो नही देखनो तो सूर्यकूं क्या दोष तैसे स

नगुरु सम्यक् ज्ञानोपदेस कर्ता है मिथ्यादृष्टी स्वसम्यक् ज्ञानानुभवकी
परभाव गाढता नही धारण कर्ता है ताको सनगुरु कूं क्या दोष १ जैसे
दीपकतो अन्य घट पटादिक वस्तू कूं प्रगट नाही कर्तो क्यूं के वह वस्तु
दीपक कूं ऐसे कहती नाही प्रेरणा करती नाही के हे दीपक तुम हमकूं
प्रगट करो तैसे ही दीपक उस घटपटादिक वस्तू कूं कहतो नाही प्रेर·
णा कर्तो नाही के हे घट पटादिक वस्तू हो तुम मोकूं प्रगट करो तैसे ही-
स्वसम्यक् ज्ञान दीपक हे सो तो अन्य संसार वा तन मन धन वचनादिक व
स्तू कूं वहुरि तन मनधन वचनादिक का जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया
कर्म है ताकूं अर इनका शुभाशुभ फल है ताकूं प्रगट नाही कर्तो क्यूं के
यह संसार तन मन धन वचनादिक वस्तु है सो वहुरि इनका शुभाशुभ·
व्यवहार क्रिया कर्म है सो अर इनका शुभाशुभ फल है सो स्वसम्यक्
ज्ञानदीपक कूं ऐसे कहते नाही प्रेरणा कर्ते नाही के हे स्वसम्यक् ज्ञान

दीपक तुमहमकूं प्रगट करो तैसैंही स्वसम्यक्ज्ञान दीपकहै सो इस संसार तन मन धन वचनादिक वस्तुकूं श्रर इनका जेता शुभाशुभव्य वहार क्रिया कर्महै ताकूं श्ररइनका शुभाशुभफलहै ताकूं ऐसै कह तो नाहीं प्रेरणा कर्तो नाहींके हे संसार तनमन धन वचनादिक वस्तु हो श्रर तन मन धन वचनादिक वस्तुके जेता शुभाशुभ व्यवहार क्रिया कर्महो श्ररइनके शुभाशुभफलहो तुम मोकूं प्रगट करो १ जैसै बाजीगिर श्रनेक प्रकारका तमासा चेष्टा कर्ताहै परंतु श्राप श्रपणादिलमै जाणताहैके येह जैसा मै तमासा चेष्टा कर्ताहूं तैसोमै मूलस्वभावहीसै नाहींहूं तैसैंही स्वसम्यक्ज्ञानमयि सम्यक्दृष्टी सर्व संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ताहै परंतु श्राप श्रपणादिलमै निश्चय जाणताहैके जैसामै संसारका शुभाशुभ कर्म चेष्टा कर्ताहूं तैसा तन्मयि कदाचित् कोई प्रकारबी नाहींहूं जैसा कर्म चेष्टा कर्ताहूं तैसोमै मूलस्व

भावहीसै नाहीहूं १ जैसै बाजीगिर मिथ्यामृगजलवत् आम्रवृक्ष ल-
गातोहै ताकूं देख करिकै किसी पुत्रको कहीके हे पुत्र यहो बाजीगिर-
आम्रवृक्षलगायो सो मिथ्याहै परंतु पुत्रको पिता बाजीगिरकूं मिथ्या
नहीं जाणतोहै तैसैही स्वसम्यक्दृष्टी द्रव्यकर्म भावकर्म नोकर्मकूं मि
थ्या जाणतोहै परंतु जो कर्मसे अनन्मयि होय कर्मको कर्ताहै ताकूं मि
थ्या नहीं जाणताहै नमानताहै नकहताहै १ जैसै खंडी पांडु आपस्व
मे यही श्वेतहै अर परजो भीत आदिककूं स्वेत करैहै परंतु आप भीत-
आदिकसे तन्मयि होती नाही तैसैही स्वसम्यक्ज्ञानहै सो सर्व संसार
आदिककूं चेतनवत् करि राखेहै परंतु आपसंसार आदिकसै तन्मयि
होते नाही १ जैसै जेलखानामै बेडीसै बंधे तस्करादिकवीहै अरति
सही जेलखानामै निर्बंध शिपाई जमादार फोजदारबीहै तैसैही सं-
सार कारागारमै मिथ्यादृष्टी तो कर्मबंधयुक्तहै वहुरि स्वसम्यक्दृष्टी

कर्मबंधरहितहै १ दृष्टांतमें तर्ककर्ताहै जिसकूं स्वभावसम्यक्ज्ञा
नको लाभनहीं होताहै १ जैसे सर्बतमें मिश्री एलायची दुग्ध काली
मिरच बिदामबीज केशर जन्मभिन्न बहुत द्रव्यहै सो अपणे अप-
णे स्वभावगुण लक्षणमें मग्नहै तथापि येक सर्वत नामहै तैसेही-
जीव पुद्गल धर्मद्रव्य अधर्मद्रव्य आकासद्रव्य कालद्रव्य येह षट्मयी
संसारहै तामें ज्ञानगुण जीवमेंहै और पांचद्रव्यमें नाही १ जैसे समुद्र
में अनेक नदी नालाकोजल जावेहै तहां येहबी भाग नाहीहै के योज
लतो अमुकीनदीकोहै बहुरि यो जल अमुकी नदीकोहै तैसेही स्वस्व
रूप स्वानुभवगम्य सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव समुद्रमें येह बिभाग नहीं
है केयोज्ञाननतो जैनकोहै अर यो ज्ञान बैश्नुकोहै अर योज्ञान शिवकोहै
यो बोधका योनयायिक चार्वाक् पातांजली सांख्यकोहै इत्यादिकबी
भाग बिधि निषेध स्वस्वभाव सम्यक्ज्ञानार्णवमें नसंभवे १ जैसे कोहू-

पुरुष सन्निपात युक्ति अपणा स्वघर मे सूतोहै अर भरम भ्रांतियुक्त क
हताहैके मै मेरा घरमै जाऊं तैसैही स्वयं ज्ञान मयि जीव अपणा ज्ञानम
यि स्वभाव मोक्षसे भिन्न नाही तथापि भरम भ्रांतिसे मोक्षमै जाणेकी
इच्छा कर्ताहै १ आगै फकत केवल दृष्टांत द्वारा अपणा आपमे आप
मयि स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका अन्वला
नुभव लेणा इति अथ केवल दृष्टांत संग्रह प्रारंभ दोहा नमोज्ञा
नसिद्धांतकूं नमोज्ञानशिवरूप ॥ धर्मदासवंदनकरै देखअ्यानमाभूप
॥१॥ प्रश्न स्वसम्यक्ज्ञानमयि आत्मा कैसाहै अर कैसे पाइये ता
को उत्तर दृष्टांत द्वारा कहतेहै यह आत्मा स्वसम्यक्ज्ञान मयि चेतन स्व
रूप अनंत धर्मात्मक येक द्रव्यहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी गम्यहै अ
नंत नय है सो सब श्रुति ज्ञानहै तिस श्रुतज्ञान प्रमाणकरि आत्मा अ-
नंत धर्मात्मक जानियेहै इस वास्तै नय निकरि स्वभाव सम्यक्ज्ञान वस्तु

दिखाइयहै सोही आत्मा द्रव्यार्थक नय करि चिन्मात्रहै दृष्टांत जैसे व-
स्त्र येकहै तैसे स्वभाव सम्यक् ज्ञानमयि आत्मा येकहै १ जैसे वस्त्र
सूत तंतु आदिकरि अनेकहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञानमयि आत्मा दर्शन-
ज्ञान चारित्र सुख सत्ता चेतन जीवत्वादिकरि अनेकहै १ जैसे लोह मयिबा
ण आपणा द्रव्य क्षेत्र काल भव भाव करि अस्तिहै तैसैही स्वसम्यक् ज्ञान-
मयि आत्मा अपणी आपमै आपमयि आप द्रव्य आपहीमै आप रहता
है वास्तै आपही क्षेत्र आपहीमें आप वर्तनाहै वास्तै आपही काल आप
ही आपकास्वभावहै मैंहै वास्तै आपही भवभावकरि अस्तिहै १ जैसे लो
हमयि बाणपर द्रव्य क्षेत्र काल भव भावादिकरिनास्ति तैसैही स्वसम्यक्
ज्ञानमयि आत्मा परद्रव क्षेत्र काल भव भावादि करि नास्ति १ जैसे दर्पण
मै स्वमुख नहीदेखो नाबी स्वमुखहै बहुरि दर्पणमै स्वमुख देखोनाबीस्व
मुखहै तैसैही है स्वसम्यक् ज्ञान तूं नरेकूं संसार जगत जन्म मरण नामा

नाम बंध मोक्ष स्वर्ग नर्कादिकमै नही देखै तोबी तूं अनादि अनंत निरं
तर सम्यक्ज्ञानहीहै बहुरि हे स्वसम्यक्ज्ञान तूं तेरेकूं सूर्यप्रकासवत् ये
क तन्मयि तेरा तेरेही भीतर तूंही तेरेकूं देखै तोबी तूं सोको सोही अना
दि अनंत निरंतर स्वसम्यक्ज्ञानहीहै १ जैसे कोहू स्वहस्तसे आपही·
का स्वस्थानमे आपहीकी स्वसिंदूकमे तिजोरीमे रतनरारवे रारवकरिकै
और वर्तिमै लागजावे तब तिस रतनकूं भूलबीजावैहै परंतु जब यादक
रै तबही सो रतन अनुभवमे आवैहै तैसेंही कोहू शिष्यकूं सत्गुरुवच
नोपदेस द्वारा तथा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वस्वरूप स्वसम्यक्ज्ञानानु
भव होएे जोग था सो होगये परंतु पूर्व कर्म वसात् और भ्रतिमै लागजावै
तब तिस स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकूं भूलिबीजावैहै परंतु जब याद करै तब·
साक्षात्पणे स्वानुभवमे आवैहै १ इसीके अर्थ तीनदृष्टांत जैसे येकबेर·
चंद्रकूं देखलीयें चंद्रानुभवनहीजाने १ जैसे येकबेर गुडकूं खाये पश्चात्

गुडानुभव नही जाते जैसे येकबेर भोग भोगे पश्चात् भोगानुभव नही जाते १ जैसे काहु दर्पणकूं सदा काल स्वहस्त मे लियेरहताहे ताकी म षीघर बेर देखतहे निरस करिके स्व मुख दीखते नाही दर्पणकी मषीकूं प लट करिके स्वच्छ दर्पणमे स्वमुख देखेतो स्वमुख दीखे तैसेही मिथ्या दृष्टी इस संसार तन मन धन वचनकी तरफ बहुरि तन मन धन वचनादि कका जेता शुभाशुभ व्यवहार किया कर्म अर इनका शुभाशुभ फ लकी तरफ देखताहे वास्ते स्वसम्यक ज्ञान नहीं दीखतो नही स्वानुभव मे आतो बहुरि इनसंसार तन मन धन वचनादिककी तरफ देखणा छो डकरिके स्वसम्यक ज्ञानकी तरफ निश्चय देखेतो स्वसम्यक ज्ञानही दीखे स्वसम्यक ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होवे १ लोकालोक कूं जाणवाकी बहुरि नही जाणवाकी येहु दोहु कल्पनाकूं सहज स्वभा वहीसे जाणताहे सोही स्वसम्यक ज्ञानहे १ जैसे हरित रंगकी मेंदीमें

लालरंगहै परंतु दीखतोनाही पत्थरीमे अग्नीहै परंतु दीखतीनाही
दुग्धमे घृतहै परंतु दीखतोनाही तिलमै तैलहै परंतु दीखतोनाही
पुष्पमे सुगंधहै परंतु दीखती नाही तैसेही जगतमे स्वसम्यक्ज्ञान
मयि जगदीश्वरहै परंतु चरमनेत्र द्वारा दीखतोनाही किसीकूं सतगुरु
बचनोपदेस द्वारा काल लब्धि पाचक द्वारा स्वभाव सम्यक् ज्ञानसे तन्म॰
यिस्वभाव सम्यक्ज्ञानानुभव मे अचलदीखताहै १ जैसे व्यभिचार॰
णीस्त्रीस्वघर कार्य कर्तीहै परंतु ताको चित्त मन व्यभिचारि पुरुषकी तर
फ लागरह्योहै तैसेही स्वसम्यक् दृष्टी पूर्वकर्म प्रयोगात् संसारिक का
म कार्य कर्ताहै परंतु ताकोचित्त मन स्वसम्यक्ज्ञान मयि परमात्माकी
तरफ लागरहतोहै १ जैसै जिस स्त्रीका शिरकेऊपर भरतारहै स्यात् सो
स्त्री पर पुरुषका निमित्तसे गर्भवी धारण करै तो ताकूं दोष लागते नाही
तैसेही किसी पुरुषका मस्तगसे तन्मयि मस्तगकेऊपर स्वसम्यक्ज्ञान

मयि परब्रह्म परमात्माहै स्यात् सो पुरुष परकर्म वसात् दोषवी धारण करैतो तापुरुषकूं दोष लागनें नाही बडेका सरणा लेणे का येही फल है १ जैसे मूका पुरुषका मुखमै गुडखंडदेकरि पश्चात् मूकासै बूजीके कहो मूकागुडकेसा मिष्टहै इहां मूकाकूं गुडका मिष्टानुभवहै परंतु कहनहीं सक्को तैसेंही किसीकूं गुरु वचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक्ज्ञानानुभवकी अचलता परमावगाढता होणेंजोगथी सो होचुकी परंतु कहनहीसक्को १ जैसे हस्तीका दंत बाहिर दीखणेका औरहै बहुरि भीतरचाबणे खाणेका औरहै तैसैही जैन बेष्णु आदिक फारुषी मुनी आचार्यका रचे हुये वेद सिद्धांत सास्त्र सूत्र पुराणादिकहै सोतो हस्तीका बाहिरका दंतवत् समजणा बहुरि भीतरका आसय असल जिसकाजोही जाणे १ बंधको बिलास डालदीजे पुद्गलपै तथा देहीका विकार तुम देहाशिर दीजिये १ स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानहै सोतो तनमन धन वचनादि

कसै तन्मयि नत्स्वरूप कदापि नाही फिरगुरु स्वसम्यक्ज्ञानानुभव-
की अचलना अवगाढना निश्चयना करदेताहै धन्यहै गुरु सहस्रवेर
धन्यहै १ जैसै जैन वैस्नु बौद्ध शिवादिक कोहुही हो जो चौरी करैगो-
सो बंधमै पडैगो तैसैही कोहुही हो जो कोहू गुरुवचनोपदेस द्वारा वा
काललब्धि पाचक द्वारा आपका आपमै आपमयि स्वसम्यक्ज्ञानानु
भवकी अचलना परमावगाढना धारण करैगो सोही संसार भरम जा-
लसै भिन्न होयकै सदाकाल स्वयानुभवमै मग्नरहैगो १ भम ॥

आत्मा कैसाहै अर कैसै पाइये नाका उत्तर दृष्टांन द्वारा कहनेहै येह आ
त्मा चैतनस्वरूप अनंतधर्मात्मक येकद्रवहै ते अनंतधर्म अनंत नयकी
गम्यहै अनंतनय सब श्रुतज्ञानहै निसश्रुतज्ञान प्रमाण करि आत्मा-
अनंतधर्मात्मक जानियेहै इसवास्तै नयनिकरि वस्तु दीषाइयेहै सोही
आत्मा द्रव्यार्थिक नयकरि चिन्मात्रहै दृष्टांन जैसै वस्त्र येकहै अरसो-

ही आत्मा पर्यायार्थिक नयकरि ज्ञान दर्शनादिक रूपकरि अनेक है जैसै सोही घरूा मृतक तंतु वनिकरि अनेक है अस्तित्वनयकरि सो· ही आत्मा स्वद्रव्यक्षेत्र काल भावनिकरि अस्तित्व रूपहै जैसै लोहम· यीबाण अपणे चतुष्टय अस्तित्व रूपहै लोहातो द्रव्यहै धनुष अरगु णके बीचरहेहै तातै यह बाणका क्षेत्रहै जो साधनेका समय है सोका लहै निसाणेके सन्मुखी है सो भावहै इसभांति अपणे चतुष्टय करि· लोहमयि बाण अस्तित्व रूपहै और नास्तित्व नय करि सोही आत्मा परद्रव्य क्षेत्र काल भावकरि नास्तित्व रूपहै जैसै लोह मयी बाण सोही लोहाके बाण नाही और धनुषगुण बाचि नाही और साध्या नाही औ र निसाणेके सन्मुष नाही ऐसै सोही लोह मयी बाण पर चतुष्टय करि नास्तित्व रूपहै और अस्ति नास्ति नयकरि स्वचतुष्टय पर चतुष्टय करि क्रमसों सोही आत्मा अस्ति रूपहै जैसै सोही बाण स्वचतुष्टय परचतु·

ष्टय क्रम विवक्ष्याकरि अस्ति नास्ति रूप होहै अर अव्यक्त नयकरिसो
ही आत्मायेकही बार स्वचतुष्टय परचतुष्टयकरि अव्यक्तहै जैसे सोही
बाण स्वपर चतुष्टय करि अव्यक्तव्यसधैहै और अस्ति अव्यक्तव्यनय
करि सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और येकही बार स्वपर चतुष्टयकरि-
अस्तिरूप अवक्तव्य बाणके दृष्टांतकरि जानना और नास्ति अव्यक्त
व्य नयकरि सोई आत्मापरचतुष्टयकरि और येकहीबार स्वपर चतुष्ट
यकरि नास्तिरूप अव्यक्तव्य बाणके दृष्टांत करिजानना और अस्ति-
नास्ति अव्यक्तव्य नयकरि ये सोही आत्मा स्वचतुष्टय करि और परचतुष्ट
यकरि और येकही बार स्वपर चतुष्टय करि अस्तिनास्तिरूप अव्यक्तव्य
बाणके दृष्टांत करिजानना सविकल्पनयकरि सोही आत्माभेदलीये
है जैसे येक पुरुष कुमार बालक जुवान वृद्ध भेदनिकरि सविकल्पहो
है और अविकल्पनयकरि सोही आत्मा अभेद है जैसे येक पुरुष पुरु

षत्व करि अभेदरूप है नामनय करि सोही आत्मा शब्द ब्रह्मकरि नामले करि कह्या जावहै स्थापना नयकरि सोही आत्मा पुद्गलका अवलंबन करि थापियेहै जैसे मूर्तिकपदार्थ थापियेहै द्रव्य नयकरि सोही आत्मा अतीत अनागत पर्याय करि कहियेहै जैसे श्रेणिक महाराजा तीर्थंकरका दलवाराहै भावनयकरि सोही आत्मा जिस भाव परिणाममैंहै तिस परिणामसें तन्मयी होहै जैसे पुरुषाधीनस्त्री विपरीति संभोगविषे प्रवर्ती तिस पर्याय रूपहोहै सामान्य नयकरि सोही आत्मा अपने समस्त पर्यायनिविषे व्यापीहै जैसे हार सूत सर्व मुक्ताफलनिविषे व्यापीहै विशेष नयकरि सोही आत्मा येक पर्याय करि कहियेहै जैसे तिस हारकाये क मुक्ताफलसब हारविषै अव्यापीहै नित्यनयकरि सोही आत्मा ध्रुवरूपहै जैसे नट अनेक यद्यपि स्वांग धरैहै तथापि सोही नट कहै अनित्यनय करि सोही आत्मा अवस्थांतर करि अनवस्थितहै जैसे सोही नट राम राव-

णादिकके स्वांग करि औरका और होहै सर्वगत नयकरि सकलपदार्थ
वर्तिहै जैसे खुली आंख समस्त घट पटादि विषै पदार्थविषै प्रवर्तै है अ
र सर्वगत नयकरि आपही विषै प्रवर्तै है जैसे मुंद्या हुवा नेत्र आपही
विषै है सून्य नयकरि केवल येकही सोभायमान है जैसे सूना घर येक
होहै असून्य नय करि अनेक करि मिल्या हुवा सोभैहै जैसे अनेक लो॰
कनिकरि भरी नांव सोभैहै ज्ञान ज्ञेयके अभेद कथनरूप नयकरि येक
है जैसे अनेक इंधनाकार परिणया हुवा अग्नि येक है ज्ञान ज्ञेयके भेद
करि कथन करि अनेक है जैसे अनेक घट पटादि पदार्थनिके प्रतिबिंब॰
निकरि मारसि अनेक रूप होहै नियतिनयकरि अपने निश्चित स्वभाव॰
कौंलिये होहै जैसे पाणी अपणे सहजीक स्वभाव करि सीतलता लिये
होहै अनियतिनयकरि अनिश्चित स्वभाव होवे जैसे पाणी अग्नीके संबं
धसौं उष्ण होहै स्वभाव नयकरि काहू करि समारथा नाही होना जैसे स्वभा

वकरि कांटावी नाही घडे थडयासा तीषा होवै है कालनय करि काल
के आधीन सिद्धत्व है जैसे ग्रीष्म कालके अनुस्वार सहज डालका आंब
पकैहै अकाल नयकरि कालके आधीन सिद्ध नाही जैसे कृतम घासकी
उपमा करि पालके आंब पकैहै पुरुषाकार नयकरि जतनसे सिद्ध होवे
है जैसै सहित उपजायवेके वास्ते जतन करैहै काष्टके मादल विषेयेक
मक्षिका राखियेहै तिस मधुमक्षिकाके शब्दसौं और सहतकी मक्षिका
आय आय मधुच्छता करैहै ऐसे जतन सौंभी सहतको सिद्धि होवैहै
तैसै जतनसौंभी सिद्ध है दैवनयकरि यतन बिनाही साध्यकी सिद्धि-
होवै जैसे जतन कीयाथा सहतके वास्ते मादलविषै मधुमक्षिकाका
और तिस मधुछता विषै दैवसंजोगतें माणिक पाइयेहै तैसै यतन-
बिनाभी सिद्धि होवै इश्वर नयकरि पराधीन हुवा भोगवैहै जैसे बाल
कधायके आधीन हुवा खानपान क्रिया करैहै गुणिनयकरि गुणाकूं

ग्रहण करणे वाले है जैसे उपाध्याय करि सिखाया हुवा कुमार गुण ग्राही होवे अगुणि नयकरि केवल साक्षीभूत है गुणग्राही नाही· जैसे उपाध्याय करि सिखाइये जो है कुमार तिसकारषवाला पुरुषगुणग्राही नाही होता कर्त्तानयकरि रागादि परिणामनिनका कर्त्ता है जैसै रंगरेज रंगका करणेवाला होवे अकर्त्तानयकरि रागादि परिणामनिका कर्त्ता नाही साक्षीभूत है जैसे रंगरेज अनेक रंग करै है अोर कोहून मासगीर तमासा देषे है कर्त्ता नाही होता भोक्ता नयकरि सुष दुषका· भोक्ता होवे जैसे हित अहित पथ्यकूं लेतारोगी सुष दुष कूं भोगवे है अभोक्ता नयकरि सुष दुषका भोक्ता नाही केवल साक्षी भूत है जैसे हित अहितका पथ्यका जो भोक्ता है रोगी ताका तमासगीर धनवंत र वैदका चाकर साक्षीभूत है क्रिया नयकरि क्रियाकी प्रधानता करि सिद्धि होवे जैसे काहू अंधने महा दुखनेका हु पाषाणके थंबकूं णाय

अपना माथा फोडे तहां तिस अंधके मस्तग विषै ज्यो रुधिर विकार था
सो दूर भया तातै ताके द्रष्टी हुई और तिसही जागै उनकूं निधान पाया
तैसै क्रिया कष्टकर भी वस्तुकी प्राप्ती होवै ज्ञान नयकरि विवेकहीका
प्रधानताकरि वस्तुकी सिद्धि होवै जैसै काहू रतनपरिक्षक पुरुषथा
तिननै काहू अजाणदीन पुरुषके हात चिंतामणिरत्नदेख्या तब तिस
दीनपुरुषकूं बुलाय अपणे घरके कूणामै जायकरि येकचीणाकी मू
ठीके बदलै चिंतामणि रतन लीना जैसै क्रिया कष्ट नाही ज्ञानकरि व
स्तुकी सिद्धि होवै व्यवहार नय करि येह आत्माकूं बंध मोक्ष अवस्था
की द्विविधा विषै प्रवर्तै है जैसै परमाणु स्कूं बंधै षूलै है तैसै येह आत्मा
बंध मोक्ष अवस्थाकौं पुद्गलसूं धरै है निश्चय नयकरि परद्रव्यसौं बं
ध मोक्ष अवस्थाकी द्विविधाकूं नाही धरै है केवल अपणेही परिणा
मनिसौं बंधमोक्ष अवस्थाकौं धरै है जैसै येकला परमाणु बंधमोक्ष

अवस्थाकौं जोग अपणे स्निग्ध रूक्ष गुण परिणामकौं धरतासंता बं-
ध मोक्ष अवस्थाकौं धरैहै असद्भूत नयकरि यह आत्मा औपाधिक-
भेदस्वभावलियेहै जैसैं येक मृत्तिका घट सरावा आदि अनेक भेदलि
येहोहै सद्भूत नयकरि निरुपाधि अभेद स्वभाव रूपहै जैसैं भेद भाव
रहित केवल मृत्तिकाहोयै इत्यादि अनंत नयनिकरि वस्तुकी सिद्धि
होवै वस्तु अनेक प्रकार वचन विलास करि दिखाइयेहै जेता वचनहै
तेताही नयहै जेता नयहै तेताही मिथ्यावादहै श्लोक सएव-
मुक्तानयपक्षपातं स्वरूपगुप्तानिवसंतिनित्यम्॥ विकल्पजालच्युत
सांतचित्ता सएवसाक्षात्दमृतंपिबंति १ येकस्यबद्धोनतथापरस्य
चितिद्वौद्वाव्यतिपक्षपातौ॥ यतस्तवेदीच्युतपक्षपातस्तस्यास्तिनि-
त्यंखलुचिन्चिदेव॥२॥ इत्यादि॰ जानैंयेक नयकौं सर्वथा मानिय-
नो मिथ्यावादहोय अरज्यों कथंचितमानियेतो जथार्थ अनेकांतरूप-

सर्वज्ञ वचन होय तातैं येकांतना निषेधहै येक ही वस्तु अनेक नय करि साधियेहै येह आत्मा नय करि और प्रमाण करि जानियेहै जैसै येक समुद्र जब जुदे जुदे नदीनके जलनि करि साधिये तब गंगा जमुनादिकके स्वेत नीलादि जलनिके भेद करि येक येक स्वभावकौं धरैहै तैसै येह आत्मा नयनिकी अपेक्षा येक स्वरूपकौं धरैहै अर जैसे सोही समुद्र अनेक नदीनिके जलनिकरि येक समुद्र होहै भेद नाही अनेकांतरूप येक वस्तु है तैसै येह आत्मा प्रमाण विवक्षाकरि अनंत स्वभावमयि येक द्रव्य है इस प्रकार येक अनेक स्वरूप नय प्रमाण करि साधियेहै नयनि करि येक स्वरूप दिखाइयेहै प्रमाण करि अनेक स्वरूप दिखाइयेहै इस प्रकार स्यात् पदकी सोभा करि गर्भित नयनिके स्वरूपकरि और अनेकांतरूप प्रमाण करि अनंत धर्म संयुक्त है शुद्धचिन्मात्र वस्तु ताकौ जे पुरुष अवधारैहै ते पुरुष साक्षात् आत्मस्वरूपके

अनुभवी होवे येह आत्मा द्रवका स्वरूप जानना अब तिस आत्मा-
की प्राप्तिका प्रकार दिषाइये है येह आत्मा अनादि कालतै लेकरि पुद्ग
लीक कर्मके निमित्ततैं मोह मदिराके पान करि गमन हुवा घूमहै समु
द्रकीसी नाही आपर्हाविषै विकल्प तरंगनिकरि महाक्षोभितहै क्र-
मकरि प्रवर्तैहै जो अनंत इंद्रिय ज्ञानके भेद तिनकरि सदाकाल पलट
वेकों प्राप्त होवे येक रूपनाही अज्ञान भाव करि पररूप बाह्य पदार्थ
निविषै आत्म बुद्धीकरि मैत्री भाव करैहै आत्मविवेककी सिथिलता
करि सर्वथा बाहिरमुख हुवाहै बारबार पुद्गलीककर्मके उपजावनहारे-
जोहै राग द्वेष भाव तिनकी द्वैतता विषै प्रवर्तैहै ऐसे आत्माकूं शुद्ध स
चिदानंद परमातमाकी प्राप्ती काहेसैं होय कहांसे होय और येही आ
त्माजो अषंड ज्ञानके अभ्यासतै अनादि पुद्गलीक कर्म करि उपजाया
जोथा येह मिथ्या मोहताकों अपना घातक जान भेदविज्ञान करि आ

पसे जुदाकरि केवल आत्म स्वरूपकी भावनातें निश्चल थिर होय तौ अ
पने स्वरूप विषै निस्तरंग समुद्रकीसी नाई निःकंप हुवा तिष्टैहै येकही
बार तृप्त भयाजोहै अनंत ज्ञानकी सक्ति के भेद तिनकरि पलटता नाही
अपणी ज्ञानकी सक्तीनिकरि बाह्य पररूप ज्ञेयपदार्थनि विषै मैत्री-
भाव नाही करैहै निश्चल आत्मज्ञानकी विवेक करि अत्यंत स्वरूप सौं
सन्मुष हुवाहै पुदगलीक कर्म बंधके कारण जोहै राग द्वेष भाव तिनकी
द्विविधातें दूर रहहै ऐसाजो परमातमाका आराधक पुरुषहै सो भग
वंत आत्मा पूर्वही न अनुभपाया अरज्ञानानंद स्वभावहै परमब्रह्म
है ताकौं प्राप्त होवहै आपही साधकहै अवस्थाके भेदतें साध्य साध
क भेदहै येह समस्तही जोहै जगतजीव सोभी ज्ञानानंद स्वरूपजोहै
परमात्मज्ञान तिसकूं प्राप्त होहु अर आनंदरूपज्योहै अमृतजलति
सके प्रभावकरि परिपूर्ण वहैजोहै वह केवलज्ञान रूपणी नदी तिस

विषैज्यो आत्म तत्व मग्न होइ रह्याहै ओरजो तत्व समस्तही लोकालो
क देषवेकूं समर्थहै अरजो तत्व ज्ञान करि प्रधानहै अर ओतत्व अमोल
ष श्रेष्ठ महा रतन कीसीनाई अति शोभायमानहै अर वो तत्व लोका-
लोकसैं अलगहै जैसा लोकालोकहै तैसो वो तत्व नहीहै अर जैसो वो
तत्वहै तैसा लोक अलोक नाही सूजे अंधारा कासा अंतरहै लोकालो
कके अर उसतत्वके अर वो तत्व लोका लोक कूं देषवे जाणवेकूं समर्थ
है अर लोकालोकउसतत्व कूं देषणे जाणणेकूं समर्थ नहीहै उस तत्व-
कूं श्याद्वाद रूप जिनेश्वरके मत कूं अंगिकार करिये जगत जन अंगिका
र करिये जगत जन अंगिकार करो जातै परमानंद सुषकी प्राप्ति होय १
जैसैं दीपकके ज्योतिके भीतर कालिमा कज्जलहै तैसही केवल ज्ञान
ज्योति परमातमाके भीतर येह जगतजुगत जोग तूं मै येह वह हूं हूं वि
धि निषेध बंध मोक्षादिक है येक दीपगसैं हजार दीपग जोये परंतु वोम

थ दीपज्योतितो जैसाको तैसो भिन्नहै सोहीहै कलस हांडा वास-
ण होताहै अर बिगड जाताहै परंतु माटी तो नहोवै अर नबिगडै सु-
वर्णका कडा मुंदडा हो जाताहै अर बिगड जाताहै परंतु सुवर्ण तो न
होवै अर नबिगडै लाषूमण गहूं चीणा मूंग मोठ होताहै अर षरच हो
जाताहै अर फेर वही लाषूमण गहूं चीणा मूंग मोठ जैसाका तैसा उत्पन्न
होताहै अर्थात बीजका नास कदाचित् बी नाही समुद्र मैसे हजार कलस
पाणीका भरिकरिके बाहीर नीकास देतो समुद्र तो जैसाको तैसो है सो
हीहै अरउसी समुद्रमै हजार कलस पाणीका अन्यस्थानसे भरिकरिके
लाय समुद्रमे डारदे तोभी समुद्र जैसा को तैसो है सोहीहै अस्त्री रंडा
पदस्तकूं प्राप्त होवै अर फकत काजल टीकी नथ येह नही पहरै अर
और सर्व आभूषण पहर रहै तोषी उसकूं रंडाही कहणा जोगहै मो-
ती समुद्रके पाणीमै होताहै अर उस मोतीकूं सोषरस लगबी पाणीमै-

पटक्यो राषै तौबी वो मोती गलता नही अर वो मोती हंसके मुष मै·
जातै प्रमाण गलजातोहै सूर्य है सो सूर्य कूं वृथाही ढूंढताहै अर अं·
धा है सो अंधारासें अलग होणेकी वृथाही इच्छा करतो है सास्त्रमै·
लिषतेहैके मुनी २२ वाईस परिस्या सहताहै १३ तेरा प्रकारको चारि
त्र पालताहै १० दस लक्षण धर्मपालताहै १२ भावनाहै १२ बाराप्रका
रको तप कर्ताहै इत्यादिक मुनी कर्ताहै तोइहां ऐसा विचार आताहै मु·
नीनो येक अर परिस्या २२ चारित्र १३ प्रकारको दसलक्षणधर्मवा येक
धर्मका दस लक्षण १२ बारा तप १२ भावना इत्यादि बहुत भूमि कुछ ओ
रहे अर बाइस परिस्याकुछ ओरहै बाइस परिस्याको अर मुनीको अग्नी
उष्णतावत तथा सूर्य प्रकाशवत मेलनहीं ऐसैही तेरा प्रकारका चारित्र·
का अर मुनीका मेल अग्नीउष्णता वा सूर्य प्रकासवत मेलनाहीं वाऐसै
ही दसलक्षणधर्म बारातपवारा भावनाका अर मुनीकामेल अग्नी उष्ण·

तावत् सूर्यप्रकाशवत् मेल नाहीं। आकाशमें सूर्य है ताको प्रतिबिंब घृ तनैल की तप्त कड़ाहीमें अवटन है तोभी उस सूर्यका प्रतिबिंबको नास होता नाहीं कांचका महलमें स्वान अपणाही प्रतिबिंबकूं देष करिकै भुक् भुक् करिकै मरता है फटककी भीतमें हस्ती अपणी प्रतिछाया देष करिके आप उस भीतमें भट भेट लेकर आपका आप दांत तोडि करिके दुःखी हुवो वानर मर्कट वड वृक्षके ऊपर रात्रीसमय बैठ्योथ्यो वृक्षके नीचे यक सींह आयो चंद्रमाकी चांदणीमें उस वानरकी छाया सिंघकूं दीषी देष करिके वो सिंघ उस छायाकूं साचो वानर जाण करिके गर्जना करिके उस वानरकी छायाकी पंजा के दीनो तब वृक्षके ऊपरि बैठो हुवो वानर भयवान होय नीचे आय पड्यो एक सिंघ कूपमें अपणी छाया देष करिके आप अपणा दिलमें जाणीके यो दूसरो सिंघ है तब गर्जना करि तो कूवामेंसें अवाज सिंघ शब्द सादृश आई तब वो सिंघ उछल करिकै कूप

मै गीर पड्यो· येक गऊचरावणे वालो गवालके तुरतको जन्म्यो सिंघ को·
बच्चो हात लगगयो तब वो गुवाल उस सिंघके बच्चाकूं ले आयो त्याय क
रिकै बकरी बकराके सामील राष दीयो वोसिंघको बच्चो बकरीको दूधपी
व अर आपणो आपो भूल बकरा बकरीकूं अपणा संगाती जाण करि
के रहताहै ललनीको रूवो अपणा पंजासे पकड वानरो चीणाकी मू·
ठी बांधीसो छोडनो नाही छद्रव्यहै ताका नसात होव नपांच होव निश्च
यहै अंधकारयुक्त येक मोटा स्थानमै दसवीस पचास मनुष होवे सो प·
रसपर शब्द वचनश्रवण करिके वोउसका निश्चय कर्ताहै २ अर शब्द·
श्रवण करिकै देषणे जाणणेकी इच्छा कर्ताहै मेघ वादलमे सूर्यहै ता·
कूं कोई कालोवामेघ वादलसादृश्यमानतोहै सो मिथ्या दृष्टीहै औरसू
र्जेकूं आडा मेघवादल आय जावे तब सूर्ज आपका सूर्जपणाकूं छोड·
करिके कहै विचारके मैतो सूर्ज नही मेघवादल हूं ऐसो सूर्ज आपकूं स·

मजै तो वो सूर्जबी मिथ्यादृष्टीहीहै मार्गमे पंक्तीबंध दरख्तहै ताकी छाया
बी पंक्ती बंधहै येक पुरख उस छाया पंक्तीके बराबर चल्योजावैहै तहां
पल छाया जावैहै येक आवैहै तप्त लोहाके गोलामें अग्नी भीतर बा-
हिरहै परंतु अग्नी लोहा अलग अलगहै चंद्रमा बादलमे छुप रह्याहै
परंतु चंद्र और बादल अलग अलगहै ध्वजा पवनके संजोगसे खमे
वही उलजतीहै अर सुलजतीहै चूरण कहणेमात्र येकहै परंतु सूं
ठ मिरच पीपल हरडे आदि सर्व देख अलग अलगहै येक बूंदडीमें
अनेक बुंदहै येक कोटमे अनेक कांगराहै येक समुद्रमे अनेक लह-
री कलोलहै येक सुवर्णमे अनेक आभूषणहै येक माटीमे अनेक
हांडा वासणहै येक पृथीमे अनेक मठमकानहै तैसेही येक परमा
तमाका केवलज्ञानमे अनेक जगत झलक रह्याहै कृष्णरंगकीगौ ५
भलाइहो परंतु उसको दुग्ध मीठोही होनाहै लोहाके पिंजरामे बैठ्यो

हुयो पोपट राम राम कहता है केवल रामराम कहणेसै लोहा का बंध नही छूट्या तो ऐसा रामराम कहणेसैं जमका फंद कैसे छूटैगा येक पुरुष पराई स्त्री लंपटयो ताको स्त्रायो रुमो वो पुरुष रूतासमय परस्त्री भोगणे लाग्यो तासमय येक प्रतिपक्षी सत्रु स्त्रायो स्त्रायक रिकै ताकै तरवारकी दीन्ही तासै उसकी बिचारी कोहान कटगयो ताको विषरयो लोही स्त्रर उसी समय उसको वीर्य स्वलित होगयो स्त्ररपीछे जाग्यो तब वीर्यसैंतो स्त्रधोवस्त्र लिप्त प्रत्यक्ष देख्यो स्त्रर रुधिरसैं वस्त्रादिक लिप्त नही देख्या येक बालक झूठा मट्टीका बलदसैं प्रीति करता है स्त्रर येक हूसरी कर्मोको बालक साचा बलदसैं प्रीत कर्ताहै परंतु झूठा साचासैं प्रीत करणे वालो दोन्यूही दुषी है क्यूंके उसका बलदाकूं कोई जोतै पकडै स्त्रन्यथा करै तब दोन्यूही दुःखी होताहै येक किसकूं कीचमे रत्नजुहारातकी भरी वटलोई मिली तब वो उस वटलोई

कूं षावडीमै धोवणेकै लेगयो धोता धोतावठलोई वावडीमै गिरगई तब रोणे लाग्यो स्फेद लकडीको कोयलो कालो हुवो अग्नीके संगती कर जिससे अववो कोयलो किसीही उपायसै स्फेद होणे को नही परन्तु पीछाकी पीछी अग्नीकी संगती करेतो वो कोयलो स्फेद हो जावे येक माटीका कलसमे जहांलग जलहै तहांलग उसका अनेक नामहै अर कलस फुटजावेतो फेर नाम जलका अर कलसको कहाहै मयुर नाचताहै श्रेष्ठ परंतु पिछाडी ओंधा गांड उघाड करिके नाचताहै गुरुबिना ऐसेहै क्रिया व्यर्थहै कच्चा आटासैवी पेट भरजाताहै परंतु उसी आटाकी रोटी बणाय करिके पकावे अर षावतो स्वाद लागतीहै तसबीरसे तसबीर उतर सक्तीहै वडका बीजमे अनेक वड अर अनेक बडमे अनंतानंत बीज येक सन्निपात युक्त पुरुष अपणा घरमे सूताहै तोबी कहै मै मेराघरमे जाऊं येक सेषसलीकी पागडी अपणा सिरकैऊपरसे

जमीके ऊपर गीर पडी तिसकूं वो सेष सली उठाय कहै येह येक पगडी-
हमकूं पाई है वांसतै वांस घृष्ट होय तब अग्नी उत्पन्न होती है सो अग्नी
उस वांसकूं भस्म करिके आपभी उपसम होजाताहै संख श्वेन है सो का
ली पीली लाल मट्टी भक्षण कर्ता है तोबी संख आप स्वेतको स्वेत रह-
ताहै दोय बजाजकी दुकान सामीलथी तब कोई कारण पाय करिकेउ
न दोन्यूं बजाजके परस्पर राग पडगई तब दोन्यूं बजाज परस्पर भागकर
णे लाग्या आधा आधा वस्त्र फाडकरिके तब कोई सम्यक ज्ञानी कही
तुम ऐसे परस्पर भाग करते हो तुम तुमारे सो रुपयाका वस्त्रका पचासरु
पया उपजेगा बडी हाणी होवैगी तब वह दोन्यूं हाणी नुकसान जाणि
करिके पीले ही रहै पुन्यूंका चंद्रमाके अर अमावास्याका सूर्जके भांति
सैं अंतर दीपता है येक साहुकार अपणा पुत्रकूं परदेसमै भेज्यो केता-
क दिवस पीछे वेटाकी वहू बोलीके मैनो रंडा होगई तब वो सेठ अप-

णा पुत्रके नांव पत्र भेज्यो उसमै ऐसी लिषदीके हे बेटा तेरी वहू तो रंडा हो गई तब वो सेठको पुत्र पत्र वांच करिकै सोक करवा लाग्यो तब कोई पूछी तुम क्यों सोक करते हो तब यो कही हमारी स्त्री रंडा भई तब सुण करिके बोलै तुम तो प्रत्यक्ष जीवता मोजूद है अर तेरी स्त्री रंडा कैसें भई तब वो से ठको पुत्र बोल्यो तुम कही सो तो सत्य है परंतु मेरा दादाजी की लिषी आई ता कूं झूठी कैसी मानूं दोय स्वानुभवत्तानी परस्पर वार्ता करणे लागे कहोजी-सूर्ज मरजावै तो फेर क्या होवै उत्तर चंद्रमा है के नही प्रश्न चंद्रमा बी मर जावै तो फेर क्या होवै उत्तर चीरागदीपग है के नही प्रश्न अरज्यो चीरा-गदीपक मरजावै तो क्या होवै उत्तर शब्द वचन है के नही प्रश्न अरज्यो-शब्द वचन बी मरजावै तो क्या होवै उत्तर अटकल है के नाहीं प्रश्न ठी कहै मै समजलीयो इति दृष्टांत संपूर्ण सुपेद वस्त्रके ऊपर रंग श्रेष्ट लागता है कच्ची हांडी मे जल मूर्ष होय सो भरै दीपग मे तेल रुई की बत्ती श्रेष्ठ होय

तो प्रकास करनी सीघ्र जो निप्रकास मान कर देता है येक येकांत वादी ग्र- | हृष्टां-

पणे शिष्यकूं बोल्योके सर्व ब्रह्म ही ब्रह्म है तबतो शिष्य श्रवण करिके बा

जारमें गयोथो तहां हस्तीको मावथ हस्तीकूं लेकरिके ग्रावेथो ग्रर ह-

स्ती ग्रारूढ हुवो थको पुकार करतोथो के मेरा हस्ती दिवानु है ग्रलग हो

जावो तब वो येकांत वादीको शिष्य ग्रपणे दिलमें विचारीके यो हस्ती-

ब्रह्म है ग्रर मैंबी ब्रह्म हूं तब स्याद्वादि तुनकूं कही वो मावन क्या ब्रह्म न-

ही है स्यात् क्षीरोदधि समुद्रमें कोई एक जहरकी बिंदु पटक देवै तो क्या-

समुद्र जहरमई होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ उलटा कलसके ऊपर स्था

वजे तो जल पटको जल कलसके भीतर जाणैको नाही १ एक जोजन-

ग्रौरस चौरस मकाननमें येक सरस्यूं पडी है सो जाणै किदर कूं पडी है

१ येक दरपणमें मयूरकी प्रतिछाया दीषती है रंगबीरंगकी सो निश्चय | १०५

मयूरसे भिन्न नही ग्रर दर्पण दर्पणसे भिन्न नही १ येक धूली धोणेवाले

नारथ्याकूं धूलीमै पंचरत्न पंचलक्ष रुपीयाका मिलगीया तब कोई उसना
रथ्याकूं कह्या तूं अबनो धूलीधोवणा छोडदे तबवो नारथ्यो बोल्यो छोडूं कैसो
मोकोंतो इस धूलीमैं रतन मिल्याहै दीपकके उजालामै मन वांछित रत्न
मिलगयो अब दीपक राषातो क्या अर छोडातोक्या १ अचेतन मूर्तिके
ऊपर पक्षी आय बैठनेहै डरतानहीहै १ किसी अस्त्रीको भरतार परदे-
समै जायकरि मरगये अब वास्त्री उसीकी मूर्ति बणाय भर्तारवत आनं
दलीयो चाहैसो मिथ्याहै अथवा वाही अस्त्री परदेसमै मरया भरतार
को नाममात्र स्मरण करैगी तोक्या उस अस्त्रीकूं प्रतक्ष भर्तारवत् आ
नंद होवैगा अर्थात् नही होवैगा १ सर्वनामको कहणे वालो ताको नाम
क्या १ सर्वको साक्षीदार ताकोरंगरूपक्या १ येक मूर्ष जिसझाडका-
डाहालाकेऊपर बैठ्योहै उसी डाहालाकूं काटतोहै अपणे गिरणेकी नर
फसै उसकूं देष करिके ज्ञानीकूं ज्ञान हुवा १ येक कलस गंगाजलको भर्यो

है और दूसरो कलस अस्थासे भर्योहै स्यात् वह दोन्यू कलस फूटजावै॰
तो कहाजाताहै फूटकरिकै १ चामचीडी बागल और उलूकइनकूं बिल॰
कुल सूर्जकी खबर नाही येकदिन चामचीडी कूं ऐसी सुणवामे आई॰
के सूर्ज उगैगो तब चामचीडी बागलके पास जायकरिकै कहीके सूर्ज उ
गैगो तब बागल बोलीके सूर्ज तो कधी उग्यो नही भलाचलो अपणो मालि
क उलूकहै उनसे पूंछोंगा ऐसा विचार करिकै चामचीडी और बागलये
हदोन्यू उलूकके पासगया अर कहीके सूर्ज उगैगो ऐसी हम सुणीहै तब
उलूक बोल्योके येक समयमे स्थानचूक करिकै चार प्रहर बैठ्योरह्योथो॰
सोही मेरी पांव गरम होगई सोही स्यात् गरमगरम तातो तातो सूर्ज हो
तो होगा १ मानस सरोवरकी खबर कूपका मींडकाकूं नही कोई हंस॰
उस मींडकाकूं मानस सरोवरकी सार्वांवी कहे तोबी वो मींडको प्रमा॰
ण नही करतो १ दोहा जातलाभकुलरूपतप बलविद्याअधि

कार ॥ येह आठ मद है बुरा मतिपीवो दुषकार ॥ २॥ जैसे सूर्जसे अंधा
रो अलग है तैसे येह आठमद उस परमानमासे अलग है सम्यक दर्शन
सम्यक ज्ञान सम्यक चारित्र येह कहणे मात्र तीन है निश्चय देषियेतो
एकसाही है जैसे अग्नी उष्णता प्रकास येह कहणेका तीन नाम है निश्च
य देषियेतो येकही है जिस अवस्थामै मुनि सूता है ता अवस्थामे जग
त जागतो है अर जिस अवस्थामे जगत जागतो है ता अवस्थामे मुनी सू
तो है सूर्जकूं अंधकारकी षबर नही अर अंधकारकूं सूर्जकी खबर ना-
ही। कवित्त लालवस्त्रपहरेसै देहतो न लाल होय॰ सतगुरु कहे भव्य
जीवसै तोडो तुरत मोहकी जेल॰ माटीको काज घट जैसे माटी ताके बाहि
र माही॰ पूर्णमासीको चंद्रमा अर अमावस्याको सूर्ज ताके अंतर नही
॥ दक्षिणायन अर उत्तरायणकी अर कृष्णपक्ष शुक्लपक्षकी अर ४
च्यार प्रहर रात्रीको पक्ष छोडकरिके देषणा पुनः अमावस्याको सूर्जचंद्र

के क्या अंतरहै दूजको चंद्रमा उग्योहै सो पूर्णगोल होवैगो फिकरन ही करणा बालकका हातकी मुष्टीमे अमोलष रतनहै अरवो बालकउ स रतनकूं श्रेष्ठजाण करि छोडनावी नहीहै मूठी दृढ बांधकरि राषीहै परंतुवो बालक उस रतन कूं बाल भावसैं श्रेष्ठजाननाहै सम्यक् ज्ञानभा वसैं नही जाणताहै ज्ञान वर्णादि द्रव्यकर्म अर रागादिक भावकर्म अ र सरीरादिक नोकर्म तासै वो परमातमा अलगहै जैसे सूर्जसैं अंधा रो अलगहै तैसे उस परमातमासै भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म आदि स र्वकर्म अलगहै जो अनंतज्ञानादिकरूप निजभाव ताकूं कबही नछोडे अर कामक्रोधादिक रूप परभाव तिनकूं कदाचित् कदेहू नग्रहे जैसे सूर्ज आपका गुण प्रकास किरणादिक नछोडे अर परज्यो अंधकारा- दिक ताकूं कदाचित् कदेही नग्रहण करै तैसेही वो परमात्मा परकूं ग्र हण नकरै अर आपकूं आपका ज्ञानादिगुणकूं छोडे नहीं वो परमा-

त्मा परम पवित्रहै मैं तूं येह वह सोहं हूं तया हूंहू इत्यादि शब्दाके वच नाके आदि अंत मध्यहै सो परमात्माहै वो रूधहै अर येह मैं तूं येह वह सोहं हूं हू है सो अस्तधहै जैसे सूर्जके सामने सनमुष अंधकार नही तैसे उसकेवल ज्ञानरूपी परमात्माके सन्मुषयेह मैं तूं येह वह सोहं हूं हूं हूं येह है सो नही जिसकाल सूर्जका अर अंधाराका मेल होवैगा उसी काल परमात्माका अरइन मैं तूं येह वह सोहं हुं हुं हुं का मेल होवैगा परमात्मा केवल ज्ञानीहै अर येह अज्ञानीहै ज्ञान अज्ञानकामेल हु वाबी नही अर होवैगाबीनही अरहैबीनही ऐसो केवल ज्ञानीमे हुठी कहै जैसो अनषाये नाकी तैसीही अडकार आवै सूर्ज अंधकारकीइ च्छाबी वृथाही करतोहै अर सूर्ज सूर्जकी बी इच्छा वृथाही करतोहै हजारू मण गहूं बीणा षरच होजाताहै अर फेर हजारूं लाषूं मण पैदा होजाताहै नबीजको नास नफलको नास येक जातके लाल रतनाकोदे

र दूरसै येकसो पुंज अग्नीकोसो दीषतोहै येक परंतु वहरतन राशिका रतन न्यारान्याराहै बहोतही अमृतकोसमुद्र भर्योहै सर्वसमुद्रकोज लकीसीसे पीयोनही जावै अपणी अपणी तृषा प्रमाण जलपीय- कारसंतुष्टरहा॥ ॥चौपाई॥ ॥धर्मदासक्षुल्लकमोनाम॥र च्याज्ञान अनुभवकोधाम॥ मनमानीसोकही बषाण॥ पूरणकीरसम जोजिरूजाण॥१॥ ॥इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारीधर्मदासरचित दृष्टांतसंग्रहसंपूर्ण॥ ॥श्रीरस्तु॥ ॥श्रीअर्हंनाएंजयति॥

ॐ नतसत् परब्रह्मपरमात्मनेनमः ॥ ॥ अथआकिंचनभावना लिख्यते॥ ॥दोहा॥ ॥ मेरामुजसें अलगनही सोपरमा त्मादेव॥ ताकूंवंदूभावसे निसदिनकरनासेव॥ १॥ मेरामुजसेंअलगनहि सोस्वरूपहेंमोय॥ धर्मदासक्षुल्लककहे अंतरबाहिरजोय॥ २ ज्योंअपणानिजरूपहै जाननदेषनज्ञान॥इसबिनओरअनेकहे सोमैनहीसुजाण॥ ३॥ अन्यद्रव्यमेरानही मैमेरोहीसार॥ धर्मदासक्षुल्लककहे सोअनुभवसिरदार॥ ४॥ ॥वार्तिक॥ ॥जो मेरो ज्ञान दर्शनमयस्वरूपाविना अन्यकिंचित् मात्रबी हमारानहीमै कोई ओर द्रव्यको नही मेरा कोई अन्य द्रव्यनही ज्यो मेरेसें अलग है उससे मैबी अलगहूं ऐसा अनुभवकूं आकिंचन कहतेहे सोही अनुभव मोकूंहे मैं आत्माहूं सोही मेरेकूं मे समजनाहूं हो आत्मन् अपणा आत्माकूं देहसैं अलग ज्ञानमई ओर द्रव्यकी आोपमारहित-

अरस्पर्शरसगंध वर्णरहित जाणु देह हैसो मैनही अर देहके भीतर बाहिर आकासादिकहै सोबी मैनही देहतो अचेतनजडहै हाडमांस मल मूत्रसैं बणीहै वा तन मनसै बणीहै मै इस देहसैं अवलम्थमहीसै ऐसो अलगहूं जैसै अंधारासैं सूर्ज अलगहै तैसै अर यो ब्राह्मणपणू क्षत्री वैश्य शूद्रादिक जात कूल देह काहै अर स्त्री पुरुष नपूंसकादि लिंगदेही काहै मेरानही मोकूं देहही जाणताहै मानताहै सो बहिर आत्मा मिथ्यादृष्टीहै अर यह गोरपणो सांवलापणो राजापणो रंकपणो स्वामीपणो सेवकपणो पंडितपणो मूरखपणो गुरुपणो चेलापणो इत्यादिरचना देहहीकीहै मेरीनही मैजाणताहूं नाम अोर जन्म मरणादिक देहका धर्महै जेतानाम तीनलोक तीनकाल वा लोकालोकमैहैसो मेरा नही अर तीनलोक तीनकाल वा लोकालोकहैसो मेरेसे अलग ऐसाहै जैसै सूर्जसे अंधारो अल

गहै तैसे आोरमें जैनमतवाले वैष्णव मतवाले शिवमतवाले आदी-
कोई मतवालेको चेलो गुरु नहीहूं पर कर्ता कर्म किया संपादान अ-
पादान अधिकरणसे अलगहूं ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ येह आकिंचनभा
वना भावैकरतसंभाल ॥ धर्मदाससाचोलिषे मुक्तहोयततकाल ॥
॥१॥ अपणोआपोदेषकै होयआपकोआप ॥ होयनिचंततिस्योरहै
किसकाकरआजाप ॥२॥ ॥ इतिआकिंचनभावनासमाप्त ॥ ॥
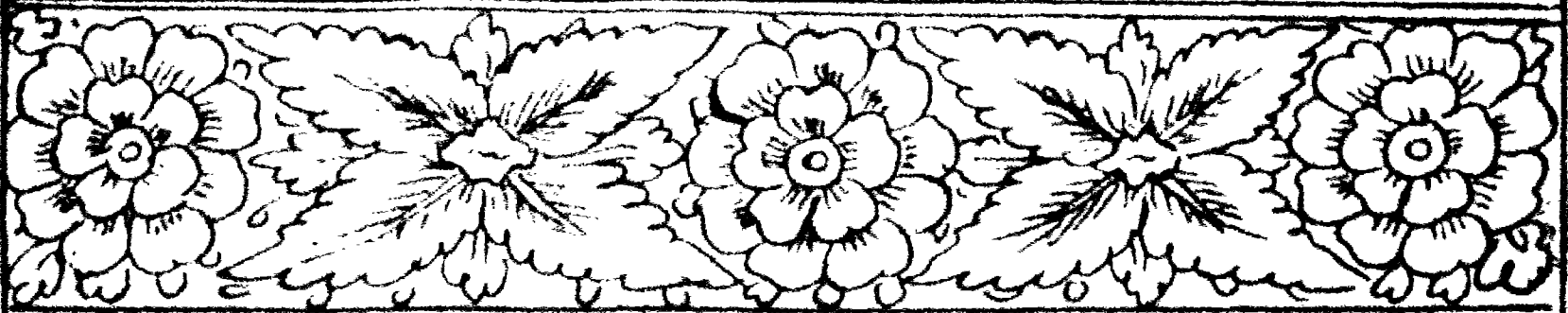
अथ आकिंचनभावनाप्रारंभः

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥ ॥ अथ भेदज्ञानलिख्यते ॥ ॥ चौपाई ॥ ॥
प्रथममहि भेदज्ञानजो भावै ॥ सोहीशिवसुंदरिपदपावै ॥ तानै भेदज्ञा
नमैं भाऊ ॥ परमानमपद निश्चयपाऊ ॥ १ ॥ क्षुल्लकधर्मदासअववो
लै ॥ देषवचनकामैंनिनषोलै ॥ वांचो पदो भावमनल्याई ॥ तानैं मि-
लै मोक्षठकुराई ॥ २ ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेदज्ञानहीज्ञानहै वाकी
बुरोअज्ञान ॥ धर्मदाससाचीलिषै भेमराजतुममान ॥ ३ ॥ अर्थात्
निश्चय करि एक द्रव्यका दूसरा द्रव्य कछु संबंधि नाहीहै जानै द्रव्यहै
सो भिन्न प्रदेसरूपहे ताने एकसताकी अप्रामीहे द्रव्यद्रव्यकी सता
न्यारीन्यारीहै बहुरि सतायेक नहोते अन्य द्रव्यके अन्य द्रव्यकरि आ
धार आधेयसंबंध भी नाहीहै ताते द्रव्यके अपने स्वरूपही विषे प्रति
ष्ठारूप आधार आधेय संबंध तिष्ठैहै तिस कारण करि ज्ञान आधेय
सोतो जाण पणारूप अपणा स्वरूप आधारता विषै प्रतिष्ठितहै जा

ते जानपणेपणाहै सो ज्ञानतै अभिन्नभाव है भिन्न प्रदेशस्वरूप नाही
है तातै जाननक्रियारूप ज्ञानहै सो ज्ञानही विषै है बहुरि क्रोधादिक
है ते क्रोधरूप क्रिया क्रोधपणा स्वरूप तिन्हांविषै प्रतिष्ठित है जातै
क्रोधपणारूप क्रिया क्रोधादिकतै अपृथक्भूत है अभिन्नप्रदेश
है तातै क्रोधरूप क्रिया क्रोधादिविषैही होयहै बहुरि क्रोधादिकवि
षै अथवा कर्मनोकर्म विषै ज्ञान नाहीहै जातै ज्ञानकै अर क्रोधादि
ककै अर कर्मनोकर्मकै परस्पर स्वरूपका अत्यंत विपरीत पणा है ति
नका स्वरूप एक होय नाही तातै परमार्थरूप आधार आधेय संबं
धका शून्यपणाहै बहुरि जैसै ज्ञानका जाननक्रियारूप जाणपणा
रूपहै तैसै क्रोधरूप क्रियापणा स्वरूपनाहीहै बहुरि जैसै क्रोधा
दिकका क्रोधपणा आदिक क्रियापणा स्वरूपहै तैसै जाननक्रि
या रूप स्वरूप नाहीहै कोईही प्रकार करि ज्ञानकूं क्रोधादिक्रिया

रूप परिणाम स्वरूप ख्याप्यानजायहै तातै जानन क्रियाके ग्रर क्रो धरूप क्रियाके स्वभावका भेद करि प्रगट प्रतिभासमान पणाहै ब- हुरि स्वभावके भेदतैंही वस्तुका भेदहै यह नियमहै तातै ज्ञानकै- ग्रर ग्रज्ञानस्वरूप क्रोधादिकके ग्राधार ग्राधेय भावनाहीहै इ- हां दृष्टांत करि विशेष कहैहै जैसै ग्राकास ग्ररु द्रव्य येकहीहै नाही ग्रपणी बुद्धि विषै स्थापि ग्रर ग्रवार ग्राधेय भाव कल्पिये तव ग्रा काश शिवाय ग्रन्यद्रव्य तिनकातो ग्रधिकार रूप ग्रारोपणका नि रोध भया याहीतै बुद्धिके भिन्न ग्राधारकी ग्रपेक्षातोनहीरही ग्र रजब भिन्न ग्राधारकी ग्रपेक्षा नाही रही तव बुद्धिमे यही ठहरी के जो ग्राकासहै सो येकहीहै सोयेक ग्राकासही विषै प्रतिष्ठित- है ग्राकाशका ग्राधार ग्रन्यद्रव्य नाही ग्राप ग्रापहीके ग्राधारहै ऐसै भावना करणेवालेके ग्रन्यका ग्रन्यके ग्राधार ग्राधेय भावना

ही प्रति भासै है ऐसै ही जब एकही ज्ञानकूं आपनी बुद्धि विषैस्था
पि आधार आधेय भाव करिये तब अवशेष अन्य द्रव्यनिका अ
धिरोपकरणेका निरोध भया यातैं बुद्धिके भिन्न आधारकी अपे
क्षा नाही रहैहै अर भिन्न आधारकी अपेक्षाही बुद्धिमे नरही त-
ब एक ज्ञानही ज्ञानविषै प्रतिष्ठित ठहरया ऐसै भावना करणे वाले-
के अन्यका अन्यके आधार आधेय भावनाही प्रतिभासहै तातैं ज्ञा
नहीहै सोतो ज्ञानही विषै है अर क्रोधादिकहीहै ते क्रोधादिक विषै
हीहै ऐसै ज्ञानके अर क्रोधादिककै अर कर्मनो कर्मके भेदका ज्ञान
है सो भले प्रकार सिद्ध भया ॥ ॥ भावार्थ ॥ ॥ उपयोगहै सो तो
चेतनाका परिणमन ज्ञानस्वरूपहै अर क्रोधादिक भावकर्म ज्ञाना
वर्ण आदि द्रव कर्म सरीर आदिकनो कर्म येसर्वही पुद्गल द्रव्यके
परिणामहै ते जडहै इनके अर ज्ञानके प्रदेश भेदहै तातैं अत्यंत-

अथ दृष्टांतचित्रमा॰

यांपुरमनीमकाझाडकीबाथभीकारिकैंषडोहैंश्चरपुकारतोहैके मेरे कूं छुडावो·

बन्नर कुंभमें मूठीबांधिसो छांडतानाहीं जाणताहै के कोई मोकूं पकडलिया॰

गर्भवतीस्त्रीकीपुत्री आपणी मातासे बूजतीहै हे मात तेरोपेट मोटोकैसेहै· अब वास्त्रीपुत्रीकूं जबा
बनकहदेवेतोबी निश्चय उस्कूं होवेगाहै। समयपायनिश्चयहोवेगी अथवानाहीबीहोवे·

बड़को
झाड़है

आपषाणंका परिणाम छऊहीका है· परंतु ऐकनो मूलसें झाडकूं कारता हैं· ऐकमोटाडालाकारताहै· ऐकछोटाडालाकारताहै· ऐक कचापका सर्वं आम्रतोडताहै· ऐकपकातोडताहै· ऐकजमीकेऊपरपडेहुयेही उठायखातोहै· उसरो जाहै·

इसके कंठमें रत्न मोतीकी माला है वहार हमको नहै भंडारमें

यापुरुष बहुत मंदिर में ध्यानभी कर्ता है के तूही· उसकी पत्नी
ध्यानभी आनंदिक तूही रहो समझणा चाहिये·

स्वस्वरूप स्वानुभवगम्य सम्यक् ज्ञान मार्ग स्वभाव वस्तु को न जान्हें स्वरूपानुभव समझ करिके
घट मन्यांध्यनत चेहैं जैन शिव विष्णु - आदि टीक वाद मतवाले परस्पर विवाद
विरोध करते हैं

सिंघ आपकी छाया कूपमें देखकरि के आपही। आपणा सरूप भूलिकरि कै
आपही कूपमें पड़ के दुख अनुभव भोग मरता है

कलिंग मोरा की मैनगणी जैन की प्रतिमा पे

साहुकारकी हवेलीमें एकस्वान गश्तीसिपाय चोरकूं पतासदेषकारकें भूकभूक करताहै नहुत नहीं टे
घणे चाना स्वान हवेलीकें बाहीरहै सोबी भूकभूक करताहै

येक पुरुष अमावास्याकी मध्यरात्रीका अंधारामें चंद्रमाकूं
ढूंढ राहे·ढूंढताहै भ्यान चंद्रमाकी चानणीमें ढूंढतो
चंद्रदर्श होजावेगा·

इतिदृष्टांतचित्र समाप्त ॥

भेदहै नानें उपयोगविषैतो क्रोधादिक नया कर्मनो कर्म नाहीहै यक्रु॰
रि क्रोधादिक कर्मनो कर्मविषै उपयोग नाहीहै ऐसें इनके परमार्थस्व
रूप आधार आधेयभाव नाहीहै अपना अपना आधार आधेयभा
व आप आपविषैहै ऐसें इनके परमार्थसे परस्पर अत्यंतभेद है ऐ
सें भेदजाणें सोही भेद विज्ञानहै सो भलेप्रकार सिद्ध होयहै ॥ ॥
दोहा॥ ॥ परमातमअरजगतके बडोभेदक्रणसार॥ धर्मदास
आरुंलिषै वांचकरानिरधार॥ १॥ जैसेंसूरजतमविषै नहीनहीक्र
एार्थार॥ तैसैंईातमकोविषै सूर्जनहीरेथीर॥ २॥ प्रकाससूर्ययेकहै
जडचेतननहीयेक॥ धर्मदाससाचीलिषै मनमेंधारिविवेक॥ ३॥स्प
र्श ८ रस ५ वर्ण ५ गंध २ आत्मानाही जानें येह स्पर्शादिक पुद्गल
अचेतन जडहै वास्तै आत्माके अर अचेतन पुद्गलके भेदहै और शब्द
बंध सूक्ष्मस्थूल संस्थान भेद तम छाया आतप उद्योत येह आत्मा

नाही जानै येह शब्द बंधादिक पुद्गलकी पर्याय है वास्तै आत्माके
अर शब्द बंधादिकके भेद है तन मन धन वचन येह आत्मा नाही तन
ता मनता वचनता जडताजडसे मेल ॥ लघुता गुरुता गमनता येह अ
जीवका षल ॥ ॥ अर्यात् ॥ ॥ आत्मा अर अजीव नही वास्ते आत्मा
के अर इन तन मनादिकके भेद है भावार्थ जैसे सूर्जके प्रकाशके अ
र अमावस्याकी मध्यरात्रीका अंधाराके अत्यंत भेद है तैसे ही आत्मा
अर अनात्माका भेद है तन मन धन वचन कुछ औरहै अर आत्मा कुछ
औरहै मन बुद्धि चित्त अहंकार अंतःकरण कुछ औरहै अर आत्मा कु
छ औरहै तूं मै येह वह हूं हूं सोहं येह कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औ
रहै जोग जुगत्त जगत लोक अलोक कुछ औरहै अर आत्मा कुछ और
है बंध मोक्ष पाप पुन्य कुछ औरहै अर आत्मा कुछ औरहै जैन बौध बौ
ध नैय्यायिक मिमांसादिक वेदांती कुछ औरहै अर आत्मा कुछ और

है तेरापंथ मेरापंथ उसकापंथ इसकापंथ बीसपंथ गुमानपंथ नानक पंथ दादूपंथ कबीरपंथ इत्यादि पंथ येह सर्व येक पृथ्वीके उपरहैसो पृथ्वी कुछ श्रोरहै श्रर श्रात्मा कुछ श्रोरहै जैनमतवाले वैष्णुमतवाले शिवमतवाले वेदांतमतवाले तेरापंथमतवाले बीसपंथमतवाले गुमानपंथमतवाले येह सर्व मतवाले जिसमदकूं पीकर मतवाले भयेहै सो मदकुछ श्रोरहै श्रर श्रात्मा कुछ श्रोरहै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ भेदज्ञानमें भ्रमगयो नहीं रही कुछ श्रास ॥ धर्मदास क्षुल्लक लिखे श्रबतोड मोहकीपास ॥ १ ॥ जैसें सूर्यके प्रकाशमे दीपकका प्रकासप्रसिद्ध है तैसें स्वस्वरूप सम्यक्ज्ञानमयि स्वभाव सूर्यका प्रकाशमे येह सम्यक् ज्ञानदीपका नामकी पुस्तग प्रसिद्ध भले भावसे पूर्ण प्रस्तुत होचुकीहै १ जैसें श्रंध भवनमें रतन गिरयोहै सो रतन वांछक पुरुष दीपक हस्तमे लेकरिके तिस श्रंध भवनमें रतनार्थ जावे वहुरि रतन

हीकूं खोजै तो ता पुरुषकूं निश्चयही रतन लाभ होवै तैसेंही येह भरमांधकार मयि भवन जगन संसार है तामै तासैं अनन्मयि रतन-त्रय मयि अमोलख रतन गिरयो है ताकूं कोइ धन्यपुरुष ताको इच्छक पुरुष इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तककूं ग्रहण करिकै इस भ्रमांधकार नाम संसार भवनमें तिस स्वभाव सम्यक ज्ञान मयि अर रतन त्रयमयि रतनकूं खोजैगो ताकूं निश्चय आपका आपमें-आपमयि स्वभाव सम्यक ज्ञानानुभवकी परमावगाढना अचलहोवै-गी १ कोइ इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तगसैं बहुरि इसका संदर अक्षर शब्द पद विचारादिकसैं आपका आपमें आपमयि स्वभा-व सम्यक ज्ञान है ताकूं सूर्य प्रकाशवत् येक तन्मयि समजैंगो मानैगो-कहैगो ताकूंतो इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तग पढणे बाचणे से स्वभाव सम्यक ज्ञानानुभवकी परमावगाढनाकी अचलना नही हो

वेगी १ हां जैसै द्वारमै होकरिकै किसीकुं सूर्य दर्शनका लाभ होताहै तैसैही किसी मुमुक्षुकुं इस सम्यक ज्ञान दीपका नामकी पुस्तकके द्वारा निश्चय स्वस्वभाव स्वसम्यक् ज्ञान मयि सूर्यका दर्शण लाभ होवेगा १ येह सम्यक ज्ञान दीपिका नामकी पुस्तक हम बणाईहै इसमै मूलहेतु मेरा येह हैके स्वयं ज्ञानमयि जीव जिस स्वभावसै तन्मयि है उसी स्वभावकी स्वभावना जीवसै तन्मयि अचल होउ येही हेतु अंतःकरणमै धारण करिके येह पुस्तक बणाईहै ५०० पांचसै पुस्तक छापके द्वारा प्रसिद्ध होणेकी सहायताके अर्थ रुपिया १०० येकसौं तो जिल्हा स्याहाबाद मुकाम आरा ठिकाणो मरवन लालजीकी कोठीमै बाबू बिमलदासजी की बिधवा हमारी चेली द्रौपती देवीने दिया है अर विशेष खरचकी सहायताके अर्थ जिस जिसकुं मेरा बचनोपदेस द्वारा स्वसम्यक ज्ञानानुभव होणे जोग होचुके ते स्वभाव सम्यक्

त्तानानुभवमे तन्मयि सदाकाल चिरंजीव रहो ॥ ॥ श्लोक ॥ ॥

श्रीसिद्धसेनमुनिपादपयोजभक्त्या देवेंद्रकीर्त्तिगुरुवाक्यसुधारसेन ॥ ज्ञानामृतैर्विबुधमंडलमंडनेच्छोः श्रीधर्मदासमहतोमहतीविशुद्धा ॥ १ ॥ ॥ इतिश्री क्षुल्लकब्रह्मचारी धर्मदासरचित सम्यक्त्तानदीपिका संपूर्णम ॥ ॥ श्रीअरिहंताणंनमः ॥ ॥ ॥
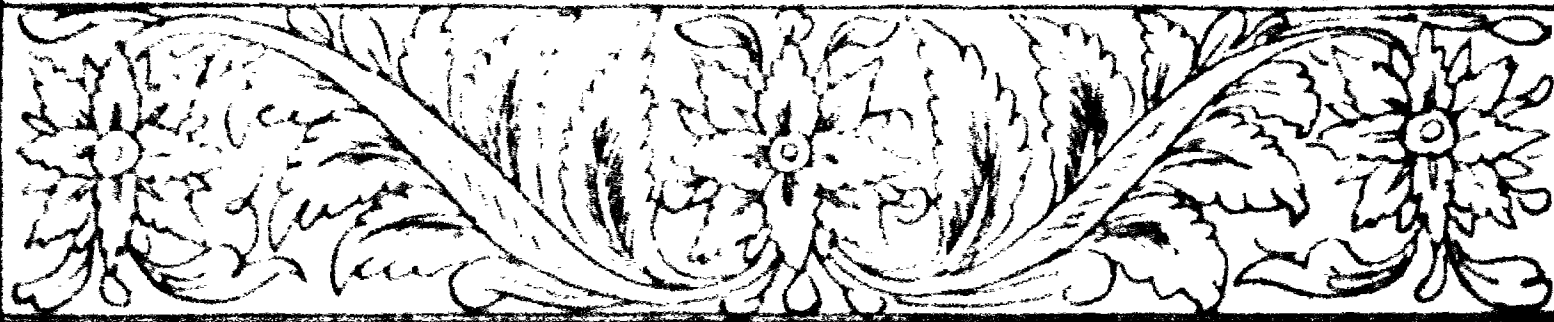
अथब्रह्मरूपीसंवत्सर

अयन २ ऋतु ६ मास १२ पक्ष २४

छप्पै॥ ॥ दोयनयनषट्करणभुजारविसंख्याजाणं॥ पांचानत्वप्रमाणस्याम

वार ७ तिथि १५ नक्षत्र २८ योग २८

अरुष्वेनथयाणं॥ सातबीसदशपंचदशनदोपंक्तीसोहै॥ नरवशिखपंचकईशाक

करण ११ सर्व वर्षकादिन ३६०

रणशिवसंख्यादोहै॥ पंषपंषपनिपंचदशअंबरषट्अनलाचरण॥ श्रीधरताको

देखिये ब्रह्मरूप अशरणशरण॥१॥

कुंडलियो॥ ॥ जाकीनिर्मलबुद्धिहै ताकूंसबअनुकूल॥ भूतभविष्यबिचारि

येवर्तमानकोमूल॥ वर्तमानकोमूलभूलमेंकबहुनभूलें॥ पढसबशास्त्रपुराणवृथा

हीभ्रममेंफूलै॥ कहतेबलभरामब्रह्महैसाचासारवी॥ बिद्यासूंसबहोनअगमबुधनिर्मलजाकी

१

यहपुस्तक पंडित श्रीधर शिवलालजीके ज्ञानसागर छापखानामें क्षुल्लक ब्रह्मचारीधर्मदास
जीने छपाया· मुंबई संवत् १९४६ शाके १८११ मितीमाघशुक्ल १५ भोमवार·

इति सम्यक्ज्ञानदीपिकासमाप्त.